

१८४ श्री
सुंदरविलासग्रंथ

हिंदीवृजभाषामै
दादूपंथीसाधुस्नामीसुंदरदासजी
कृत.

नाकौशोधकरकै जायौ

मुंबईमें

पं.श्रीधरशिवलालजीकैप्रज्ञायुक्त

ज्ञानसागरछापरवानामैप.

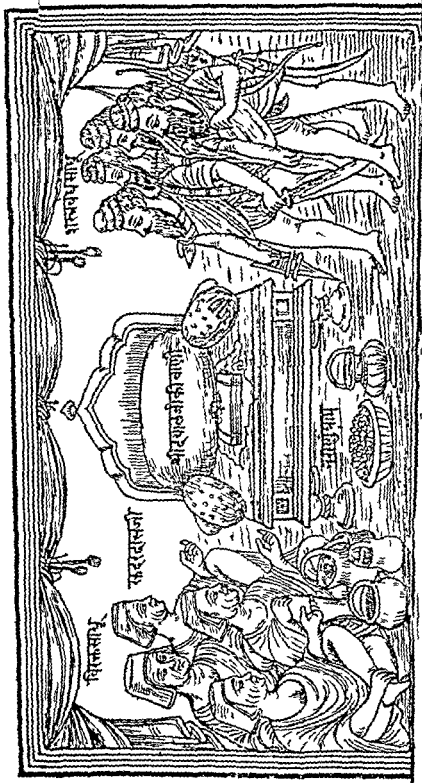
द्यात्मकसुरसवाणीमै

प्रसिद्धकियौ

आवृत्ति ३

सं० १८४४ शके १८१९

आम्बिन शकल ५ गुरुवार



शत्रुपथसाध

भीदयालुनीकीवाणी

करदत्तसजी

विरक्तसाधू

नमस्तुभ्यम्

श्री

पथ सुंदरविलासक अंगकी अनुक्रमणिका

अंगकानं	पृष्ठ	पं.
१ गुरुदेवको अंगप्रारंभ	१	२७
२ उपदेववितामरीको अंगप्रारंभ	२	३६
३ कालनितामरीको अंगप्रारंभ	१२	२६
४ देहव्याप्त्यातिछाहको अंगप्रारंभ	२६	३२
५ वृत्तांतको अंगप्रारंभ	२६	१३
६ धारज उगहनेको अंगप्रारंभ	३२	१२
७ विश्रामको अंगप्रारंभ	३६	१३
८ देहमर्दानतागर्वमहारको अंगप्रारंभ:	३६	५
९ नार्गनियाको अंगप्रारंभ:	४१	६
१० दुष्टजनको अंगप्रारंभ	४२	५
११ मनको अंगप्रारंभ	४४	३६
१२ नायकको अंगप्रारंभ	५१	२३
१३ निघ्रीतज्ञानको अंगप्रारंभ	५८	६
१४ वचनविवेकको अंगप्रारंभ	६०	१४
१५ निर्गुणरूपासनाको अंगप्रारंभ.	६४	८
१६ पतिव्रताको अंगप्रारंभ.	६७	७
१७ विरहउराहनेको अंगप्रारंभ:	६६	४
१८ शब्दसारको अंगप्रारंभ.	७०	१०
१९ भक्तिज्ञानमिथितको अंगप्रारंभ.	७२	६

सुदराविलासका अनुक्रमणिका.

अंग	अंगको नाम.	पृष्ठ	चुज
२०	विपर्जयशब्दको अंग प्रारंभ.	७४	३१
२१	सूरातनको अंग प्रारंभ:	८२	१३
२२	साधूको अंग प्रारंभ.	८६	३०
२३	ज्ञानीको अंग प्रारंभ.	९५	१८
२४	सारव्यज्ञानको अंग प्रारंभ.	१००	३७
२५	अपने भावको अंग प्रारंभ	११२	१२
२६	स्वरूपविस्मरणको अंग प्रारंभ	११५	२६
२७	विचारको अंग प्रारंभ	१२३	२१
२८	ब्रह्मनिष्कलंकको अंग प्रारंभ.	१३०	४
२९	आत्मअनुभवको अंग प्रारंभ.	१३१	३२
३०	ज्ञानको अंग प्रारंभ.	१४१	१४
३१	निरससेको अंग प्रारंभ	१४५	४
३२	प्रेमज्ञानीको अंग प्रारंभ.	१४७	५
३३	अद्वैतज्ञानको अंग प्रारंभ.	१४८	२४
३४	जगत्तमिथ्याको अंग प्रारंभ	१५४	५
३५	आश्चर्यको अंग प्रारंभ	१५६	१५
चुत्तसंख्या.			१६०
समाप्त.			

श्री

अथसुंदरदासकृत

सुंदरविलास

सर्वेय्या

प्रारंभः



श्रीगणेशायनमः॥ श्रीगुरुभ्योनमः॥ ॥ अथ
सुंदरविलासलिरव्यते ॥ ॥ अथगुरुदेवको
अंगप्रारंभः॥ इंदवच्छंद॥ ॥ मोजकरीगुरुदेव
दयाकरि, शब्दसुनायकत्थोहरिनेरो॥ ज्यौरवि
कैप्रगंटेनिसिजातसु, दूरकियोभ्रमभानअंधेरो
॥ कायकपायकमानसहुकरि, हैगुरुदेवहिचंदन
मेरो॥ सुंदरदासकहेकरजोरिजु, दादुदयालकोहूं
नितचेरो॥ १॥ पूरणब्रह्मविचारनिरंतर, काम न
क्रोधनलोभनमोहै॥ श्रीत्रयचारसनाअरुघ्राण
सु, देरिचकछूकहुंनैननमोहै॥ जानस्वरूपअनूप
निरूपेन, जासुगिरासुनमोहनमोहै॥ सुंदरदास
कहेकरजोरिजु, दादुदयालहिमोरिनमोहै॥ २॥ धी

रजवंतअडिगजितेंद्रिय, निर्मलज्ञानगद्योददआ
 दू॥ शीलसंतोषक्षमाजिनकेघट, लागिरत्योसुअ
 नाहदनादू॥ भेषनपक्षनिरंतरलक्षजु, ओरनहीक
 छुवादविवादू॥ एसबलछनहैजिनमाहिस, सुंदर
 केउरहेगुरुदादू॥ ३॥ भोजलमेबहिजातहुतेजिन,
 काठिलियेअपनेकरआदू॥ ओरसंदेहमिदायदि
 येसब, काननटेरसुनायकेंनादू॥ पूरनब्रह्मप्रकास
 कियोपुन, छूटगयोयहवादविवादू॥ एसिरुपाजु क
 रीहमऊपर, सुंदरकेउरहेगुरुदादू॥ ४॥ कोउकगोरष
 कोंगुरुथायत, कोउकदत्तदिगंबरआदू॥ कोउककंथ
 रकोउकभरथरकोउकबीरकिराषतनादू॥ कोउकहे
 हरिदासहमारजु, योंकरिठानतवादविवादू॥ ओरतो
 संतसबहिसिरऊपर, सुंदरकेउरहेगुरुदादू॥ ५॥ को
 उविभूतजटानवधारि, कहैयहभेषहमारोहैआदू॥
 कोउककानफरायफिरपुन, कोउकसंगबजावतना
 दू॥ कोउककेसलुचाइकरघत, कोउकजंगमकेशि
 ववादू॥ योंसबभूलियेरजितहीतित, सुंदरकेउरहे
 गुरुदादू॥ ६॥ जोगिकहेगुरुजैनकहेगुरु, बोधकहे
 गुरुजंगममानै॥ भक्तकहेगुरुन्यासिकहेबनयासि

कहेगुरु और बरवाने ॥ शेरवकहेगुरुसोफिकहेगुरु,
 याहितसुंदरहोतहैराने ॥ बाहुकहेगुरुबाहुकहेगुरु
 हैगुरुसोइसबेभ्रममाने ॥ ७ ॥ सोगुरुदेवलियेनछि
 पैकछु, सत्वरजोतमतापनिवारी ॥ इंद्रियदेहमृषाक
 रिजानत, सीतलतासमताउरधारी ॥ व्यापकब्रह्मवि
 चारअरचंडित, हैतउपाधिसबैजिनटारी ॥ शब्दसुना
 यसंदेहमिटावतसुंदरवागुरुकीबलहारी ॥ ८ ॥ पूरन
 ब्रह्मपतायदियोजिन, एकअरचंडितव्यापकसारे ॥
 रागरुद्वेषकरेअबकोनसुं, जोअहिमूलवहीसबडा
 रे ॥ संशयशोकमित्योमनकोसब, तत्वविचारकल्हो
 निरधारे ॥ सुंदरसुखकियेमलघोइजु, हैगुरुकोउर
 ध्यानहसारे ॥ ९ ॥ ज्योंकपडादरजीगहिंज्योंतत, का
 षहिकोबडइकसिआने ॥ कंचनकोजुसुनारकसेपु
 नि, लोहकोघांटलोहारहिजाने ॥ पाहनकोकसिले
 तसिलावट, पात्रकुंभारकेहातनिपाने ॥ तेसेहिशि
 ष्यकसेगुरुदेवजु, सुंदरदासतवेमनमाने ॥ १० ॥
 ॥ छंदमनहर ॥ ॥ सवहुनमित्रकोऊजाकेसबहे
 समान, देहकोममत्वछाडिआतमाहीरामहें ॥ औ
 रहूँपाधिजाकेकबहुनदेवियत, सुखकेसमुद्रमेंरु

तत्राठोंजामहे ॥ अडिअरुसिद्धिजाकेहातजोरि
 आगेणरी ॥ सुंदरकहतताकेसबहीगुलामहे ॥ अधि
 कप्रशंसाहमकेसेकरिकहिसके, ऐसेगुरुदेवकोहमा
 रोजुप्रनामहे ॥ ११ ॥ ज्ञानकोप्रकासजाकेअंधकारभ
 योनास, देहअभिमानजिनतज्योजानछारधी ॥ सो
 ईसरवसागरउजागरवैरागरज्यौं, जाकेबेनसुनतबि
 लातहैंबिकारधी ॥ अगमअगाधअतिकोउनहिंजा
 नेगति, आत्माकोअनुभवअधिकअपारधी ॥ ऐसेगु
 रुदेववंदनीकतिहुंलोकमाहीं, सुंदरविराजमानसो-
 भतउधारधी ॥ १२ ॥ काहूसोनरोषतोषकाहूसौंनराग
 दोष, काहूसौंनवैरभावकाहूसौंनघातहै ॥ काहूसौंनब
 कवादकाहूसौंनहीविषाद, काहूसौंनसंगनतोकाहू
 पक्षपातहैं ॥ काहूसौनदुष्टबेनकाहूसौंनलेनदेनब्रह्म
 कोविचारकछूआरनसुहातहैं ॥ सुंदरकहतसोईई
 सुनिकोमहाईस, सोईगुरुदेवजाकेदूसरीनवातहै ॥
 १३ ॥ लोहकोज्यौंपारषपषानहुंपलटलेत, कंचनछुव
 तहोतजगमेंप्रमानीयें ॥ दुमकौंज्यौंचंदनपलटहिले
 गायबास, आपकेसमानताकोसीतलताआनियें ॥
 कीटकौंज्यौंभृंगहुपलटकेकरतभ्रंगिं, सोउडिजायता

को अचरज मानियें ॥ सुंदर कहत यह सगरे प्रसिध
 वात, सदसि सपलटें सो सदगुरु जानियें ॥ १४ ॥ गुरु
 बिन ज्ञान न हीं गुरु बिन ध्यान न हीं गुरु बिन आत्मा
 विचार न लहत हैं गुरु बिन प्रेम न हीं गुरु बिन नेम न हीं
 गुरु बिन सील हि संतोष न गहतु हैं ॥ गुरु बिन व्यासन
 ही बुधी को प्रकास न हीं ॥ भ्रम हुकै नासन हीं संसे ईर
 हतु हैं ॥ गुरु बिन वाटना हीं कोई बिन हाटना हीं, सुंद
 र प्रगट लोक बेदये कहतु हैं ॥ १५ ॥ पढ़े के न बैठे पास अ
 क्षर न बांच सके, बिन ही पढ़े ते कैसे आवत हे पारसी ॥
 जो हरिके मिले बिन परवि न जाने कोई, हाथ न गलीये
 रहे संशय न टारसी ॥ बैद हि न मिल्यो को ऊबुटी को ब
 ताये देत, भेद बिनु पाये वाके आवध हे छारसी ॥ सुंद
 र कहत सुरवरंच हून देरव्यो जाइ, गुरु बिन ज्ञान ज्यों ही
 अंधेरे में आरसी ॥ १६ ॥ गुरु के प्रसाद बुद्धि उत्तम दसा
 को गहे, गुरु को प्रसाद भवदुरवधिसराइये ॥ गुरु के प्र
 साद अमप्रीतिहु अधिक बोढे गुरु के प्रसाद राम नाम
 गुन गाइये ॥ गुरु के प्रसाद सब जोग की जुगति जाने,
 गुरु के प्रसाद रक्त्यमें समाधिलाइये ॥ सुंदर कहत गु
 रुदेव जो कपाल होइ, तिन के प्रसाद तत्वज्ञान पुन्य पा

इयेथ बूडत भौसागरमें आये के बंधावे धीर, पारउल्ले
 घायदे तनावको ज्यों वैवसो ॥ परउपगारी सबजीवनि
 के सारेकाज, कबहूँ न आवे जाके गुननिको छेवसो,
 ॥ वचनरुनाय भयधम सबदूरकरे, सुंदरदिसवाय
 देत अलष अमेवसों ॥ औरहुसनेहि हमनी के करिदे
 वैसो धे, जगमेन कोऊ हितकारी गुरुदेवसो ॥ १८ ॥ गु
 रुतात गुरुमात गुरुबंधनिजगात, गुरुदेवनरवशिष
 सकलसंवांर्योहै ॥ गुरुदिये दिव्यनैन गुरुदिये मुख
 बैन, गुरुदेव अवनदे सबदउचाख्योहै ॥ गुरुदिये हा
 थपांव गुरुदिये सीसभाव, गुरुदिये पिंडमांही प्रा न
 आयडाख्योहै ॥ सुंदर कहत गुरुदेव जु कपालहोई,
 फिरघाट घडि करि मोहि निसताख्योहै ॥ १९ ॥ कोऊ
 देत पुत्रधन कोऊ देत बलधन, कोऊ देत राजसाज दे
 व ऋषि मुन्योहैं ॥ कोऊ देत जसमान कोऊ देत सआ
 न, कोऊ देत विद्या ज्ञान जगतमें गुन्योहैं ॥ कोऊ देत
 ऋद्धि सिद्धि कोऊ देत नवनिधी, कोऊ देत और कछू
 तातें सीसधुन्योहैं ॥ सुंदर कहत एक दी योजिन रा
 मनाम, गुरुसो उदार कोऊ देख्योहै न सुन्योहै ॥ २० ॥ भो
 मीहूँ कीरेनु कीतो संख्या कोऊ कहत हैं, भारहूँ अठार

दुर्मातिनकेजोपातहैं॥ मेघनकीसरव्यासोउक्कषिनकहीवि-
 चारबुंदनकीसरव्यातेउआयकेविलातहे॥ तारनकीसरव्यासोउ
 कहीहेपुरानमाही, रोमनकीसरव्यापुनिजितनेकगातहे॥ सुद
 रजहालो जंतुतिनहिंकोआवेअंत, गुरुकेअनतगुनकोपैकह
 जातहैं॥ २१॥ गोविंदकेकियेजीवजातहैरसातलको, गुरु
 उपदेसेसोतोछूटेजमफंदसें॥ गोविंदकेकियेजीवब-
 सपरेकर्म निके, गुरुकेनिवाजेसुफिरतहैंस्वच्छंदते
 ॥ गोविंदकेकियेजीवबुडतभोसागरमें, सुंदरकहत
 गुरुकाटैदुरवहंदते॥ औरहुकहांलोकछुमुषतेकहो
 बनाय, गुरुकीतोमहिमाअधिकहेगोविंदते॥ २२॥ चिं
 तामनिपारसकलपतरुकामधेनु, औरहुअनेकनिधि
 वारिवारिनाषियें, जोइकछूटेषियेसोसकलविनाश
 वंत, बुधिमेंविचारकरिबहुअभिलाषियें॥ तातेमनव
 चनकरमकरिकरजोरी, सुंदरचरनसीसमेलदीनभा
 षियें॥ बहुतप्रकारतीनोलोकसबसोधेहम, ऐसीको
 नभेटगुरुदेवआगेराषियें॥ २३॥ महादेववामदेवऋ
 षभकपिलदेव, व्यासशुकदेवजयदेवनामदेवजुरा
 मानंदसुखानंदकहियेअनंतानंद, सरसरानंदहूके
 आनंदअछेवजू॥ रैदासकबीरदाससोजादासपीपा

दास, दासहूके दासभावभावहूकी देवजु ॥ सुन्दरक
 हतसंतप्रगटजगतमांदि तैसेगुरुदादुदासलागेहरि
 सैवजु ॥ २४ ॥ गुरुदेवसर्वोपरिअधिकविराजमानगुरु
 देवसबहीतेंअधिकगरिष्टहैं ॥ गुरुदेवदत्तात्रयनार
 दसुकादिसुनि, गुरुदेवज्ञानधनप्रगटवसिष्टहैं ॥ गुरु
 देवपरमआनंदमयदेवियत, गुरुदेवबरबरियानहु
 वरिष्टहैं ॥ सुन्दरकहतकछूमहिमाकहीनजाय, ऐसै
 गुरुदेवदादूमैरेशिरइष्टहैं ॥ २५ ॥ जोगीजैनजंगमस
 न्यासीवनवासीबोध, औरकोऊभेषपक्षसबभ्रम
 भान्योहैं ॥ तापसरुअधीश्वरमुनीस्वरकवीश्वर, स
 बनिकोमतदेवितत्वपहिचान्योहैं ॥ वेदसारतत्वसा
 रसमृतिपुरानसार, ग्रंथनिकोसारसोईहृदेमांदिआ
 न्योहैं ॥ सुन्दरकहतकछूमहिमाकहीनजाय, ऐसैगु
 रुदेवदादूमैरमनमान्योहैं ॥ २६ ॥ जीतेहेजुकामक्रो
 धलोभमौहदूरकिये, औरसबगुननकौंसदजिन
 भान्योहैं ॥ उपजैनतापकोईसीतलस्वभावजाको, स
 बहीमेंसमतासंतोषउरआन्योहैं ॥ काहूकोनरागदो
 षदेतसबहीकेतोष, जीवतहीपायोमोक्षएकब्रह्मजा
 न्योहैं ॥ सुन्दरकहतकछूमहिमाकहीनजाई, ऐसैगु

रुदेवदादुमैरेमनमान्योहें ॥ २७ ॥ ॥ इति श्रीगुरु
 देवकोशंगसंपूर्ण ॥ १ ॥ ॥ अथ उपदेसचिंतामणि
 कोशंगलिरच्यते ॥ ॥ हंसालच्छंद ॥ ॥ तोषहि चतुर
 सजानपरवीनअति, परेजनिपिंजरेमोहकूआ ॥ पाय
 उत्तमजनमलायलेचपलमन, गायगोविंदगुनजीतजू
 वा ॥ आपहि आपअज्ञाननलनीबंध्यो, विनाप्रभुवि
 सुरषकैचैरमूवा ॥ दाससुंदरकहेपर्मपदतोलहे, राम
 हरिरामहरिबोलसूवा ॥ १ ॥ नफसैतानकोआपनैके
 दकर, क्यादूनीमैफिरेवायगोता ॥ हैगुनगारभीगुना
 हीकरतहे, वायगामारतबफिरेरोता ॥ जितुजेवाकसें
 अजबपैदाकियोतूउसेक्योफरामोसहोता दाससुंद
 रकहेसरमतबहीरहे, हकतूहकतूबोलतोता ॥ २ ॥
 आबकीबूदअप्रीजूदपैदाकिया, नैनमुषनासिकाकसी
 जूती ॥ पैलगेसाकरैउहीलीयांफिरे, जागकेदेषक्याक
 रेसूती, भूलउसष समकोंकामतेंक्याकिया, वेदहिया
 दकरमरनिपूती दाससुंदरकहेसर्वसुषतोलहें, भी
 तुहिभीतुहीबोलतूती ॥ ३ ॥ अवलबस्तादकेकदम
 कीषाकहो, हीरसबगुजारसबछोडफेना ॥ यारदिल
 दारदिलमाहींतूं, यादकरहैतुफेपासतूदेषनैनो ॥ जा

नकाजानहेंजिंदकाजिंदहें, सुषनकासुषनकछु
 समजसेना॥ दाससुंदरकहेसकलघदमेरहे, एक
 तूएकतूबोलमैना॥४॥ ॥छंदमनहर॥ ॥कान
 केगहेतेकहांकानएसेहोतमूढ, नैनकेगएतेकहांनै
 नएसेपाइये॥ नासिकागएतेकहांनासिकासुगंधले
 त, सुषकेगएतेएसेसुषकहांगाइये॥ हाथकेगएतेक
 हांहाथएसोकामहोत, पांवकेगएतेएसेपांवकितधा
 इये॥ याहीतेविचारदेखसुंदरकहततोही, देहकेगए
 तेएसेदेहकितपाइये॥५॥ बारबारकट्योतोहीसाव
 धानक्यौंनहोई, ममताकीमोटसिरकाहेकोंधरतुहे
 ॥मेरोधनमेरोधाममेरोसुतमेरीचाम, मेरेपसमैरेगा
 मभूल्योहीफिरतुहे॥ तूतोभयोबाबरोविकायगईबुद्धि
 तेरी, ऐसोअधकूपग्रेहतामेतूंपरतुहे॥ सुंदरकहततो
 हीनेकहुनआवेलाज, काजकौंविगारकेअकाजक्यौं
 करतुहे॥६॥ तेरेतोकोपेंचपरचोगांठिअतिघूरिगई
 ब्रह्माआईछोरीक्यौंहीछूटतनजबहू॥ तेलसोंभि
 जोईकरिचिंथरालपेटराये, कूकरकोंपूछसुधोहोत
 नहिंतबहू॥ सासूदेतसीयबहूकीरीकोगिनतजाई,
 कहतकहतदिनबीतगएसबहूसुंदरअजानीऐसो

छोड़्यो नहीं अभिमान, निकसत प्रानलगेचे ल्यो न
 हीं कबहूँ ॥७॥ बालुमाहिं तेलनाहीं निकसत काहू
 बिध, यथरन भीजे बहु वर्षत घनहे ॥ पानी के मंथे ते
 कहूँ घीवनहीं पाइयत कूकस के कूठे कहूँ निकसत क
 नहे ॥ सुन्यहीं की मूठी भरी हाथन परत के छू, ऊसर
 में बोहे कहों निपजत अनहे ॥ उपदेस ओषध सों को
 न विधिलागे ताही, सुंदर असाध रोग भयो जाके मन
 हे ॥ ८॥ घेरी घरमाहीं तेरे जानत सनेही मेरे, दारा सुत
 वितते रोषो सिषो सिषायगे ॥ ओरही कुटुंब लोग लूटे
 चहुँ ओरही ते, मीठी मीठी बात कहो तो सोल्य दायगे
 ॥ संकर परगो जब कोई नहिं तेरो तब, अंतही कठन चां
 की चेर ऊठ जायगे ॥ सुंदर कहत ताते जूठोई प्रपंच सब
 स्वप्ने की न्याई सब देषत बिलायगे ॥ ९॥ वारू के मंदि
 रमाही पै ठिर ल्यौ स्थिर होय राखत हे जीवन की आस के
 ऊदीन की ॥ पलपल छीजत घटत जात धरि घरी, बि
 न सतवार कहाष चरन छिन की ॥ करत उपाय जूठे ले
 न देन धान पान, मूसाइत उत फिरे ताकी रही भिन की
 सुंदर कहत मेरी मेरी करि भूल्यो सठ, चंचल चपल मा
 या भई किन किन की ॥ १०॥ अवनले जाइ करि नाद की

लेडारिफांसी, नेनहूलेजाईकरिरूपवसकरयोहे ॥ ना
 सिकालेजायकरिबहुतसंगावेगंध, रसनालेजाईक
 रिस्वादमनहस्योहे ॥ त्वचाहुलेजाईकरिनारीसोस्य
 शंकरे, सुंदरकोइकसाधठगनितेंडस्योहे ॥ काम
 ठगक्रोधठगलोभठगमोहठग, ठगनीकीनगरीमें-
 जीवआइपस्योहे ॥ ११ ॥ पायोहेमनुष्यदेहआस
 रबन्योहेआई, श्रीसीदेहवारवारकहोकहोपाईये
 ॥ भूलतहेबावरेतुअबकेसीयानोहोई रतनअसु
 लसोतोकाहेकुंठगाइये ॥ समजीविचारकरिठग-
 निकोसंगत्याग, ठगबाजिदेरवीकरिमननडुलाइ
 ये ॥ सुंदरकहततातेंसावधानक्यूनहोई, हरिको
 भजनकरिहरिमेंसमाइये ॥ १२ ॥ घरीघरीघटतछी
 जतजातछिनछिनभीजतहीगरिजातमाटीकेसोटे
 लहे मूकतीकेद्वारआईसावधानक्योनहोई, वार
 वारचटतनत्रियाकोसोतेलहे ॥ करिलेसुकृतहरि
 भजलेअरवंडनर, याहीमेंअंतरपडेयामेंब्रह्ममेलहे
 मनुषजनमयहजीतभावेहारअब, सुंदरकहतयामें
 जूआकोसोषेलहे ॥ १३ ॥ जीवनकोगयोराजओरस
 बभयोसाज, आपनीदोहाईफेरदमामोबजायोहे ॥

लकुटिहृथियारलियेनेनकरदालदये, स्वेतवारभयो
 ताकोतंबूसोंतनायोहे॥ दसनगएसुमानोदरवानदू
 रकिये, जोगरीपरीसुआनबिछानोबिछायोहे॥ सी
 सकरकंपतसरसुंदरनिकारयोरियु, देषतहीदेषतबू
 ठापोदोरीआयोहे॥ १४॥ देहकोनदेहकछूदेहकोम
 मत्वछांड, देहतोममोदीयोदेहदेहजातहें॥ घटतोघ
 टतघरीघरीघटनासहत, घटकेगएतेघटकीनफिरबा
 तहें॥ पिंडपिंडमाहीफिंडपिंडकोऊपावतहें, पिंडपिंड
 पातपुनपिंडहीकोपातहें सुंदरनहोयजासोंसुंदर
 कहतजगसुंदरचैतन्यरूपसुंदरविष्यातहें॥ १५॥
 ॥ छंदइंदवजय॥ ॥ ग्रीवत्वचाकटिहेलट
 कीकचहूपलटेअजहूरतवामी दंतगणमुखकेउपरेन
 षरेनगएसुषरोषरकामी कंपतदेहसनेहसुदंपत,
 संयतजंपतहेनिसजामी॥ सुंदरअंतदुभौनतजोन
 भ, ज्यौंभगवतसलोनहरामी॥ १६॥ देहघटीपगभो
 मिसंडेनहिं, ओलठियांपुनहाथलईजू आंषिहुना
 कपरेसुरवतेजल, सीसहलेकचिटीचनईजू॥ ईश्व
 रकोकबहुनसंभारत, दुषपरेतबहाइदईजू॥ सुंदर
 तोहिविषसुषवंचत, घोरिगएपेंबगेनगएजू॥ १७॥

पाइअमोलकदेहयहेनर, क्युंनविचारकरेदिलअंद
 रा॥ कामहुकोधहुलोभहुमोहहु लहतहेदशहुदिशि
 बंदर॥ तूंअबवंचतहेसरलोकहि, कालहुपाइपरे
 सपुरंदर॥ छांडिकुबुद्धिसुबुद्धित्हेधरि, आतमरा
 मभजेक्युनसुंदर॥१८॥ इंद्रनिकेसुषमानतहेसठ,
 याहिहितेबहुतेदुषपावे॥ ज्यौंजलमेंऊषमांसहिली
 लत, स्वादबंध्योजलबाहिरआवे॥ ज्यौंकपिमूठन
 छांडतहेरसना, बसबंधपखोचिललावे॥ सुंदरक्यो
 पहिलेनसंभारत, ज्यौगुरवाईसुकानविंधावे॥१९
 ॥ कौनकुबुद्धिभईघटअंतर, तूंअपनेप्रभुसोमनचो
 रे भूलगयोविषयासुषमेसठ, लालचिलागिरत्थो
 अतिथोरे॥ क्यौंकोईकंचनछारमिलावत, लेकरपा
 थरसोनगफोरे॥ सुंदरयानरदेहअमोलक, तीरल
 गीनौकाकितबोर॥२०॥ देवनकेनरसोभतहेजैसें,
 आहिअनौपमकेलिकोषंभा॥ भीतरतोकछुसारन
 हींपुनि, ऊपरछीलकअंबरदंभा॥ बोलतहेपरनाहि
 कछूसुध, ज्यौंहिवयारतेंबाजतकुंभा॥ रूसरहेक
 पिज्यौंछिनमांहिजु याहीतेसुंदरहोतअचंभा॥२१
 ॥ देवनकेनरदीसतहेपरि, लछननौपसकेसबहीहे

बोलतचालतपीचतषातसु, वेधरवेवनजातसही
 हैं॥ प्रातगाएरजनीफिरिआवतसुंदरयोनिभार
 वहीहैं॥ औरतोलछुनआईमिलेसब, एककमी-
 सिरशृंगनहीहैं॥ २२॥ प्रेतभयोकिपिसाचभयोकि
 निसाचरसोजितहीतितडोलें तूंअपनीसुधभूल
 गयो, सुषतेकछुआरकीआरहीबोलें॥ सोईउपाई
 करेजुमरैपचि, बंधनतोकबहुंनहिंषोलें॥ सुंदरजा
 तनमेंहरिपावत, सोतननासकियोमतिभोले॥ २३
 ॥ पैटतेंबाहिरहोतहिबालक, आईकेमातुपयोध
 रपीनो॥ मोहबंध्योदिनहिदिनआरतरुनभयोत्र
 यकेरसमीनो॥ पुत्रप्रपौत्रबंध्योपरिवारसु, ऐसे
 हिभांतिगयेपनतीनो॥ सुंदररामकोनामविसार
 कें, आपहिआपकोंबधनकीनो॥ २४॥ मातसुता
 सुतभाईबंध्योजुव, तिकेकहेकहाकामकरैहै॥ चो
 रिकरेबटपारिकरेकीर, धीवनिजीकरिपेटभरैहै॥ सी
 तसहेशिरधामसहेकहे, सुंदरसोरनमाजुमरैहैं॥
 बांधीरख्योममतासबसोन्नर, याहीतेंबांध्योहीबां
 ध्योफिरैहैं॥ २५॥ तूठगकैधनआरकोल्यावत, तैर
 उतोघरआरहीफोरै॥ आगलगैसबहीजरिजाईसू

तूंदमरीदमरीकरजोरें ॥ हाकमकोडरनाहीनसूजत
 सुंदरएकहिपारनचौरें ॥ तूषरचेनहिंआपनीषाडसु
 तेरिहीचातुरीतोहिलेबोरें ॥ २६ ॥ ॥ छंदमनह
 र ॥ ॥ करतप्रपंचइनयंचनीकेबसपस्थो, परदा
 रारतभैनआनतबुराईकोपरधनहरेपरजीवकीक
 रेघात, मदमाषषाईलवलेसनभलाईको ॥ होयगो
 हिसाबतबमुषतेनआवेजाब, सुंदरकहतलेषोले
 तराईसाईकोइहांतोफियेविलासजमकीनतोहीआ
 स, उहांतोहीहैकछूराजपोयांवाइको ॥ २७ ॥ दु
 नीयांकोदोडताहैआरितकोलोडताहै ॥ ओजुदको
 मोडताहैवटोईसरईका ॥ सुरगीकोमोसताहैबकरी
 कोरोसताहै, गरीबांकोषोसताहैवेसहेरगाईका ॥
 जुलमकोकरताहैधनीसोंनडरताहै, दोजगकोंभर
 ताहैषजानाबलाईका ॥ होयगाहिसाबतबआवेगा
 नजाबकछू, सुंदरकहतगुनेगारहैषुदाईका ॥ २८ ॥
 करकरआयोजबधरधरकाढ्योनार, भरभरबाज्यो
 दोलधरधरजान्योहै ॥ दरदरदोखोजायनरनरआ
 गेदीन, बरबरबकतननेकअलसान्योहै ॥ सरसर
 सोधेधनतरतरतोरैयान, जरजरकाटतअधिकमो

दमान्योहे ॥ फरफरफूल्योफिरडरडरपेनमूढ, हर
 हरहसतनसुंदरसंकान्योहे ॥ २९ ॥ जनमसिरान्यो
 जाईभजनविमुषसठ, काहेकोंभवनकूपबिनमी
 चमरेहे ॥ गहतअविद्याजानिस्ककनलनीज्योमू
 ढ, करमअविकरमकरतनडरेहें ॥ आपहितेंजात
 अंधनरकमेंचारवार, अजहुनसंकमनमांहींअब
 करेहें ॥ दुरवकोसमूहअवलोककेनआसहोई, सुंद
 रकहतनरनागपासपरेहें ॥ ३० ॥ जूठोजगएनस्कन
 नित्यगुरुबेनदेषें, आपनेहुनेनतोऊअधरहेज्वानीमें ॥
 केतेराचराजारंकभएरहेचल गए, मिलगएधूरमांहीं
 आएतेकहानीमें ॥ सुंदरकहतअबताहीनस्करत
 आये, चैतेक्योनमूढचितलायहिरदानीमें ॥ भूलेज
 नदावजातलोहकेसोंतावजात, आवजातएसेजैसे
 नांचजातपानीमें ॥ ३१ ॥ जगमगपगतजिसजिभजरा
 मनाम, कामक्रोधतनमनधेरीधेरीमारिये ॥ जूठमूढ
 हठत्यागजागभागस्कनिषुनि, गुनज्ञानआनिआन
 वारिवारीडारिये ॥ गहीताहीजाहिसेसईसससिसुर
 नर, ओरबातहेततातफेरीफेरिजाइये ॥ सुंदरदरद
 षोईधोईधोईचारवार, सारसंगरंगअंगहेरिहेरिधारि

शये ॥ ॥ छंददुमिला ॥ ॥ हठजोगधरोत्तनजात
 भिया, हरिनामविनामुषधूरपरे ॥ सठसोगहरोछि
 नगातकिया, चरिचामविनामुषपूरिजरे ॥ भठभोग
 परोधनधातधिया, अरिकांमकिनासुषजूरिमरे ॥
 मठरोगकरोधनधातहिया, पररामतिनादुषदूरकरे
 ॥ ३३ ॥ गुरुज्ञानगहअतिसोइसुषी, मममोहतजेस
 बकाजसरे ॥ धरिध्यानरहेपतिषोइसुषी, रनलोहव
 जेतबलाजपरे ॥ सरताननहेहतिदोषदुषी, तनछोह
 सजेअबआजमरे ॥ गुरथानलहेमतधोइरुषी, जन
 बोहरजंजबराजकरे ॥ ३४ ॥ ॥ छंदमनहरा ॥
 काहेकौंफिरतनरभटकनदोरदोर, डागुलेकीदोरदेवी
 दोरसबजानीये ॥ जोगजज्ञजपतपतीरथप्रतादिकमि
 तिनहूकोफलसोऊमिथ्याइबरवानिये ॥ सकलउपाइ
 तजिएकरामरामभजि, आहीउपदेससुनिहदेमाही-
 आनीये ॥ ताहीतेंसमुजिकरिसुंदरविश्वासधरि,
 औरकोऊकहेकछुताकीनहीमा नीये ॥ ३५ ॥ ॥
 छंदइंदव ॥ ॥ संतसदाउपदेसबतावत, केससबेसि
 रस्वेतभाहे ॥ तूंममताअजहूंनहीछांडत, मातहूआ
 यसंदेसदयेहें ॥ आजकेकालचलेउठसूरष, तेरेतोदेख

तकेतेगएहें॥ सुंदरक्यों नहिं रामसंभारत, याजगमें क
 होको न रहेहें॥ ३८॥ ॥ इति उपदेस चिंतामणि को-
 अंग समाप्त ॥ २॥ ॥ अथ कालचिंतामणि की
 अंग प्रारंभः॥ ॥ छंद इंदव॥ ॥ मंदिरमहल वि-
 लायत हे गज, ऊट ददामादिनाइ क दोहें॥ तातहु मात
 वियासुत बंधव, देष धूपामर होत बिछोहें॥ जूठ प्रपं
 च सोराचिर तद्योसठ, काठ किपुतरी ज्यों कपि मोहें॥
 मेरी हि मेरी कहें नित सुंदर, आंखिलगे कहि कोन को को
 हे॥ १॥ ए मेरे देस विलायत हैं गज, ए मेरे मंदिर ए मेरे था-
 ती॥ ए मेरे मात पिता पुनि बंधव, ए मेरे पूत सो ए मेरे नाती
 ॥ ए मेरे काम निकेल करे नित, ए मेरे सेवक हैं दिन राती॥
 सुंदर बेसे ही छांड गयो सब, तेल जस्यो सुबुजी जब वा-
 ती॥ २॥ ते दिन चार विआमलियो सठ, तेरे कहें कछू छे
 गई तेरी॥ जे से ही बाप दादा गछांडि सु, ते से ही तूत-
 जिहें पल फेरी॥ मारिहें काल चपेट अचानक, होई य-
 रीक मेरा षकी ठेरी॥ सुंदर लेन चले कछु एसंग, भूली
 कहें नर मेरी ई मेरी॥ ३॥ केय हू देह जराय के छार, की-
 या कि की या कि की या कि की या हे॥ केय हू देह जमीम
 हि गरी, दी या कि दी या कि दी या कि दी या हैं॥ केय हू दे

हरहेदिनचार ॥ जीयाकिजीयाकिजीयाकिजीयाहें ॥
 सुंदरकालअचानकआई, लीयाकिलीयाकिलीया
 किलीयाहें ॥ ४ ॥ देहसनेहनछांडतहेनर, जानतहेंथि
 रहेंयहदेहा ॥ छीजतजायघटेदिनहीदिन, दीसतहेंघ
 टकोनितछेहा ॥ कालअचानकआग्रगहेकर, दाहगि
 राईकरैतनषेहा ॥ सुंदरजानियहेनिहचेधरि, एकनि
 रंजनसोकरिनेहा ॥ ५ ॥ तूंकछूओरविचारतहेनर, ते
 रोविचारधर्योइरहेगा ॥ कोटिउपायकरेधनकेहित,
 भागलिष्योतितनोइलहेगा ॥ भोरकिसांऊचरीपलमा
 ऊस, कालअचानकआइगहेगा ॥ रामभज्योनकीयो
 नहिंसकृत, सुंदरयोपछिताइरहेगा ॥ ६ ॥ भूलिगयो
 हरिनामकोंतूसठ, देसधोंकोंसंजोगवन्योहें ॥ काल
 अचानकआग्रगहेकंट, पेषधोंजूठोहितानोन्योहें
 ॥ छारकरेसबधामकोलूटि, अनादिकोंएसेहीजीव
 हून्योहें ॥ कोऊनहांतसहाइकुटुंब, अनादिकोंसुंदर
 योंहीसून्योहें ॥ ७ ॥ वीतगएपिछलेसबहीदिन, आव
 तहेअगलंदिननेरे ॥ कालमहाबलवंतबडोरियु, सोध
 रदयाशिरऊपरतेरे ॥ एकचरीमहिमारिगिरावत, लग
 तनार्हाकछूनहिंघेरे ॥ सुंदरसंतपुकारकहेसब, हुंपु

नितोहिकहोंअबदेरे ॥ ८ ॥ सोयस्त्यो कहांगाफलहै
 करि, तोसिरउपरकालदहेरे ॥ धामसधूमसलागिर
 त्योसठ, आइअचानकतोहियछोरै ॥ ज्यौवनमेंसु
 गकूदतफंदत, चित्रगलेनषसोंउरफोरै ॥ सुंदरकाल
 डरेजिनकेडर, ताम्रभुकोकहुंकर्यौनसंभारे ॥ ९ ॥ चेत
 तव्यौनअचेतनओंचत, कालसदासिरऊपरगाजे ॥
 रोकिरहेगढकेसबद्वारनि, तूंतवकोनगलीहैभाजे ॥
 आइअचानककेसगहेजब, आकरिकेमुनिनितोहिजुल
 जे ॥ सुंदरकोनसहायकरेजब, मूंडहिभूँडभसभरचा
 जे ॥ १० ॥ तूंअतिगाफलहोइरत्योसठ, कुंजरज्यौक
 छुसंकनआनें ॥ मायनहीतनमेंअपनोबल, मत्तभ
 योविषयासुषठानें ॥ षोसतघातसबेदिनबीतनना
 तअनीतकछूनहिजाने ॥ सुंदरकेहरिकालमहारि
 पु दंतउपारिकुंभस्थलभाने ॥ ११ ॥ मातपिताजुवती
 सुतबंधव, आइमिल्योइनसेंसनबंधा ॥ स्वारथके
 अपनेअपनेसब, सोयहजानतनाहिनअंधा ॥ क
 र्मविकर्मकरेतिनकेहित भारधरेनितआपनेकंधा ॥
 अंतविछोहभयोसबसोंपुन, याहीतेंसुंदरहेजगअ
 धा ॥ १२ ॥ ॥ छंदमनहर ॥ ॥ करतकरतयंधकछू

बेनजाने अंध आघतनिकटदिन आगले चपाकदे ॥ जे
 से बाजती तरकुंदा बतहे अचानक जे से वकम छरी को
 लीलतल पाकदे, जे से मक्षिका की धातम करि करत आ
 य ॥ जे से साप मूसक सोंघ सतग पाकदे ॥ चेतरे अचेत
 नर सुंदर संभार राम, ऐ से तो ही काल आयले ईगोट पा
 कदे ॥ १३ ॥ मेरो देह मेरो गेह मेरो परिवार सब मेरो धन मा
 ल मे तो बहु विध भारो हूं ॥ मेरे सब से वकहू कस की ऊ से
 देना हीं, मेरी जुवती के मे तो अधीक पियारा हूं ॥ मेरो वं
 स ऊंचो मेरो बाप दादा ऐ से भयो, करत बडाई मे तो जगत
 उजाख्यो हूं ॥ सुंदर कहत मेरो मेरो करि जाने सठ, ऐसे न
 हीं जाने मे तो काल ही को चारो हूं ॥ १४ ॥ जब ते जनम धख्यो
 तब ही ते भूल पख्यो, बालापन मां हीं भूल्यो समज्यो न रु
 षमें ॥ जोवन भयो हे जब काम वस भयो तब, जुवती सों
 एक मे क भूली रह्यो सुषमें ॥ पुत्र हू प्रपौत्र भए भूल्यो तब
 मोह बांध, चिंता करि करि भूल्यो जाने न ही दुषमें ॥ सुंद
 र कहत सठ तीनो यन मां हीं भूल्यो, अंत पुनि जाइ पख्यो
 काल ही के सुषमें ॥ १५ ॥ उठत बैठत काल जागत सोवत
 काल, चलत फिरत काल काल उर धख्यो है ॥ कहत सु
 नत काल पात हूं पीयत काल, काल ही के गाल मां हीं ॥ पु

हरहस्योहै ॥ तातमातबंधकालसुतदारागृहकाल, सक
लकुटुंबकालकालजालपस्योहै ॥ सुंदरकहतएकरा-
मबिनसबकाल, कालहीकोकृतकियोअंतकालअ
स्योहैं ॥ १६ ॥ जबतेंजनमलेततबहीतेंआयुधटे, मा
ईसोकहतमेरोबडोहोतजातहैं ॥ आजऔरकालयो
रदिनदिनहोतऔर, दोस्योदोस्योफिरतपालतअरुवा
तहैं ॥ बालपनजीत्योजबजोचनलग्योहैआई, जोपन
हूचीतेबूढोडोकरोदीषातहैं ॥ सुंदरकहतएसेदेषतही
बूझिगयो, तेलघटराएजेसेदीयकबुझातहैं ॥ १७ ॥ सब
कोऊरेसेकहेकालहमकारतहैं, कालतोअरपंडनास
सबकोकरतुहैं ॥ जाकेभयअम्हापुनहोतहेकंपायमा
न, जाकेभयअसरसरइंद्रउडरतुहैं ॥ जाकेभयशि
वअरुशेषनागतीनोलोक, केईककल्यपीतेलोमसप
रतुहैं ॥ सुंदरकहतनरगरबगुमानकरे, तूंतोसठपल
पलकनिभेभरतुहैं ॥ १८ ॥ कालसौबलबंतकोऊनाहीदे
धीयत, सबकोकरतअंतकालमहाजोरहैं ॥ कालही
कोडरसुनिभग्योमूसापेंकंबर, जहांजहांजाईतहांत
झांवाकोघोरहैं ॥ कालभयानकभयभीतसबकीयेलो
५ स्वर्गमृत्युपातालमेंकालहीकोसोरहैं ॥ कालहीको

कालएकसुंदरअरवंडब्रम्ह, वासोंकालडरेजोईचल्यो
 चहीअोरहैं ॥१९॥ चरषाभएतेजेसेंघोलतभंभीरीस्वर
 षंडनपरतकहूँनेकहूँनजानीये ॥ जेसेपुंगीवाजतअब
 डस्वरहोतपुनि, ताहूँमेंनअंतरअनेकरागगानीये ॥ जे
 सेकोईगुडीकोंचढायतगगनमांहीं, ताहूँकीसुधनीसु
 निवेसेंहीवषानीये ॥ सुंदरकहततेसेकालकोप्रचंडये
 ग, रातदिनचल्योजाइअचरजमानीये ॥२०॥ मायाजो
 रजोरनराषतजतनकरि, कहतहेएकदिनमेरेकामआ
 ईहैं ॥ तोहीतोमरतकछूवारनहीलागेसठ, देषतहीदे
 षतबल्लासोबिलाइहैं ॥ धनतोधर्योहीरहेचलतनको
 डीगेह, रीतेहाथनिसेंजेसोआयोतेसोजाईहैं ॥ करिले
 सकृतयहूँबेरीयांनआवेफिरी सुंदरकहतनरपुनि
 पछिताईहैं ॥२१॥ बावरोसभयोफिरेबावरीहीबात
 कर, बावरोज्योदेतवायूलागतबुरानोहे ॥ मायाको
 उपायजानेमायाकीचातुरीठानें, मायामेंमगनअतिमा
 थालपटानोहैं ॥ जोवनकेमदमातोगिनतनकोउनातों
 कामवसकामनीकेहाथहिबिकानोहैं ॥ अतिहिभयो
 बेहालसूजतनमाथेकालसुंदरकहतएसोअोरको
 दिवानोहैं ॥२२॥ ऊठोधनऊठोधामऊठोसुषऊठोका

म जूठीदेहजूठोनामधरीकेभुलायोहैं ॥ जूठोतात
जूठीमातजूठेसुतदाराभ्रात, जूठोहितमानमानजूठो
मानलायोहैं ॥ जूठोलेनजूठोदेनजूठोमुषबोलेवेन, जू
ठेजूठेकरेफेनजूठीहीकोधायोहैं ॥ जूठहिमेंएतोभ
योजूठीहीमेंपचगयो, सुंदरकहतसाचकबहूँनआ
योहैं ॥२३॥ ॥दीर्घाक्षर॥ ॥जूठेहाथीजूठेघो
राजूठाआगेजूठादोरा, जूठाबांध्याजूठाछोराजूठारा-
जारानीहैं ॥ जूठीकायाजूठीमायाजूठाजूठेधंधेलाया
जूठामूआजूठाजीआजूठीयाकीबानीहैं ॥ जूठासोवे
जूठाजागेजूठाजुंजेजूठाभागे, जूठापीछेजूठाआगेजू
ठेजूठीमानीहैं ॥ जूठालीयाजूठादीयाजूठाषायाजूठापी
या, जूठासोदाजूठाकीयाऐसाजूठाप्रानीहैं ॥२४॥ ॥
मनहरछंद॥ ॥जूठयोबंध्योहैजालताहीतिंयसत
काल, कालविकरालव्यालसबहीकोंषातहे ॥ नदी-
कोप्रयाहचल्योजातहेसमुद्रमाहीं, तेसेजगकालही
केमुषमेसमातहैं ॥ देहसोंममत्वतातेकालकोभैमा
नतेहैं, ज्ञानउपजेतेबहिकालहूविलातहैं ॥ सुंदरकह
तपरिब्रम्हहैंसदाअरबंड, आदीमध्यअंतएकसोईठ
हरातहैं ॥२५॥ ॥छंदइंदव॥ ॥कालउपावतक-

धपावत कालमिलावतहेगहीमाटी ॥ कालहलावत
 कालचलावत कालसिषावतहेसवआंवी ॥ कालबु
 लावतकालभुलावत कालडुचावतहेचनघांटी ॥ सुं
 दरकालमिटेजबहीपुनि ब्रह्मविचारपटेजवपाठी ॥
 २६ ॥ ॥ इति श्रीकालचिंतामणिकोश्रंगसमाप्तः ॥
 ॥ ॥ अथ देह आत्मा विछौह कौं अंग प्रारंभः ॥ ॥
 छंदइंदव ॥ ॥ ये अवनारसनामुषयेसेही, येसेहीना
 सिकयेसेहीअंधी ॥ येकरयेयगयेसवद्वारस येनपसी
 सहीरोमअसंधी ॥ येसेहीदेहपरिपुनिदीसत, एकवि
 नासबलागतबंधी ॥ सुंदरकोउनजानिसकेयह, बोल
 तहोसकहांगयोपंरवी ॥ १ ॥ बोलतचालनपीचतपा
 वत, सीचतहेहुमकोंजेसेमाली ॥ लेतहूदेतहूदेवतरी
 ऊत, तोरततानबजावतताली ॥ जामहीकर्मविकर्म
 कीयेसव, हेयहूदेहपरीअवठाली ॥ सुंदरसोकिंतहू
 नहिंदीसतषेलगयोडकषेलसोंव्या ॥ २ ॥ मातपिता
 जुवतिरुतबंधव, ला ॥ १० ॥ लोक
 कुटुंबयरोहितरापन, ॥ ॥ देह
 सनेहतहा ॥ नानहु
 रचैतनः

रूपभलोतबहीलगदीसत, जोलगबोलतचालतआ
 गे॥ पीवतघातसुनेअरुदेषत सोईरहेउठिकेपुनिजा
 गें॥ मातपिताभईयामिलिबैठत प्यारकरेजुवति
 गरलागें॥ सुंदरचैतनशक्तिगईजब, देषतताहीस
 बेडरभागे॥ ४॥ ॥ छंदमनोहर॥ ॥ कोनभां
 तकरतारकियोहेंशरीरयह, पावककेमाहीदेखोपा
 नीकोजमावनो॥ नासिकाश्रवननेनवदनरसनवेन
 हाथपांचअंगनषसिषकोबनावनो॥ अजबअनू
 परूपचमकदमकओप, सुंदरसोभतअतिअधिक
 सुहावनो॥ जाहिछिनचैतनशक्तिजबलीनहोई,
 ताहीछिन्नलगतहेसबकोअभावनों॥ ५॥ मृतकाको
 पिंडदेहताहीमेंजुगतिभई, नासिकानयनमुखश्रवनब
 नायोहें॥ सीसपांचहाथअरुअंगुरीविराजमान, अं
 गुरीकेआगेपुनिनबहुलगायोहें॥ पेटपीठछातीकंठ
 बिबुकअधरगाल, दसनरसनबहुबचनसुनायेहें॥
 सुंदरकहतजबचैतनासगतिगई, वहेदेहजारीबारी
 छारकरीआएहे॥ ६॥ देहतोप्रगटयहज्यौंकि त्यों
 हीजानीयत, नेनकेऊरोंकेमाहींजावतनदेखीये॥ ना
 ककेऊरोंकेमाहींनेकनसुवासलेत, कानकोऊरोषे

षपावत कालमिलावतहेगहीमाठी ॥ कालहलावत
 कालचलावत कालसिषावतहेसवआठी ॥ कालधु
 लावतकालभुलावत कालडुबावतहेचनघाठी ॥ सं
 दरकालमिदेजबहीपुनि ब्रह्मविचारपदेजवपाठी ॥
 २६ ॥ ॥ इति श्रीकालचिंतामणिकोत्रंगसमाप्तः ॥
 ॥ ॥ अथ देह आत्मा विछोह कौत्रंग प्रारंभः ॥ ॥
 छंद इंदव ॥ ॥ वैश्रव नारसना मुषवे सेही, वे से ही ना
 सिक वे से ही आंधी ॥ वैकर वे पग वे सव द्वार सु चैन पसी
 सहिरोम आसंधी ॥ वे से ही देह परिपुनि दीसत, एक वि
 ना सब लागत धंधी ॥ सुंदर को उन जानि सके यह, बोल
 त हो सुक हांगयो पंरवी ॥ १ ॥ बोलत चालत पीचत धा
 वत, सीचत हे दुम को जे से माली ॥ लेत हू देत हू देव तरी
 ऊत, तोरत तान बजावत ताली ॥ जाम ही कर्म विकर्म
 की ये सब, है यह देह परी अवठाली ॥ सुंदर सो कित हूं
 नहिं दीसत धेल गयो डक धेल सों ध्याली ॥ २ ॥ मात पिता
 जुवतिरुत वधव, लागत हे सब को अति प्यारो ॥ लोक
 कुदंब यरो हित रायत, होहि नही हम तें कहुं न्यारो ॥ देह
 सनेहत हल गजानहु, बोलत हे मुषसब्द उचारो ॥ सुंद
 र चैतन शक्ति गई जब, वेगिक हे घर बार निकारो ॥ ३ ॥

रूपमल्लोतबहीलगादीसत, जोलगबोलतचालतआ
 गे॥ पीवतघातसुनेअरुदेषत सोईरहेउठिकेपुनिजा
 गें॥ मातपिताभईआमिलिबैठत प्यारकरेजुवति
 गरलागें॥ सुंदरचैतनशक्तिगईजब, देषतताहीस
 बेडुरभागे॥ ४॥ ॥ छंदमनोहर॥ ॥ कोनभां
 तकरतारकियोहेंशरीरयह, पावककेमाहीदेषोपा
 नीकोजमावनो॥ नासिकाअवननेनवदनरसनवेन
 हाथपांचअंगनषसिषकोबनावनो॥ अजबअनू
 परूपचमकदमकअप, सुंदरसोभतअतिअधिक
 सुहावनो॥ जाहिछिनचैतनशक्तिजबलीनहोई,
 ताहीछिन्नलगतहेसबकोअभावनों॥ ५॥ मृतकाको
 पिंडदेहताहीमेंजुगतिभई, नासिकानयनमुषअवनव
 नायोहें॥ सीसपांचहाथअरुअंगुरीविराजमान, अं
 गुरीकेआगेपुनिनबहुलगायोहें॥ पेटपीठछातीकंठ
 चिबुकअधरगाल, दसनरसनबहुबचनसुनायेहें॥
 सुंदरकहतजबचैतनासगतिगई, वहेदेहजारीबारी
 छारकरीआएहे॥ ६॥ देहतोप्रगटयहज्यौंकि त्यों
 हीजानीयत, नेनकेऊरोकेमाहींजावतनदेखीये॥ ना
 ककेऊरोकेमाहींनेकनसुवासलेत, कानकोऊरोबे

माहीसंनतनलेषिये ॥ सुषकेऊरोंपेमैनवचनउचारहो
 त, जीभहूंकोषठरसस्वादनविसेषायें ॥ सुंदरकहत-
 कोऊकोनविधिजानेताही, पीरोकारोकाहूद्वाराजातो
 हुनपैषीयें ॥ ७ ॥ ताततौयुकारेछातीकूटिकूटिरोपतहें
 बाधहुकहतमेरोनंदनकहांगयो ॥ भईयाहुकहतमेरी
 बांहआजदूरभई, वहनकहतमेरोपीरदुषदेगयो ॥ का-
 मनीकहतमेरसीससिरताजकहा, उनततकालहाय
 घायरंडापोलख्यो ॥ सुंदरकहतकोऊताहीनहिंजानी
 सके, बोलतहुतोसोयहछिन्नमेंकहांगयो ॥ ८ ॥ रज-
 अरुबीरजकोप्रथमसंजोगभयो, चेतनासकतितब
 कोनभांतिआईहें ॥ कोऊएककहेवाजमध्यहीकीयो
 प्रवेस, किनहुकपंचमासपीछेकेसुनाईहें ॥ देहकौंवि-
 जोगजबदेषतहीहोईगयो, तबकहोकोनकहांजाइके
 समाईहें ॥ पंडितहिंअपिस्वरतपिस्वरमुनीस्वर, सुंद-
 रकहतयहकिनहुनपाईहें ॥ ९ ॥ तबलोहीक्रियासब
 होतहेंविवधभांती, जबलगघटमांहिचैतन्यप्रकासहें
 ॥ देहकेअसक्तभयेक्रियासबथकीजाय, जबलग-
 स्वासचालेतबलगआसहें ॥ स्वासहुथक्योहेजबरो
 वनलगेहेतब, सबकोऊकहेअवभयोघटनासहें ॥

काहूनहिदेख्योकिहिवोरकीनकहांगयो, संदरकहत
 यहीबडोईतमासहैं ॥१०॥ देहतोस्वरूपतोलोंजोलों
 हेअरूपमांहि, सबकोउआदरकरतसनमानहैं ॥ देदी
 पागवांधीबारबारहीमरोडेसूछ, बाहूऊसबारेअतिथ
 रतगुमानहैं ॥ देसदेसहीकेलोकआपकेहजूरहोइ,
 बैठकरितषतकहांवेसलतानहैं ॥ संदरकहतजबचै
 तनासकनिगई, ऊहेदेहताकीकोऊमानतनआनहैं
 ॥११॥ ॥ इतिदेहआत्माविछोहकोअंगसमासः ॥
 ॥ ॥ अथतृसनाकोअंगप्रारंभः ॥ ॥ छंदइंदव ॥
 नैननकीपलहीपलमेक्षण, आधधरीघटिकाजुगईहे
 ॥ जामगयौजुगजामगयौपुन, सांऊगईतबरातभईहैं ॥
 आजगईअरुकालगईपर, सोतरसोंकछुआरठईहैं ॥
 संदररोसेहीआयुगई, तृसनादिनहीदिनहोतनईहैं ॥
 ॥१॥ ॥ दुमैलाछंद ॥ ॥ कनहीकनकोंविलत्नातफि
 रेसठ, जाचतहेजनहीजनकों ॥ तनहीतनकोंअति-
 रोचकरनर, वातरहेअनहीअनकों ॥ मनहीमनकी
 असनानमिटेपुनि, धावतहैंधनहीधनकों ॥ छिनहींछि
 नसंदरआयुघटी, कबहूँनगघोवनहीवनकों ॥२॥
 ॥ ॥ इंदवछंद ॥ ॥ जोदसवीसपचासभाएसत, होई

हजारतोलारवमंगोगी ॥ कोटिअरवधरवअसंधे, पृथ्वी
 पतिहोनकीचाहजगोगी ॥ स्वर्गपतालकोराजकरो ,
 असनाअधिकीअतिआगलगोगी ॥ सुंदरएकसंतो
 षविनासठ, तेरीतोभूषकदीनभगोगी ॥ ३ ॥ लारवक
 रोडअरवधरवनि, नीलपदममतहालगवादी ॥ जो
 रहिजोरभंडारभरेसब, ओररहीरुजमीतरडादी ॥
 तोहूनतोहीसंतोषभयोसठ, सुंदरतेअसनानहिका
 दी ॥ सूजतनाहिनकालहितोसिर, मारिकेथापमिलार्ई
 तमादी ॥ ४ ॥ भूषलीएदसहूदिसिदोरत, ताहीतेतूंकव
 हूनअथैहैं, भूषभंडारभरेनहिंकेसेहूं, जोधनमेरकुमे
 रलोपैहैं ॥ तूंअबआगेहीहाथपसारत, याहीतेहाथ
 कछूनहिंऐहैं ॥ सुंदरक्योंनहितोषकरेनर, वाईकेषा
 ईकीतोईकैहैं ॥ ५ ॥ भूषनचावतरंकहिरावहि, भूषन
 चाईकेविश्वविगोई ॥ भूषनचावतइंद्रसरासर, ओर
 अनेकजहांगजोई ॥ भूषनचावतहैअधऊर्धहि ,
 तीनहूलोगगिनेकहांकोई ॥ सुंदरजाइतहांदुषहीदु
 ष, जानविनानकहूंसुषहोई ॥ ६ ॥ पेटपसारदियो
 जितहीतत, तेयहभूषकितीयेकथापी ॥ बोरनछो
 रेकछुनहिआवत, मेंबहुभांतभलीविधमापी ॥

दैषतदेहभयंसबजीरन, तूंनितनौतनआहीअघापी
 ॥ सुंदरतोहीसदासमआवत, हेअसनाअजहूंनहिधा
 पी ॥ ७ ॥ तीनहीलोकआहारकीयोसब, सातसमुद्रपी
 योसबपानी ॥ ओरजहांतहांताकतडोलत, काढतआं
 षडरावतप्रानी ॥ दांतदिषावतजीभहलावत, आहीतें
 मेंयहडाकिनीजानी ॥ सुंदरघातमयेकितनेदिन, हे
 असनाअजहूंनअघानी ॥ ८ ॥ पांवपतालपरेगएनी
 कस, सीसगयाअसमानअंधेरो ॥ हाथदसोंदिसकों
 पसरेपुनि, पैठभरेनसमुद्रसमेरो ॥ तीनहूलोकलीए
 सुषभीतर, आंषिहुकानबंधेचहुंफेरो ॥ सुंदरदेहध-
 र्योअतिदीरघ, हेअसनाकहूंछहनेतेरो ॥ ९ ॥ बादअ
 थाभटकेनिसिवासर, दूरकियोकबहुंनहिंधोषा ॥ तूं
 हतीचारनिपापनिकोठनि, साचकहूंमनमानहुंरोषा
 ॥ तोईमिलेतवतेंहोइबंधन, तूंमरिहैंतबहीहोइमो-
 षा ॥ सुंदरओरकहाकहीयेतूंहि, हेअसनाअबतो-
 करतोषा ॥ १० ॥ क्योंजगमाहिफिरेजषमारत, स्वारथ
 कोनपरीजिहिजोले ॥ ज्योंहरीयाईगऊनहिंमानत, दू-
 धदोख्योकछूसोपुनिदोले ॥ तूंअतिचंचलहाथनआ-
 वत, नीकसजाईनहीसुषबोले ॥ सुंदरतोहिकख्योकि

तनीबिर, हेत्रसनाअबतुंमतडोले ॥ ११ ॥ तेकोईक
 नधरीनहिंएकहु, बोलतबोलतपेटहीपाक्यो ॥ हुंकोईबा
 तबनाईकहोंजब, तेतबपीसतहीसबफाक्यो ॥ केतेक
 ल्खोसभएपरबोधत, तेअबआगेहीकोरथहांक्यो ॥ सुं
 दरसीषगईसबहीचलि, हेत्रसनाकहिंकेतोहीथाक्यो
 ॥ १२ ॥ तूंहीअमायप्रदेसपठावत, बूडनजायसमुद्रहिंजा
 जा ॥ तूंहीअमायपहारचढावत, वादबधामरिजाइअ
 काजा ॥ तेसबलोकअमायभलीविध, भांडकियेसब
 रंकहुराजा ॥ सुंदरनोईदुषाईकहोअब, हेत्रसनातोही
 नेकुनलजा ॥ १३ ॥ ॥ इतितूसनाकोअंगसमा
 सः ॥ ५ ॥ ॥ अथधीरजउराहनेकोअंगप्रारंभः ॥
 ॥ छंदइंदव ॥ ॥ पांचदियेचलनेफिरनेकहूं, हाथ
 दियेद्वरिक्त्यकरायो ॥ कानदियेसुनियेहरिकेजम,
 नैनदियेतिनमार्गदिषायो ॥ नाकदियेसुषसोंभतताक
 रि, जीभदईहरिकोंगुनगायो ॥ सुंदरसाजदियेपरमेश्व
 रपेटदियोपरपापलगायो ॥ १ ॥ कूपभरेअरुवावभरे
 पुनि, तालभरेवरषाअतुर्तानो ॥ काठीभरेघटमांटभ
 रेघर, हाटभरेसबहीभरिलीनो, षंडकषासबधारभ
 रेपरि, पेटभरेनचडोदरदीनो ॥ सुंदररीतोईरीतोरहे-

यह, कौन बड़ा परमेश्वर की नो ॥२॥ ॥ मनहर छंद
 ॥ ॥ कीधो पेट चूली कीधों भागी कीधों भार अही
 जोड़ कछू जों किये ससब जरि जातु हे ॥ कीधों पेट थ
 ल कीधों बाघि कीधों सागर ही, जेतो जल परै ते तो स
 कल समातु हे ॥ कीधों पेट दैत कीधों भूत प्रेत राष सहे
 षां ऊषा ऊकर कछु ने कन अघातु हे ॥ सुंदर कहत प्र
 भु को न पाप लायो पेट, जब ही जनम भयो तब ही को-
 षातु हे ॥३॥ विग्रहतो विग्रह करत अति वार वार, तन
 पुनित न कनक बहु अघायो हे ॥ घटन भरत क्यो हि य
 ठ्यो ही रहत नित, शरीर शिराई मे तो कबहुं न धायो हे
 ॥ देह देह कहत ही कहत जनम वीत्यो, पिंड पिंड का
 जनिस दिन ललचायो हे ॥ पुदग ललत गलत न न
 पत होई, सुंदर कहत वपु को न पाप लायो हे ॥४॥ पा
 जी पेट काज कोट वाल को आधीन होई, कोट वाल
 सो तो सिकदार आगे दीन हे ॥ सिकदार दीवान के पी
 छे लग्यो डोले पुनि, दीवान हूं जाय पात साह आगे
 लीन हे ॥ पात साह कहै या बुदाय मुजे और देई, पेट
 ही पसारे वही पेट वस कीन हे ॥ सुंदर कहत प्रभु क्यो हि
 नहीं भरे पेट, एक पेट काज एक एक को आधीन हे ॥५॥

तनीबिर, हेत्रसनाअबतूंमतडोले ॥ ११ ॥ तेंकोईक
 नधरीनहिंएकहु, बोलतबोलतपेटहीपाक्यो ॥ हूंकोईबा
 तबनार्इकहोंजब, तेतबपीसतहीसबफाक्यो ॥ कैतेक
 रघोसभएपरबोधत, तेअबआगेहीकोरधहांक्यो ॥ सुं
 दरसीषगईसबहीचलि, हेत्रसनाकहिंकेतोहीथाक्यो
 ॥ १२ ॥ तूंहीभ्रमायप्रदेसपठावत, बूडतजायसमुद्रहिजा
 जा ॥ तूंहीभ्रमायपहारचटावत, वादत्रयामरिजाइअ
 काजा ॥ तेसबलोकभ्रमायभलीविध, भांडकियेसब
 रंकहुराजा ॥ सुंदरनोईदुषार्इकहोअब, हेत्रसनातोही
 नेकुनलाजा ॥ १३ ॥ ॥ इतितृसनाकोअंगसमा
 सः ॥ ॥ ॥ अथधीरजउराहनेकोअंगप्रारंभः ॥
 ॥ छंदइंदव ॥ ॥ पांचदियेचलनेफिरनेकहूं, हाथ
 दियेद्वरिक्त्यकरायो ॥ कानदियेसुनियेहरिकेजम,
 नैनदियेतिनमार्गदिषायो ॥ नाकदियेसुषसोंभतताक
 रि, जीभदईहरिकोंगुनगायो ॥ सुंदरसाजदियेपरमेश्व
 रपेटदियोपरयापलगायो ॥ १ ॥ कूपभरेअरुवावभरे
 पुनि, तालभरेवरषात्रितुर्तानो ॥ काठीभरेघटमांटभ
 रेघर, ह्वाटभरेसबहीभरिलीनो, षंडकषासबवारभ
 रेपरि, पेटभरेनवडोदरदीनो ॥ सुंदररीतोईरीतोरहे-

यह, कौन बड़ा परमेश्वर की नो ॥२॥ ॥ मनहर छंद
 ॥ ॥ कीधो पेट चूली कीधों भागी कीधों भार अही
 जोड़ कछु जों किये ससब जरि जातुहे ॥ कीधों पेट थ
 ल कीधों बाघि कीधों सागर ही, जेतो जल परै ते तो स
 कल समातुहे ॥ कीधों पेट दैत कीधों भूत प्रेत राष सहें
 बांज बाज करे कछु ने कन अघातुहें ॥ सुंदर कहत प्र
 भु कोन पाप लायो पेट, जब ही जनम भयो तब ही को-
 पातुहें ॥३॥ विग्रहतो विग्रह करत अतिवारवार, तन
 पुनितन कनक बहु अघायोहें ॥ घटन भरत क्यौ हि य
 र्यो ही रहत नित, शरीर शिराई में तो कबहुं नषायोहें
 ॥ देह देह कहत ही कहत जनम वीत्यो, पिंड पिंड का
 जनिस दिन ललचायोहें ॥ पुदग ल गलत गलत नत्र
 पत होई, सुंदर कहत प्रभु कोन पाप लायोहें ॥४॥ पा
 जी पेट काज कोट वाल को आधीन होई, कोट वाल
 सो तो सिकदार आगे दीनहें ॥ सिकदार दीवान के पी
 छे लग्यो डोले पुनि, दीवान हूं जाय पात साह आगे
 लीनहें ॥ पात साह कहै या बुदाय मुजे और देई, पेट
 ही पसारे चही पेट वस कीनहे ॥ सुंदर कहत प्रभु क्यौ हि
 नहीं भरे पेट, एक पेट काज एक एक को आधीनहे ॥५॥

तेंतोप्रभुपेटदीयोजगतनचायेजिन, पेटहीकेलीयेघ
 रघरद्वारफिर्योहे ॥ पेटहीकेलीयेहाथजोरीआगेठा
 दोहोई, जोईजोईकल्योसोईसोईउनकर्योहे ॥ पेट-
 हिकेलियेपुनीमेघसीतधामसहे ॥ पेटहीकेलीयेजा
 ईरनमांहीमर्योहे ॥ सुंदरकहतइनपेटसबभांडुकि
 यो, ओरगेलछूटेपरिपेटगेलपर्योहे ॥ ६ ॥ पेटसो न
 बलीजाकेआगेसबद्वारचले, रावअरुरंकराकपेट
 जीतीलीयेहें ॥ काऊवाघमारतबिडारतहेंकुंजरकों,
 ऐसेरकरबीरपेटकाजप्रानदीयेहें ॥ जंचमंत्रसाधन-
 आराधनमसानजाई, पेटआगेडरतनिडरासेहीये
 हें ॥ देवताअसरभूतप्रेततीनोंलोकपुनि, सुंदरकहत
 प्रभुपेटजेरकीयेहें ॥ ७ ॥ प्रातहीउठतजबपेटहीकी-
 चिंतातब, सबकोऊजातुआपुआपकेअहारकों ॥
 कोऊअनघातपुनिआमिषभषतकोऊ, कोऊघांस
 चरनचरनकोउदारकों ॥ कोऊमोतीफलकोऊवासर
 सवयधान, कोऊपौनपीवतभरतपेटभारको ॥ सुंदर
 कहतप्रभुपेटहीअमाएसब, पेटतुमेदीयोहेजगतहो
 नप्यारकों ॥ ८ ॥ ॥ छंदइंदव ॥ ॥ पेटकंकारनजीव
 हनेबहू, पेटहीमांसभक्षेस्सुरायी ॥ पेटहीलेकरचोरी

करावत, पेढहीकोंगठरीगईकापी ॥ पेढहीपासगेर
 महिडारत, पेढहुडारतकूपरूबापी ॥ सुंदरकाहेकों
 पेढदियोप्रभु, पेढसोअरनहींकोईपापी ॥ ६ ॥ ओ
 रनकोप्रभुपेढदियोतुम, तेरेतोपेढकहूंनहिंदीसे ॥ ए
 भटकाईदीयेदसहूदिस, कोउकरांधतकोउकपीसे
 ॥ पेढहीकारननाचतहीसब, ज्योंघरहीघरनाचतकी
 से ॥ सुंदरआपनषाचहुपीवहु, कोनकरीइनऊपरसी
 से ॥ १० ॥ ॥ सुंदमनहर ॥ ॥ काहेकोंकाहूकेआ
 गेजायकेआधीनहोई, दीनदीनबचनउचारमुषकह
 तें ॥ जिनकोतोमदअरुगरबगुमानअति, तिनके
 फठोरयेनकबहूंनसहते ॥ तुंमारेईभजनसोंअधिक
 लौलीनअति, सकलकोत्यागिकेएकांतजाइगहते
 ॥ सुंदरकहतयहीतुमहीलगायोपाप, पेढनहूंतोतो
 प्रभुबैठेहमरहते ॥ ११ ॥ पेढहीकेवसरंकपेढहीकेवस
 राव, पेढहीकेवसअोरषानसुलतानहे ॥ पेढहीकेवस
 जोगीजंगमसन्यासीशेष, पेढहीकेवनवासीवासीषा
 तपानहें ॥ पेढहीकेवसअधिमुनितपधारिसब, पेढ
 हीकेवससिधसाधकसजानहें ॥ सुंदरकहतनहीं
 काहूकोगुमानहे, पेढहीकेवसप्रभुसकलजिहानहें

१२॥ ॥ इति धीरज उराहनको अंगसमाप्तः ॥ ६ ॥
 ॥ अथ विश्वासको अंगप्रारंभः ॥ ॥ छंद ईदव ॥
 होइ निचिंत करे मत चिंतहि, चांचदई सोई चिंत करे गो
 ॥ पांच पसार पल्यो किन सोवत, पेढ दीयो सोई पेढ भेसो
 ॥ जाव जिते जल के थल के पुनि, पाहन में पहुंचा यधरे
 गो ॥ भूषही भूष पुकारत हेनर, सुंदरतूंक ही भूष मेरंगो
 ॥ १ ॥ धीरज धारि विचार निरंतर तोही, रच्यो सोई आपु
 ही ऐहें ॥ जेती कभूष लगी घट प्राणहि, तेति कतुं अनया
 सहि पैहें ॥ जो मन में असना करि ध्यावत, तोति हुं लोक
 नषात अघैहें ॥ सुंदरतूमत सोच करे कछु, चांचदई जि
 न चून ही दिहें ॥ २ ॥ नेकुन धीरज धारत हेनर, आतुर हो
 इद सो दिसधावे ॥ ज्यों पसुषें च तोडावत बंधन, ज्यों
 लगिनीर अहारन आवें ॥ जानत नाहीं महामतति मूर
 ष, जाघर द्वार धनी पहुंचावे ॥ सुंदर आप कियो घट भा
 जन, सो भरि हे मत सोच उपावे ॥ ३ ॥ भाजन आप घडे
 जितने भरि, हे भरि हे भरि हे भरि हे जू ॥ गावत हैं जिनके
 गुन कौंदरि, हैं दरि हे दरि हे दरि हे जू ॥ आदिहु अंतहु म
 ध्य सदा हरि, हैं हरि हे हरि हे हरि हे जू ॥ सुंदर दास सहा
 यश ही करि, हैं करि हे करि हे करि हे जू ॥ ४ ॥ काहे कौंदो

दोरतहेदसहूदिस, तूंनरदेषिकियोहरिजूको ॥ बैठि
 रहेदुरिकेमुषसुंदी, उधारतदांतषवाइहेतूको ॥ गर्भस्थ
 केप्रतिपालकरीजिन, होइरतद्योतबहीजडमूको ॥ सुं
 दरक्यौं विललातफिरेअब, राषतद्वेविसहासप्रभू
 को ॥ ५ ॥ ज्यादिनतेंग्रभवासनज्यौनर, आइअहार
 लीयोतबहीको ॥ घातहीघातभएइतनेदिन, जानत
 नाहिनभूषकहीको ॥ दोरतध्यावतपेटदिषावत, तूं
 सठकीटसदाअनहीको ॥ सुंदरक्यौं विसवासनरा
 षत, सोप्रभुविश्वभरेकबहीको ॥ ६ ॥ घेचरभूचरजेज
 लकेचर, देतअहारचराचरपोषे ॥ वैहरिजूसबकोंप्रति
 पालक, ज्यौंजिहिभांतितिसीविधितोषें ॥ तूंअबक्यौं
 विसवासनराषत, भूलतहेकितथोंघेहिधोषे ॥ तोहि
 तहांपहुंचायरहेप्रभु, सुंदरवैठिरहेकिनओषे ॥ ७ ॥
 ॥ छंदमनहर ॥ ॥ काहेकोंबधूराभयोफिरतअज्ञा-
 नीनर, तेरेतोरिजकतेरेघरबैठेआईहैं ॥ भावेतुसुमेर
 जाईभावेजाईमारुदेस, जितनोकभागलिष्योतित
 नोकपाइहैं ॥ कूपमाजभरिभावेसागरिकेतीरभरि, जि
 तनोकभांडोनीरतितनोसमाईहैं ॥ ताहीतेंसंतोषक
 रि सुंदरविश्वासधरि, जितनोरच्योहेघटसोईजुभ

राईहैं ॥ ८ ॥ काहेकोंफिरतनरदीनभयोघरघर, देषीय
 ततेरोतोअहारइकसेरहे ॥ जाकोदेहसागरमेंसुन्यो
 सतजोजनको, ताहूकोतोदेतप्रभुयामेनहिंफेरहें ॥ भू
 षोकोऊरहतनजानीयेजगतमांहीं, कीरीअरुकुंजार
 सबनिहीकोदेरहें ॥ सुंदरकहतविसवासक्योंनरापे-
 सठ, बारबारसमुजायकल्होकेतीवारहें ॥ ९ ॥ तरेतो
 अधिरजतुंआगलीहीचिंतकरे, आजतोभस्योहपेट
 कालकेसीहोईहें ॥ भूषोईपुकारेअरुदीनउठिषातो
 जाइ, अतिहिअज्ञानीजाकीमतिगईषोईहें ॥ ताकों
 नहिंजानोंसठजाकोंनामविश्वंभर, जहांतहांप्रगटि
 सबनिदेतसोईहें ॥ सुंदरकहततोहीचाकोतोभरोंसो
 नाहीं ॥ एकविसवासविनयाहीभांतिरोईहें ॥ १० ॥ दे
 षधोसकलविश्वभरतभरनहार, चूचकेसमानचून-
 सबहीकोंदेतहें ॥ कीटपक्षपंथीअजगरमछकछपु
 न, उनकेनसोदाकोऊनकोकछुषंतहें ॥ पेटहीकेकाज
 रातदिवसभ्रमतसठ, मेतोजान्योनीकेकरितुंनोकोऊ
 प्रंतहें ॥ मानुषशरीरपायकरतहेंहायहाय, सुंदरक
 हतनरतेरसिररेतहे ॥ ११ ॥ तूंतोभयोबावरोउनाव
 राफिरतअति, प्रभुकोविश्वासगहिकाहेनरहतुहें

॥ तैरे तो रिज कहें सो आई हैं सहज मांहीं, यों ही चिंता क
 रिकरि देह को दहतु हैं ॥ जिन यहन षशिष सजिके मंवा
 स्यो तो ही, अपने कीये का वहलाज को दहतु हैं ॥ काहे को
 अजानी कछु सोच मन मांहीं करे, भूषो तुं कंदनर द्वे संद
 र कहतु हैं ॥ १२ ॥ जगत में आई के विसा स्यो द्वे जगत प
 ति, जगत कीयो हे सोई जगत भरतु हे ॥ तैरे निस दिन चिं
 ता और ही पर हैं आई, उद्यम अने कभांति भांती के कर
 तु हैं ॥ इत उत जाय के कसाई करित्याऊं कछु, ने कुन अ
 जानी न रधारज धरतु हैं ॥ सुंदर कहत एक प्रभु के विश्वा
 स बिन, याद ही को च्या सठ पचिके मरतु हैं ॥ १३ ॥ ॥
 इति विश्वास को अंग समाप्तः ॥ ७ ॥ ॥ अथ देह
 मलीनता का गर्व प्रहार को अंग प्रारंभः ॥ ॥
 छंद मन हर ॥ ॥ देहतो मलीन अति बहुत विकार
 भरी, ताहू मांहीं जरा व्याधिस ब्रदुषराशी हैं ॥ कबहू
 कपेट पीर कबहू कसिर वाय, कबहू कआंषकान मु
 षमें विधासी हैं ॥ और हू अने क रों मन षशिष पूर रहे
 कबहू करवा सचले कबहू कषासी हे ॥ ऐ सो या शरीर
 ताही आपनो के मानत हे, सुंदर कहत यामें कान स्रष
 वासी हैं ॥ १ ॥ ज्या शरीर मांही तूं अने क स्रष मानर ल्यो

ताहीतुं विचारया मे कोन वात भली है ॥ मेद सज्जामांस
 रगरग मे रगत भर्यो, पेद हू पिदारी सी मे ठोर ठोर मली
 है ॥ हाड निसो भर्यो सुष हाड निके नैन नाक, हाथ पां
 व सोऊ सच हाड नी की नली है ॥ सुंदर कहत या ही देखी
 जिन भूली कोई, भीतर भंगार भरी ऊपर तो काली है ॥ २
 ॥ छंद इंदव ॥ ॥ हाड को पिंजर चाम मर्यो,
 सच मां ही भर्यो मल मूत्र विकारा ॥ थूकर लाल पेसु
 षते पुनि, व्याधि चहे सच और हिद्वारा ॥ मांस की जीभ
 सोंषाय सबे कछू, ताही ते ता को हे कोन विचारा ॥ ऐसे
 शरीर में पैसि के सुंदर, के से के की जिये सो चरित्र चारा
 ॥ ३ ॥ थूकर लाल भर्यो सुष दी सत, आंघि मे गी डर
 नाक मे से दो ॥ और उद्धार मली न रहे अति, हाड के मां
 स के भीतर मे दो, ऐसे शरीर में चास कियो तब, एक से
 दी सत ब्राह्मण दे दो ॥ सुंदर गर्व कह हाड तने पर, काहे
 को तूं नर चालत दे दो ॥ ४ ॥ जादि न गर्म संजोग भयो
 जब, तादि न बूंद छिपाइती नाही ॥ द्वादस मास अ-
 धो सुष फूलत, बूडर ल्यो पुनि बार समाहीं ॥ तारजवी
 रज की यह द्रेह सो, तूं अब चालत देषत छाहीं ॥ सुंद
 र गर्व गुमान कह साठ, आपुनि आदि विचारत नाही

॥५॥ ॥ इति देहमलीनतागर्वप्रहारको अंगसमा
प्तः ॥ ८ ॥ ॥ अथ नारीनिंद्याको अंगप्रारंभः
॥ ॥ छंदमनहर ॥ ॥ कामनीको तनमानो क-
हिये सघनवन, उहांको ऊजाय सो तो भूलेहु परतुहें ॥
कुंजरहे गतिकटिके हरिकों भयजामें, बेनीकालीना
गनीऊफनिकों धरतुहें ॥ कुचहे पहार जहां कामचोर
रहे तहां, साधिके कटाक्षबानप्रानको हरतुहें ॥ सुंद-
र कहत एक और डरजामें अति, राक्षसी बदन पाऊं
पाऊही करतुहें ॥ १ ॥ विषही की भोमी मां हि विषके
अंकुर भए, नारी विषवेली बढी नषसिष देवीये ॥
विषहीके जरमूल विषहीके डारपात, विषहीके फूल
फल लागे जु विशेषीये ॥ विषके तंतूपसार उर जाई आं
टीमार, सब नर वृक्ष पर लपटे ही लेषीये ॥ सुंदर कहत
कोऊ संततरु वचि गयौ, तिनके तो कहूं लतालागीन
हीं पेषीये ॥ २ ॥ उदरमें नरक नरक अधद्वारनिमें, कुच
निमें नरक नरक भरि छातीहें ॥ कंठमें नरक गाल चिं-
बूक नरक बिंब, सुरघमें नरक जीभ लालहु चुचातीहें ॥
नाकमें नरक आंषकांनमें नरक चहे, हाथ पांवनषशि-
घनरक दिषातीहें ॥ सुंदर कहत नारी नरककों कुंडयह

नरकमेंजाईपरेसोनरकपातीहैं॥३॥कामनीकेअंग-
 अतिमलिनमहांअसुख,रोमरोममलिनमलिनसब
 द्वारहैं॥हाडमांसमज्जाभेदचामसोंलपटरावे,ठोसो
 ररक्तहुकेभरेईभंडारहैं॥मूत्रऊपुरीषआंतएकमेक-
 मिलीरही,औरहीउदरमाहींविवधविकारहैं॥सुंदर
 कहतनारीनषसिषभिंदासूप,ताहीजेसराहेसोतोबड़े
 ईर्गेचारहैं॥४॥ ॥छंदकुंडलिया॥ ॥धारैरसप्रि
 यामंजरी,औरसिंगारहिजान॥चतुराईकरिबहुतवि-
 ध,विषैबनाईआन॥विषैबनाईआन,लागतविष
 यनिकोंप्यारी॥जागैमदनप्रचंड,सराहेंनषशिषना-
 री॥ज्यौरोगीमिष्टान्नरवाई,रोगहिविस्तारें॥सुंदरये
 गतिहोई,रसिकजोरसप्रियधारै॥५॥भायरसिकप्रि-
 यकेसुनत,उपजेबहुतविकार॥जोयामेहिचितधरे
 बहेहोतनरधार॥बहेहांतनरधार,चारनोकबहुंनला-
 गे॥सुनतविषयकीबात,लहरविषहीकीजागे॥ज्यों
 कोऊउंधतनीदमें,लेपुनिसेजबिछाय॥सुंदरएसीजा-
 नकै,सुनतरसिकप्रियभाय॥६॥ ॥इतिनारीनिं-
 द्याकोअंगसमाम॥६॥ ॥अथदुष्टज-
 नकोअंगप्रारंभः॥ ॥छंदमनहरा॥ ॥अपने

नदोषदेषेपरकेअगुनपेषे, दुष्टकोस्वभावउठिनिंदा
हीकरतुहें ॥ जेसेकोईमहलसंवारिराध्योंनीकैकरी,
कीरीतहांजाइछिद्रदूंततफिरतुहें ॥ भोरहीतेसांजल
गसांजहीतेभोरलग, सुंदरकहतदिनएसेहीभरतुहें
॥ पावकीतरेकीनहीसूजेआगसूरषकों, औरसोंकह
ततेरेसिरपेंबरतुहें ॥ १॥ ॥ छंदइंदव ॥ ॥ घातअ
नेकरहेउरअंतर, दुष्टकहेसुषसोंअतिमीठी ॥ लोटत
पोटतव्याघ्रहिज्योंनित, ताकतहेपुनिताहीकीपीठी
॥ ऊपरतेछिरकेजलआनस, हेठलगावतजारिअंगी
ठी ॥ यामहिभूरकछूसतिजानहु, सुंदरआपुनिआं-
षिनिदीठी ॥ २॥ आपनैकाजसंवारनकेहित, औरको
काजविगारतआई ॥ आपनौकारजहोउनहोऊ, बुरो
करऔरकोडारतआई ॥ आपहूषोवतऔरहूषोवत,
षोयदुनोघरदेतबआई ॥ सुंदरदेषतहीबनिआवत
दुष्टकरेनहिंकोनबुराई ॥ ३॥ ज्योंनरयोषतहेंनिजदे
हही, अन्यविनासकरेतिहिंवारा ॥ ज्योंअहीऔरम
नुष्यहीकाटत, वाहीकछूनहिंहोतअहारा ॥ ज्योंपुनि
पावकजारिसवेकछु, आपहीनासभयोनिरधारा ॥
त्योंयहसुंदरदुष्टस्वभावहू, जानितजोकिनतीनप्रका

रा॥४॥ सर्पडसेसनहीकछुतालक, वीछूलगेसुभ-
 लोकरीमानों॥ सिंधूहायतोनाहीकछूडर, जोगजमा
 रततो नहिं हानो॥ आगजरोजलबूडीमरोगिरि, जाइ
 गिरोकछुभैमतआनों॥ सुंदरओरभलेसबहीयह,
 दुर्जनसंगभलोजितजानों॥ ५॥ ॥ इति दुष्टजन-
 को अंगसमाप्तः॥ १०॥ ॥ अथ मनको अंगप्रा-
 रंभः॥ ॥ छंदमनहर॥ ॥ हटकिहटकिमनराष-
 तज्यौंछिनछिन, सठकिसठकिचहुंओरअबजातहें॥
 लठकिलठकिललचायलोलवारवार, गठकिगठकिक
 रिषिषफलवातहें॥ ऊठकिऊठकितारतोरतकरमही
 न, भठकिभठकिकहुंनेकनअघातहें॥ पठकिपठकि-
 सिरसुंदरजुमानीहारी, फिटकिफिटकिजाईसुधोंको
 नवातहें॥ १॥ पलहीमेंमरिजायपलहीमेंजीवतुहें, प-
 लहीमेंपरहाथदेषतविकानोहें॥ पलहीमेंफिरेनचषं
 डहुब्रंहुंहुंडसब, देख्योअनदेख्योसोतौयातेनहीछानो
 हें॥ जातो नहीजानीयतआवतो नदीसेकछू, ऐसेसीब-
 लाईअवतासोंपखोपानोहें॥ सुंदरकहतयाकीगति
 हूनलषीपरे, मनकीप्रतीतकोऊकरेसुदिवानांहे॥ २॥
 घेरीयेतोघेखोहूनआवतहेमेरोपुत, जोईपरबोधाएक

काननधरतुहे ॥ नीतिनअनीतिदेवेसुभनअसुभपे
 वे, पलहीमेंहोतीअनहोतीहूकरतुहे ॥ गुरुकीनसाधु
 कीनलोकवेदहूकीसंक, काहीकीनमानेनतोकाहूतें
 डरतुहें ॥ सुंदरकहतताहीधीजियेसुकोनभांती, मन
 कोरवभावकछूकत्योंपरतुहें ॥ ३ ॥ कामजबजागेत
 बगिनतनकोऊसंक, जानेसबजोईकरिदेषतनमाधीहें
 ॥ क्रोधजबजागेतबनेकनसंभारसके, ऐसीविधमूलकी
 अविद्याजिनसाधीहें ॥ लोभजबजागेतबत्रपतिनक्यों
 हीहोई, सुंदरकहतइनऐसेंहीमेंबाधीहें ॥ मोहमतवारो
 निसदिनहीफिरतरहे, मनसोनकहूंहमदेव्योअपराधी
 हें ॥ ४ ॥ देषवेकोदोरेतोअठकीजाईचाहीघोर, सुनवे
 कोदोरेतोरसिकसिरताजहें ॥ संगवेकोंदोरेतोंअधा
 ईनरुगंधकर, पायवेकोंदोरेतोनधांपेमहराजहे ॥ भो
 गहीकोंदोरेतोअपतिनहीहोईक्योंही, सुंदरकहतया-
 हीनेकहीनलाजहें ॥ काहूकोंनकत्योंकरेआपुनीही
 टेकपरे, मनसोनकोऊहमदेव्योदगावाजहें ॥ ५ ॥ देष
 नकुठोरठोरकहतऔरकीऔर, लीनजाईहोतहाडमां
 सउरगतमें ॥ करतबुराईसरओसरनजानेकछू, धका
 आयदेतरामनामसोंलगतमें ॥ जहांसरअसरवहां

जेसबमेषीजन, सुंदरकहतदिनघालतभगतमें॥ ओ
 रउअनेकअंतराईहीकरतरहे, मनसोनकोऊहेअध-
 मयाजगतमें॥ ६॥ जिनठगेसंकरविधाताइंद्रदेवमुनी
 आपनोऊअधीपतिठग्योजिनचंदहे॥ औरजोगीजं
 गमसंन्यासीसेषकोनगिने, सबनिकोंठगतठगावेन
 स्वच्छंदहे॥ तापेस्वरभरुषीस्वरसबपचियचिगये, का
 हूकेनआवेहाथएसोयापेचंदहे॥ सुंदरकहतअबको
 नबिधिथीजेताही, मनसोनकोऊयाजगतमाहीरिंदहे
 ॥ ७॥ रंककोनचावेअभिलाषधनपायवेकी, निसदिन
 सोचकरीएसेहीपचतहे॥ राजाहीनचावेसबभोमीही
 कोराजलेवै, औरउनचावेजोईदेहसोरचतहे॥ देवता
 अस्तरसिधपन्नगसकललोक, कीटपशुपंछीकहूके
 सेकैवचतहे॥ सुंदरकहतकाहूसंतकीकहीनजाय, म
 नकेनचाएसबजगतनचतहे॥ ८॥ ॥ छंदइंदव॥ ॥
 केतोफल्होसबएसमुजावत, नेकनमानतहेमनभोंड॥
 भूलरह्योबिषयासुखमेंकछु, औरनजानतहेसठदोड़
 ॥ आंघिनकानननाकविनासिर, हाथनपावनहींमुषयो
 डं॥ सुंदरताहीगहेकोऊक्यौकरि, निकसिजाईबडोमन
 लौंड॥ ९॥ दोरतहेदसहूदिसकोंसठ, वायुलग्योतवतें

भयोबेंडा ॥ लाजनकानकछूनहिंराषत, सीलस्वभा
 वकीफोरतभेंडा ॥ सुंदरसीसकहाकहदीजिये, भे
 दैनबानछेदेनहिंगेंडा ॥ लालचलागरल्योमनवीस
 र, बारहीवाठअठारहीपेंडा, ॥ १० ॥ स्वानकहूंकेशर
 गालकहूंकि, बिडालकहूँमनकीमतिताँसी ॥ देठक
 हूकीधोडूमकहोंकिधों, भोंडकहूँकेभंडाईजैसी ॥
 चौरकहूँचटपारकहूँठग, जारकहूँउपमाकहूँकैसी
 ॥ सुंदरओरकहाकहियेअब, यामनकीगतदीस
 तऐसी ॥ ११ ॥ कैचेरतुमनरंकभयोसठ, मागतभी
 षदसोंदिसडूल्यो ॥ कैचेरतुमनछअधर्योशिरका
 मनिसंगहिंडोरनफूल्यो ॥ कैचेरतुमनछीनभयोअ
 ति, कैचेरतुसकषपाईकैफूल्यो ॥ सुंदरकैचेरतोहीक
 ल्योमन, कोनगलीकैहीमारगभूल्यो ॥ १२ ॥ इंद्रनि
 केसकषचाहतहेमन लालचलागिअमेंसठयोही ॥
 देवीमरीचीभर्योजलपूरन, धावतहेमृगमूरषल्यो
 ही ॥ प्रेतपिशाचनिशाचरडोलत भूषमरेनहिंधाप
 तक्योंही ॥ वायुबधूरहिकोनगहेकर, सुंदरदोरत
 हेमनल्योही ॥ १३ ॥ जैसबकोसिरताजततछिन,
 ज्योंअभिअंतरज्ञानविचारें ॥ ज्योंकछुओरविसे

सुषयंछत, तोयहृदेहअमोलकहारे ॥ छांडिकुबु-
 धभजोभगवंतहि, आपुतरेपुनिओरहीतारे ॥ सुं-
 दरतोहिकर्यो कितनीविर, तूंमनक्योंनहिंआप-
 संभारे ॥ १४ ॥ कोनस्यभावपर्योउठिदोरत, अमृ-
 तछांडिचचोरतहाडें ॥ ज्योंभ्रमकीहथनीद्वगदेष
 त, आतुरहोइपडेगजपांडे ॥ वादब्रथाभटकेनिस
 वासर, एकहूसीषलगीनहिंराडें ॥ सुंदरतोहिसदं
 समुजावत, रेमनतूंभ्रमकोंकिनछांडे ॥ १५ ॥ जोमनना
 रिकिवोरनिहारत, तोमनहोतहेताहीकोरूपा ॥ जो
 मनकाहूसोंभोधकरेजब, तोमनकैतबहीतबरूपा
 ॥ जोमनमायाहीमायारदेनित, तोमनबूडतमाया
 केकूपा ॥ सुंदरजोमनब्रह्मविचारत, तोमनहोतहे
 ब्रह्मस्वरूप ॥ १६ ॥ ॥ छंदमनहर ॥ ॥ कब
 हूंकहंसउठेकबहूंकरोईदेत, कबहूंबकतकहूंअंत-
 हूनलहीये ॥ कबहूंकषाईतोअधातनहींकाहूकरि
 कबहूंककहेमेरेकछूनहिंचहियें ॥ कबहूंआकास
 जाइकबहूपातालजाई, सुंदरकहतताहीकैसेंकरि
 गहियें ॥ कबहूंकआयलगकबहूंउतरभागे, भूतके
 सेचित्रकरेऐसोमनकहियें ॥ १७ ॥ कबहूंतोपांयको

परेवाकेदिषावेमन, कबहूंकधूरकेचावरकरिले
 नहेकबहूंतोगुटिकाउछारतआकासबोर, कबहूं
 तोरातेपीरैरंगस्यामस्वेतहे ॥ कबहूंतोआंबकोउ
 गाईकरिढाढोकरे, कबहूंतोसीसधरजुदेकरिदेतहे
 ॥ वाजीगजप्यालऐसोसुंदरकहतमन, सदाईभ्रम
 तरहेऐसोकोऊभेतहे ॥ १८ ॥ कबहूंकसाधहोतकब
 हूंकचोरहोत ॥ कबहूंकराजाहोतकबहूंकरंकसो ॥
 कबहूंकदीनहोतकबहूंगुमानीहोत, कबहूंकसूधो
 होतकबहूंकबंकसो ॥ कबहूंककामीहोतकबहूंक
 जतीहोत, कबहूंनिर्मलहोतकबहूंकपंकसो ॥ मन
 कोस्वरूपऐसोसुंदरफटिकजैसे ॥ कबहूंकसूरहोत
 कबहूंकमयंकसो ॥ १९ ॥ हाथीकोसोकानकीधोंपीपर
 कोपानकीधों, ध्वजाकोउडानकहूंधिरनरहतुहें ॥
 पानीकोसोघेरकीधोंपानउरजेरकीधों, चक्रकोसो-
 फेरकोउकेसेकेगहतुहें ॥ अरहटकीमालकीधोंचर
 प्याकोप्यालकीधों, फेरीषातोबालकछूसुधनल
 हतुहें ॥ धूमकेसोधांवताकोराववेकोचावेऐसो,
 मनकोरवभावसोतोसुंदरकहतुहें ॥ २० ॥ सरवमा
 नेदुरवमानेसंपतिविपतिमाने, हर्षमानेसोकमाने

मानेरंकधनहे॥ घटिमानेबटिमानेंसुभहुअसुभमा
 नें॥ लाभमानेंहानमानेयाहीतेंकपनहे॥ आपमानें
 पुन्यमानेंउत्तममध्यममाने, नीचमानेंऊंचमानेमाने
 मेंरोतनहे॥ स्वर्गमानेनर्कमानेबंधमानेमोक्षमाने,
 सुंदरसकलमानेंतातेंनाममनहे॥ २१॥ जोईजोईदे
 षेकछुसोईसोईमनआही, जोईजोईसुनेसोईमन
 हीकोभ्रमहे॥ जोईजोईसुंघेजोईषाईजोरयर्सहोई,
 जोईजोईकरेसोईमनहीकोकर्महे॥ जोईजोईग्रसे-
 जोईत्यागेजोईअचुरागें॥ जहांजहांजोईसोईमनही
 कोभ्रमहे॥ जोईजोईकहेसोईसकलसंस्कारमनजो
 ईजोईकल्पेसोईमनहीकोधर्महे॥ २२॥ एवहीविटप
 विश्वज्योंकोत्यौंहीदेषीयतअतिहिसधनताकेप
 अफलफूलहे॥ आगलेऊरतपातनएनएहीतजात
 ॥ एसेयाहीतरुकोअनादीकालमूलहे॥ दसचारलो
 कलोपसरीरत्योजहांतहां, अरधउरधपुनिशुधाम
 रुस्थलहे॥ कोऊतोकहतसतकोऊतोकहेअसत्य,
 सुंदरकहतभ्रमहीकोमनमूलहे॥ २३॥ तोसांनकपू
 तकोऊकितहनदेषियत, तासोनसपूतवोऊदेषीय
 तओरहे॥ तूंहीआपभुलेमहानीचहूतेनचहोई,

तूहीआपजानेतोसकलसिरमोरहै॥तूहीआपभ्रमे
तबजगतभ्रमतदेखे,तेरेस्थितभयेसबठोरहीकोठो
रहे॥तूहीजीवरूपतूहीब्रह्महैअकासवत,सुंदर
हतमनतेरीसबदोरहे॥२४॥मनहीकेभ्रमतेजग
तयहदेवीयत,मनहीकोभ्रमगएजगतविलातहे॥
मनहीकेभ्रमजैवरिमेंउपजतसाप,मनकेविचारे-
सापजेवरीसमातहे॥मनहीकेभ्रमतेमरीचिकाको
जलकहे,मनहीकेभ्रमसीपरूपोसोदिधातहे॥सुंद
रसकलयहदीसेमनहीकोभ्रम,मनहीकोभ्रमगए
ब्रह्महोईजातहे॥२५॥मनहीजगतरूपहोईकरि
विसतरुयो,मनहीअलषरूपजगतसोन्यारोहे॥म
नहीसकलघटव्यापकअरवंडएक,मनहीसकलय
हजगतपियारोहे॥मनहीआकासवतहाथनपरत
कछू,मनकेनरूपरेषब्रधहीनवारोहे॥सुंदरकहत
परमारथविचारेजब,मनमिटिजाइएकब्रह्मनिज,
सारोहैं॥२६॥ ॥इतिमनकोअंगसमाप्तः॥११
॥ ॥अथचाएककोअंगप्रारंभः॥ ॥छंदमनह
र॥ ॥जोईजोईछूटवेकोकरतउपायअग्य,सोई
सोईद्रुटकरबंधनपरतुहैं॥जोगजज्ञपतपतीरथ

(५२)

सुंदरविलास.

अं११

व्रतादिओर, ऊं पापातलेत जाई हीमाले गरत हैं ॥
कान हूं फराई पुनिकें सहूलु चाई अंग, विभूतिल
गाई शिरजटा ऊं धरतु हे ॥ विना ज्ञान पाए न हीं छु
दत हृदय ग्रंथी, सुंदर कहत यों ही भ्रम के मरतु हे
॥ १ ॥ ॥ सर्वलघु अक्षर ॥ जपत पकरत
धरत व्रत जत सत, मन च चक्रम भ्रम कष्ट सहत
तन ॥ बल कल वसन असन फल पत्र जल, कस
तरसन रसत जत वसत वन ॥ जरत मरत नर गरत
परत सर, कहत लहत यह गजदल बल धन ॥ प
चत पचत भव भय न टरत सठ, घट घट प्रगट रह-
त न लषत जन ॥ २ ॥ ॥ अंग्रे पूर्व वत् ॥
जोग करे जाग करे वेद विधि त्याग करे, जप करे त
प करे यों ही आसु पूटी हैं ॥ जप करे नेम करे तीर
थ ऊं व्रत करे, पुहमी अटन करे व्रथा स्वासतू-
टि हैं ॥ जीव को जतन करे मन में वासना धरे, पचि
पचि यों ही मेरे काल सिर पूटि हैं ॥ ओर हूँ अनेक
विधि कोटिक उपाय करे, सुंदर कहत विन ज्ञान न
हिं बूटि हैं ॥ ३ ॥ बुधी करि हीन नर जत मछायर
त्यो, वन वन फिरत उदास होइ घरतें ॥ कठनत प

स्याधरीमेघसीतधामसहे, कंदमूलषाईकोऊका
 मनाकेडरतें ॥ अतिहीअज्ञानओरविविधउपा-
 यकरे, निजरूपभूलिकेबंधनजाईपरतें ॥ सुंदरक
 हतऊंधीवोरकेसेदीषेसुषहाथमांझिंआरसीनके
 रेमूंदकरतें ॥ ४ ॥ मेघसहेसीतसहेसीसपर धाम
 सहे, कठिनतपस्याकरिकंदमूलषातहें ॥ जोगक
 रेजागकरेतीरथउद्यतकरे, पुन्यनानाविधकरेमन
 मेंसहातहें ॥ ओरदेवीदेवउपासनाअनेककरे,
 आपनीकीहोसकेसेंआकडोडेंजातहें ॥ सुंदरक
 हतरकरविकेप्रकासविनु, जेगनाकीजोतीक-
 हारजनीविलातहें ॥ ५ ॥ कोईफिरेनागोपायगुद
 रीबनायकरी, देहकीदिसादिषाईआईलोकधू-
 त्योहै ॥ कोईदूधाधारीहोईकोईफलाहारीहोई,
 कोईअधोमुषफूलीफूलिधूमछूट्योहै ॥ कोईन
 हींषायलोनकोईमुषगहेंमोन, सुंदरकहतयोही
 वृथाभूसकूट्योहें ॥ प्रभुसोंतोप्रीतिनाहींज्ञान
 सोपरीचेनाहीं, देषोभाईआंधरानेज्योंबजारलू-
 ट्योहै ॥ ६ ॥ ॥ छंदइंदव ॥ ॥ आसनमारि
 संवारिजटानष, उज्जलअंगविभूतिचढाई ॥

(५६)

सुंदरविलासः

अं॥

हमकोंकलुटेहिदयाकरि, घेरिरहेबहुलोगलु-
गार्ड ॥ कोउकउत्तमभोजनलावत, कोइकल्याव
तपानमिठाई ॥ सुंदरलेकरिजातभयोसय, मू
रखलोकनयासिधपाई ॥ ७ ॥ ऊरधपायअधोषु
षकैकरि, घूटतधूमहिदेहजुलावें ॥ मेघहूसीत
हूधामसहेसिर, तीनहुकालमहादुषपावे ॥ हाथ
कलनपरेकबहूकन, मूरषकूकसकूटिउडावे ॥ सुं
दरवैछेविषयसुषीकोघर, बूडतहेअरुजांऊए-
गावें ॥ ८ ॥ अहेहतज्यौंपुनिनेहतज्यौंपुनि, बेहलगा
इकेदेहसवारी ॥ मेघसहेशिरसीतसहेतनु, धूप
सहेजुपंचागनिवारी ॥ भूषसहेरहीरूपतरेपरसुं
दरदाससहेदुषभारी ॥ डासनछांडिकेकासनऊप
र, आसनमाखोपेंआसनमारी ॥ ९ ॥ जोकोऊक
ष्टकरेबहुभांतिनि, जातअज्ञाननहींमनकेरो ॥
ज्यौंतमपूरिरख्योघरभीतर, केसेहुदुरनहोयअं
धेंरो ॥ लाठिनिमारियेठेलिनिकारिये, औरउपा
यकरेबहुतेरो ॥ सुंदरसूरप्रकासभयोतबनोकि
तहूनहिंदविघेनेरो ॥ १० ॥ धारबख्योबडधारिलौ
जल, धारसख्योगिरिधारख्योहैं ॥ भारसख्यो

नभारथमेंकर, भारतखोशिरमारपस्योहैं ॥ भार
तप्योबहिमारगयोजम, मारदईमनतोनभस्योहैं
॥ सारतज्यौंषटसारपस्योकहि, सुंदरकारजकोन
सरयोहैं ॥ ११ ॥ कोउभयापयपानकरेनित, कोउक
षातहेअन्नअलोना ॥ कोउककष्टकरेनिसवासु
र, कोउकवैठिकेसाधतपोना ॥ कोउकवादविवादक
रेअति, कोउकधारिरहेसुषमोना ॥ सुंदरएकअज्ञान
गएबिनु, सिंघभयेनहिंदीसतकोना ॥ १२ ॥ ॥
सवैयाछंद ॥ ॥ कोउकअंगविभूतिलगावत, को
उकहोतनिराटदिगंबर ॥ कोउकसेतकषायकबोटत,
कोउककाथरंगेबहुअंबर ॥ कोउकबलकलसीसज
टानष, कोउकबोटतहेजुबगंबर, सुंदरएकअज्ञान
गएबिनु, ऐसबदीसतआहिअडंबर ॥ १३ ॥ ॥
छंदमनहर ॥ ॥ आपहीकेघटमाहींप्रगटपरमे-
श्वररहे ॥ ताईछोडीभूलेनरदूरदूरजातहैं ॥ कोईदो
रेद्वारिकाकोकेईकाशीजगन्नाथ, केईदोरेमथुरा
कोंहरिहारनाथहैं ॥ केईदोरेबदिकोविषमपहार
चंदे, केईलोकेदारजातमनमेंसहातहैं ॥ सुंदरक
हतगुरुदेवदेईदिव्यनेन, दूरहीकेदूरविननिकटदि

षातहें ॥१४॥ ॥छंदइंदव॥ ॥कोऊकजातप्रया
 गबनारस, कोऊगयाजगन्नाथहीधावे॥कोईमसु
 राबदरीहरिद्वारसु, कोऊगंगाकुरुषेत्रनाहावे॥
 कोऊकपुष्करक्षैपचतीर्थदोरेइदोरेजुहारिकाआवे
 ॥सुंदरविलगड्योघरमाहिसं, बाहिरदूंततवयों
 करिपावे ॥१५॥ आगेकछूनहीहाथपर्योपुन, पी
 छेविगारिगयोनिजभोना॥जौकोईकामनीकंत-
 हीमारचली, सगओरहीदेविसलोना॥सोडगयो
 तजिकेततकाल, कहेनबनेजुरहीसुषमोना॥तसे
 हीसुंदरज्ञानविनाघर, छांडभएनरभांडकेदोना॥
 १६॥ ज्योंकोउकोसकट्यौनहिंमारग, तेलिकलेघर
 मेंपसुजोए॥ज्योंबनियांगयौबीसकेतीसकों,
 बीसहूमेंदसहूनहिहोये॥ज्योंकोउचौवेछबेकों
 चल्योपुनि, होइदुबेदुइगांठकेषोये॥तेसेहीसं-
 दरओरक्रियासब, रामविनानिसचैनररोग॥१७
 ॥ज्योंकोउरामविनानरमूरष, ओरनिकेगुनजी
 भभनेंगी॥आनफियागडकेगडवापुनि, होतहें
 भेरकछूनबनेंगी॥ज्योंहथफेरिदियावतचावर,
 अंततोधूरीकीधूरिछिनेंगी॥सुंदरभूलभईअत

सेंकरि, सूतेकी भेरे सपडाई जनेंगी ॥ १८ ॥ होइ उदा
 सविचार विनानर, ये हतज्यौवन जाईरख्योहैं ॥ अं
 वरछां डिवद्यं वरले करि, केतपकोतन कष्टसख्योहैं
 ॥ आसनमारि सं आसनवै सुष, मोनगही मन-
 तोनखत्योहैं ॥ सुंदरकोनकुबुद्धि लगी कहि, या
 भवसागरमां हियख्योहैं ॥ १९ ॥ भेषधरयो परिभे
 दन जानत, भेदलहे बिनुषेदही पैहै ॥ भूषही भार
 तनींद निवारत, अन्नतजें फलपत्रनै पैहै ॥ और
 उपाय अनेक करे पुनि, ताही ते हाथ कछूनहिं ऐहै
 ॥ यानरदेह ब्रथाषट्षोवत, सुंदररामविना पछ
 तैहै ॥ २० ॥ आपनें आपनें थानसुकामस, राहन
 कोंसब मांति भलीहैं ॥ यज्ञव्रतादिक तीरथदान,
 पुरानकथाजु अनेक चलीहैं ॥ कोटिक और उपा-
 य जहां लग, ते सुनीकेनर बुद्धि छलीहैं ॥ सुंदर-
 ज्ञानविनानक हूं सुख, भूलनि कीबहु मांति गली
 हैं ॥ २१ ॥ कोउकचाहत पुत्रधनादिक, कोउकचा-
 हत बांजु जनायो ॥ कोउकचाहत धातुरसादिक,
 कोउकचाहत पारदषायो ॥ कोउकचाहत जंत्रनि
 मंत्रनि, कोउकचाहत रोगगमायो ॥ सुंदररामवि

नारसवहीभ्रम, देरचहुयाजगयोंडहकायों ॥२१॥
 काहेकोंतुंनरभेषबनावत, काहेकोंतुंदसहुदिसहु
 ले ॥ काहेकोंतुंतनकष्टकरेअति, काहेकोंतुंमुष
 तेंकहीफूले ॥ काहेकोंओरउपायकरेआव, आ
 नक्रियाकरकेमतभूले ॥ सुंदरएकभजेभगवंत-
 हि, तोस्वरवसागरमेंनितफूले ॥२३॥ ॥ इति
 चाणककोअंगसमाप्तः ॥१२॥ ॥ ॥
 अथविप्रीतज्ञानकोअंगप्रारंभः ॥ ॥ छंद
 मनहर ॥ ॥ एकब्रम्हसुषसोंबनायकरिकह
 लहें, अंतःकरणांतोविकारनसोंभर्योहै ॥ जेसे
 ठगगोबरकोकुंपोभरिरायतहें ॥ सेरपंचघृतलेके
 ऊपरज्योंकर्योहै, जेसेकोईमांडेमाहीप्याजकों-
 छिपायरारखें, चीथरांकपूरकोलेसुषबांधिधर्योहें
 ॥ सुंदरकहतऐसेजानीहैजगतमाहीं, तिनकोंतो
 देखीकरिमेरोमनडर्योहें ॥१॥ देहकोममत्वपुनीअ
 हसोंममत्वस्त, दारासोंममत्वमनमायामेंरहतु
 हैं ॥ थिरतानलहेंजेसेकंदुकचोगानमाहीं, कर्मनि
 केवसमाख्योधकाकोंबहतुहें ॥ अंतःकरनसदाज
 गतसोंरचिरत्यो, सुषसेबनायबातब्रह्मकीकहतु

हैं ॥ सुंदर अधिक मोहीयाही ते अंच भो आही, भूमी
परिपत्यो को उचंद को गहतु हैं ॥ २ ॥ सुषसों कहत जा
न भ्रमे मन इंद्रि प्रान, मारग के जल में न प्रति बिंबल
हिये ॥ गांठि मे न पैसा को उभयौर हे साहुकार, वात नि
में म हूर स्त पैया गनिल हीये ॥ स्वपने में पंचा मृत जी-
म के अपति भयो, जागे त मरत भूषण ईवे कों च हिये ॥
सुंदर सुभट जे से कायर मारत गाल, राजा भोज सम
क हांगों गोते लीक हीये ॥ ३ ॥ संसार के सुष नि सो
आसक्त अनेक विधि, इंद्रि हूलोल प मन क बहून म
त्यो हे ॥ कहत हे ए से मे तो एक ब्रह्म जानत हों, ताही
ते छोड़ी के सुभ कर्म नि को र त्यो हैं ॥ ब्रह्म की न प्राप्ति
मुनि कर्म सब छूट गये, दोउन ते अष्ट होई अध धि च
ब त्यो हे ॥ सुंदर कहत ताही त्यागिये स्वपच जे में, या
ही भांति ग्रंथ में व सिष्ठ जी हू कह त्यो हे ॥ ४ ॥ ज्ञानी की
सी बात कह मन तो मलीन रहे वासना अनेक भरी ने
क न निवारि हैं ॥ जे से कोऊ आभूषण अधिक बना
य राख्यो, काल ई उपर कर भीतर भंगारि हैं ॥ ज्यों द्वी-
म न आवे त्यो ही र वेल त नि संक्र होइ ॥ ज्ञान रुक नि सी
सलीयो ग्रंथ नि विचारि हैं ॥ सुंदर कहत वा के अटक

नकोउआही, जोईवासोमिलेजाईताहीकोंधिगा
 रिहें॥५॥ हंसस्येतबकस्येतदेपीयेसमानदोऊ, हं
 समोतिचूगेबकमछरीकोंषातहें॥ पिकअरुकाक
 दोउकेसेंकरिजानेजाई, पिकअंबडारिकाककरक-
 हिजातहें॥ सिधोंअरुफटिकपषानसमदेवीयत,
 वहतोकठोरवहीजलमेंसमातहें॥ सुंदरकहतजा
 नीबाहिरभीतरसुध, ताकीपटतरअोरवातनिकी
 वातहें॥६॥

॥ इतिविप्रीतज्ञानकोअंगसमा
 स ॥१३॥

॥ अथवचनविवेककोअंगप्रारंभः

॥ ॥ छदमनहरा ॥ जाकेघरताजितुरकिन
 कोंतवेलोंबांध्यो, ताकेआगेफेरीफेरीटटुवादिष
 ईयें॥ जाकेषासामलमलसाफनवेदेरपडे, ताके
 गेआनीकरिचोषईरसाईयें॥ जाकेपंचासृतषात
 षातसबदिनबीते, सुंदरकहतताहीराबरीमेंषाईये
 ॥ चतुरप्रवीनआगेमूरषउचारकरे, सरजकेआगे
 जैसेजंगनांदिषाईयें॥१॥ एकवाणीरूपचंतभूषन
 बसचअंग, अधिकविराजमानकहीयतऐसीहैं ॥
 एकवाणीफाटेदूटेअंबरउडाएआनी, ताहूमांहींवि
 परीतसुनीयतऐसीहैं॥ एकवाणीमृतकसीबहूत

सिंगारकिये लोकनीकोंनीकीलगेसंतनिकोंभैसीहैं॥
 सुंदरकहतवाणीत्रिविधजगतमांहीं,जानेकोईचतु
 रप्रवीनजाकीजैसीहैं॥२॥ राजाकोकुंअरजोस्वरू
 पकोकुस्तपहोई,ताकोतोसिलामकरिगोदलेषिला
 इये॥ औरकोऊरैतकोस्वरूपहोइसोभनीक,ताहू
 कोंतोदेविकरिनिकटबुलाईए॥ काहूकोकस्तप-
 कारोकूचरोव्हेअंगहीन,वाकीबोरदेवीदेवीमाथो
 ईहलाइए॥ सुंदरकहतवाकेबापहीकोप्यारोहोई
 योहीजानीबानीकोविवेकऐसेपाइये॥३॥ बोली
 येतोतबजबबोलवेकीसुधहोई,नतोमुषमोनक
 रिचुपहोइरहीयें॥ जोरीयेतोतबजबजोरबोउजा
 नीपरे,तुकछंदअरथअनुपजामेंलहीये॥ गाइ
 येतोतबजबगाइवेकोंकंठहोई,अवनकेसुनतही
 मनजाईगहीये॥ तुकभंगछंदभंगअरथमिलेनक
 छू,सुंदरकहतऐसीबानीनहींकहीयें॥४॥ एकन
 केवचनसुनतअतिस्वरवहोई,फूलसेंजरतहेंअ
 धिकमनभावनें॥ एकनिकेवचनतोअसीमानोव
 रषत,अवनकेसुनतलगतअलपावनें॥ एकनि
 केवचनकटुकटुविषरूप,करतमरमछेददुषउप

जावने, सुंदर कहत घटघटमें वचन भेद, उत्तम मध्यम अरु अधम सह्यावने ॥ ५ ॥ काक अरु रास भालुक जब बोलत हैं, तिन के तो वचन सह्यात कही कानकों ॥ को किलारु सारि पुन सूबा जब बोलत हैं, सब को उकान दे सकन तरवरो नकों ॥ ताही तें सक वचन विवेक करी बोली यजु यों ही आक वाक वक्ति तोरिये न पो नकों, सुंदर सम ऊए से वचन उचार करो, नही तो समुजि करि बैठा गहि मो नकों ॥ ६ ॥ प्रथम ही ये विचार दी मसों न दी जे डार, ताही तें सक वचन संभारि करि बोलिये ॥ जाने न कहूं हेत भावते सी कही देत, कही ये सकत जब मन माही तों लीये ॥ सब ही को न्यागे दुष कोऊ नही पावे सरव, बोली के ब्रथा ही ता तें छाती नही छोलीये ॥ सुंदर सम ऊकरि कही ये सरस बात, तब ही तो वचन कपाट गही षोलीये ॥ ७ ॥ और तो वचन ए से बोलत हे पसु जे से, तिन के तो बोलवे में दंग हू न कहें ॥ कोऊ राति दिव सब कत ही रहत ऐ से, जे सि विधि कूप में वक्त मानो भे कहें ॥ विविध प्रकार करि बोलत जगत सब, घटघट प्रति मुष वचन अने कहें ॥ सुंदर कहत ता तें वचन विचार लेहू, वचन ताव हे जा में पाइये वि

वेकहें ॥८॥ जेसेहंसनीरकोतजतहेअसारजानि, पा
 रजानीषिरकोनिरालोकरिपीजिये ॥ जेसेदधिमथत-
 मथतकाटिलेतघृत, ओररहीपहीसबछांछछांडीदी
 जिये ॥ जेसेमधमक्षिकासुवासकोंभ्रमरलेत, तेसे
 हीविचारकरिभिन्नभिन्नकीजिये ॥ सुंदरकहतताते
 वचनअनेकभांति, वचनमेंवचनविवेककरिलीजिये
 ॥९॥ प्रथमहीगुरुदेवमुषतेउचारकस्यौ, वेईतोवचन
 आयलगेनिजहीयेहें ॥ तिनकोविवेककरिअंतःकर
 नमांहीं, अतिहिअमोलनगभिन्नभिन्नकीयेहें ॥ आ
 पकोदरिद्वगयोपरउपगारहेत, नगहीनिगलिकेउगलि
 नगलीयेहें ॥ सुंदरकहतयहवाणीयांप्रगटभई, ओ
 रकोईसुनकरिरंकजीवजीयेहें ॥१०॥ वचनतेंदूरमिले
 वचनविरोधहोई, वचनतेंरागवदेवचनतेंदोषजु ॥ व
 चनतेंज्वालउदेवचनसीतलहोई, वचनतेंसुदितवच
 नहीतेंरोषजु ॥ वचनतेंप्यारोलगेवचनतेंदूरभगे, वच
 नतेंसुरजाईवचनतेंषोषजु ॥ सुंदरकहतयहवचन
 कोभेदएसो, वचनतेंबंधहोतवचनतेंसोषजु ॥११॥
 वचनतेंगुरुशिषबापपूतप्यारोहोई, वचनतेंबहुविध
 होतउतयातहें ॥ वचनतेंनारीआरुपुरुषसनेहअ

ति, वचनतेंदोऊअपआपमेरीसातहें ॥ वचनतेंसब
 आईराजाकेहजूरहोई ॥ वचनतेंचाकरउछोडीफेप-
 लातहें ॥ सुंदरसुवचनसुनतअतिस्फुषहोई ॥ कुव
 चनसुनतहीपीतिघटिजातहें ॥ १२ ॥ एकतोवचन
 सुनकर्महीमेंवहीजाय, करतबहुतविधिस्वर्गकीउ
 मेदहें ॥ एकहीवचनदृढईश्वरउपासनाकेतिनमेंतो
 सकलहीवासनाकोछेदहे ॥ एकहीवचनतामेंएकही
 अखंडब्रह्म, सुंदरकहतयोंचतावेअंतवेदहें ॥ वच
 नतोअनेकप्रकारसबदेखियत, वचनविवेककीये-
 वचनमेंभेदहें ॥ १३ ॥ वचनतेंजोगकरेवचनतेंजज्ञक
 रे, वचनतेंतपकरिदेहकोदहतुहें ॥ वचनतेबंधनक
 रतहेंअनेकविध, वचनतेंत्यागकरिवचनरहतुहें ॥
 वचनतेंउरजारुस्फुरेवचनहूतें, वचनतेंभांतिभां-
 तिसंकटसहतुहें ॥ वचनतेंजीवभयोवचनतेंशीव
 होई, सुंदरवचनभेदवेदयोंकहतुहें ॥ १४ ॥ ॥
 इतिवचनविवेककोअंगसमाप्तः ॥ १४ ॥ ॥
 अथनिर्गुणउपासनाकोअंगप्रारंभः ॥ ॥
 छंदइंदव ॥ ॥ ब्रह्मकुलालरचेबहुभाजन, कर्म
 निकेवसमोहनिभावे ॥ विष्णुहीसंकटआयसहे

ग्रभ, काहू कोरक्षक काहू को संतावे ॥ संकरभूत-
 पिप्साचनिके पति, पानी कया ल लीये विललावे,
 याही ते संदरतिरगुन त्यागसु, निर्मल एक निरं-
 जन ध्यावें ॥ १ ॥ कोटिकवात बनाय कहें कहा, हो
 त भये सब ही मन रंजन ॥ शास्त्र समृतिरु वेद पु-
 रान, वषान तहें अतिलाय के अंजन ॥ पानी में
 बूडत पानी गहे कत, पार पहुंचत हे मति भंजन ॥
 सुंदरत हां लगे अंधे की जे वरै जो लो न धाई ए-
 न्येक निरंजन ॥ २ ॥ मंजन सो जो मनोमल मंजन,
 सज्जन सो जो कहै गति गूजे ॥ गंजन सो जो इंद्रि-
 है गंजन, रंजन सो जो बुझावें रु वूजे ॥ भाजन सो जो
 भरे रस मांही, विद्वज्जन सो कित हू न अरूजे ॥ व्यं-
 जन सो जो बंद रुच सुंदर, अंजन सो जो निरंजन सू-
 जे ॥ ३ ॥ जो प्रभु ते उत पति भई यह, सो प्रभु हे उर ई-
 छह मारे ॥ जो प्रभु हैं सब के शिर ऊपर, ता प्रभु को न-
 सिर ही हम धारे ॥ रूप अने रेख अलंष अर वंडित
 भिन्न रहे सब कारज सारे ॥ नाम निरंजन हैं तिन के
 पुन, सुंदरता प्रभु की बलि हारे ॥ ४ ॥ जो उपजे वि-
 न से गुन धारत, सो यह जानहुं अंजन माया ॥ आ

वनजायमरेनहिजीवन, अच्युतएकनिरंजनराया
 ॥ ज्योतिरतत्परहेरसएकहि, आवनजातफिरेयहा
 छाया ॥ सोपरब्रह्मसदाशिरऊपर, सुंदरताप्रभु-
 सोमनलाया ॥ ५ ॥ जोउपज्यौकछुआइजहांल
 ग, सोसबनासनिरंतरहोई रूपधर्योस्फरहेनहि
 निश्चल, तीनहीलोकगिऐकहोकोई ॥ राजसता
 मससात्विकजैगुन, देपतकालप्रसेपुनबोई ॥ आ
 पहीएकरहेजुनिरंजन, सुंदरकेमनमानतसोई
 ॥ ६ ॥ देवनिंकेशिरदेवविराजित, ईश्वरकेशिरई
 श्वरकहीये ॥ लालनिंकेशिरलालनिरंतर, पूव-
 निंकेशिरपूबहितहिये ॥ पाकनिंकेशिरपाकसि
 रोमनि, देसविचारउहेद्वंद्वगहिये ॥ सुंदरएकस
 दाशिरऊपर, ओरकछूंहमकोनहिंचहिये ॥ ७ ॥
 सेसमहेसगनेसजहालग, विष्णुविरंचिहूकेशि
 रस्वामी ॥ व्यापकब्रह्मअषडअनाद्यत, बाहिरभी
 तरअंतरजामी ॥ योनरछोरअनंतकहेगुन, आ
 हीतेसुंदरहेयननामी ॥ एसोप्रभुजिनकेशिरऊ
 पर, क्यौपरिहेतिनकोकहिषामी ॥ ८ ॥
 इतिनिर्गुनउपासनाकोअंगसमाप्तः ॥

१५॥

॥ अथपतिव्रताकोअंगप्रारंभः॥

॥ छंदइंदव ॥ ॥ आनकीघोरनिहारतही
 जैसें, जातपतिव्रतएकव्रतीको ॥ होतअनादर
 एसीहीभांतिजु, पीछेफिरेनहिंसूरसतीको ॥ ने
 कहीमेंहरबोहोइजात, धिसेअधविंदुजोजोग-
 जतीको ॥ रामहृदेतेंगएजनसुंदर, एकरतीधि
 नपावरतीको ॥ १॥ जोहरिकोंतजिआनउपास
 त, सोमतिमंदजतीनहिंहोई ॥ जोअपनेभरतार
 हिछांडे, भईविभचारनिकामनिकोई ॥ सुंदरता
 हिनआदरमान, फिरेविमुषीअपनीपतबोई ॥
 बूडिमरेकिनकूपमजार, कहाजगजीवतहेसठ
 सोई ॥ २॥ होइअनन्यभजेभगवंतहि, ओरकछू
 उरमेंनहिंराखे ॥ देवीरुदेवजहांलगहेडर, केतिन
 सोंचहीदीननभाषे ॥ जोगहूजज्ञवनादिक्रियाति
 न, कोतोनहींस्वपनेअभिलाषे ॥ सुंदरअमृतपा
 नकियोतव, तोकहीकोनहलाहलचाषे ॥ ३॥ ए
 कसहीसबकेउरअंतर, ताप्रभुकोकहीकाहीनगा-
 ये ॥ संकटसांहिसहायकरेपुन, सोअपनेपतिक्यों
 विसरावे ॥ चारपदारथओरजहांलग, आठउसि

द्विनवेनिधयाये ॥ सुंदरछारपरोतिनकेसुष, जोह
 रिकोंतजिआनकोंध्याये ॥ ५ ॥ पूरनकामसदास
 षधामनि, रंजनरामसिरज्जनहारो ॥ सेवकहोइर
 त्थोसबकोनित, कीटहिकुंजरदेतअहारो ॥ भंजन
 दुःखदरिद्रनिवारन चिंतकरेपुनसांजनिवारो ॥ ए
 संप्रभुतजिआनउपासत, सुंदरहेतिनकोसुषकारो
 ॥ ५ ॥ ॥ छंदमनहरा ॥ ॥ पतिहिसोंप्रेमहोईपति
 हीसोंनेमहोई, पतिहिसोंषेमहोईपतिहिसोंरतहें ॥
 पतिहीहेजज्ञजोगपतिहीहेरसभोग, पतिहीसोंमि
 टेसोगपतिहीकोजतहें ॥ पतिहीहेज्ञानध्यानपति
 हीहेपुन्यदान ॥ पतिहीहेतीरथस्नानपतिहीकोम
 तहें ॥ पतिविनुपतनाहीपतिविनगतिनाही, सुंदर
 सकलविधिएकपतिव्रतहें ॥ ६ ॥ जलकोसनेहीमी
 नविछुरतजेमान, मनीविनअहीजेसेजीवतनलही
 यें ॥ स्यातबिंदुकेसनेहीप्रगटजगमाही, एकसीप
 दुसरोसुचातकउकहीयें ॥ रविकोसनेहीपुनिकम-
 लसरोचरमें, ससीकोसनेहीउचकोरजेसेरहीये ॥ ते
 सेहीसुंदरएकप्रभुसोंसनेहजोर, औरकछूदेवी-
 काहूवोगनहीचहीयें ॥ ७ ॥ ॥ इतिपतिव्रताको

अंगसमाप्त ॥१६॥ ॥ अथ विरह उराहने
 कौ अंग प्रारंभः ॥ ॥ छंद मनहर ॥ ॥
 पीयको अंदे सो भारी तो सो कहों सकन प्यारी, यारी
 तो रोग एसो तो अजहून आये हैं ॥ मेरे तो जीवन
 प्राननिस दिन उहे ध्यान, सुष सोन कहो आननेन
 उर लाए हैं ॥ जब ते गए विछोह कलन परत मोही ता
 ते, हूं पूछत तो ही किन विरमाये हैं ॥ सुंदर विरहनी
 को सोच सषी वार वार, हम सो विसार अब कोन के
 कहाये हैं ॥ १ ॥ हम को तोरे न दिन संकमन माहिं र
 हे, उन को तो बातनि में ठीक उन पाईये ॥ कब हूं सं
 देसा सुनि अधिक उछाह होई, कब हूं करोई रोई आ
 सकनी वहाईये ॥ ओर निकेर सब सहोई रहे प्यारे
 लाल, आवनिकी कही कही हम को सकनाइये ॥ सु
 दर कहत ताहीं काठी ये सक कोन भांति, जोई तरु
 आपने सह्य ते लगाईये ॥ २ ॥ सो सो कहें ओर
 सी ही बांस कहें ओर सी ही ॥ जा को कहें ता ही की
 प्रतीत के से होत हैं ॥ काहू को समास करे काहू सो
 उदास फिरे, काहू सो तोर सब र एक में कपोत हैं ॥
 दगा बाजी दुबधा तो मन की नदूर होई, काहू के अ

धेरांधरकाहूकेउद्योतहे॥ सुंदरकहतजाकेपीर-
 सोकरेपुकार, जाकेदुपदूरगयोताकोभईयोतहें
 ॥३॥ हीयेओरजीयेओरलीयेओरदीयेओर,
 कीयेओरकोनसूंअनुपपाटीपढेहें॥ सुयओर
 बेनओरनेनओरतनओर, मनओरकाचासब
 जंत्रमाहींकढेहें॥ हाथओरपांवओरसीसहूअ-
 वनओर, नवशिषरोमरोममलईसोंमढेहें॥ ए
 सीतोकठोरतानसुनिनहींदेवीजग, सुंदरकह
 तकांडब्रजहीकेघढेहें॥ ४॥

॥ इतिविर

हउराहनकोंअंगसमाप्तः॥ १७॥

॥ ॥

अथशब्दसारकोअंगप्रारंभः॥

॥ छंदम

नहर॥

॥ भूल्यौफिरेभ्रमतेंकहतकछूओ

रओरकरतनतापदूरिकरतसंतापकों॥ दक्षभ

ओरहेपुनीदक्षप्रजापतिजेसें, देतपरदछनान

दिक्षादेतआपकों॥ सुंदरकहतएसेजामेंनजुग

तिकछू॥ ओरजापजपनेनपतनिजजापकों॥

बालभयोज्वानभयोवयवीतेवृधमयो, वपुस्तप

होईकविररीगयोआपकों॥ १॥

॥ छंदइंदव

॥ पानवहेजूपीटूषपीवेनित, दानवहेजुदलिद्रकों

भाने, कानउहेसुनीये जसकेसव, मानउहेकरी
 येसनमाने ॥ तानउहेसरतानरिजावत, जानउहे
 जगदीसहीजामेगे ॥ बानउहेमनवेधतसुंदर, जा
 नउहेउपजेनअज्ञाने ॥ २ ॥ सूरउहेमनकोवसराष
 त, कूरउहेमनमोहिलजेहे ॥ त्यागउहेअनुराग
 नहीकहू, भागवहेमनमोहतजेहे ॥ तशचहेनिज
 तत्वहीजानत, जशचहेजगदीसजजेहे ॥ रक्तउहे
 हरिसौरतसुंदर, भक्तउहेभगवंतभजेहे ॥ ३ ॥ -
 चापउहेकसिरेरिपुऊपर, दापउहेदलकारहीमारे
 ॥ छापउहेहरिआपदइशिर, थापउहेअपिआंग
 नधारे ॥ जापउहेजपियेअजयानित, व्यापउहे
 निजव्यापविचारे ॥ बापउहेसबकोप्रभुसुंदर, पा
 पहरेअरुतापनिचारे ॥ ४ ॥ भोनउहेभयनाहिन
 जामहि, गोअनउहेफिरहोइनगोना ॥ बैनउहेबिस
 रेविषआरस, रोअनउहेप्रभुसौअहिरोना ॥ मोअनउ-
 हेजुलीयहरिबोलत, लोनउहेसबआंगअलाना
 सोअनउहेगुरुसंतमिलेजब, रुंदरशंकहैनहिं-
 कोना ॥ ५ ॥ कारउहेअविकारहेनित, मारउहेजु
 असारहीनाषे ॥ प्रीअनउहेजुप्रतीतधरेउ, नीअनउ

हेजुअनीतनभाषें ॥ तंतउहेलुगिअंतनदूदत, संत
 उहेअपनोसतराषें ॥ नादउहेसुनिबादतजेसब,
 स्वादउहेरससुंदरचाषें ॥ ६ ॥ स्वासउहेजुउश्वासन
 छांडत, नासउहेफिरिहोइननासा ॥ पासउहेसत
 पासलगेजम, पासकटेप्रभुकेनितपासा ॥ बास
 उहेग्रहबासतजेबन, वाससहीतिहीठोरहवासा
 ॥ दासउहेजुउदासरहेहरि, दाससदाकहिसुंदर-
 दासा ॥ ७ ॥ ओअउहेश्रुतिसारसुनेअरु, नयन
 उहेनिजरूपनिहारे ॥ नाकउहेहरिनाकहिराषत
 जीभउहेजगदीसउचारे ॥ हाथउहेकरियेहरिको
 ऋत, पांवउहेप्रभुकोपंथधारे ॥ सीसउहेकरिस्था
 मसमर्पन, सुंदरयोसबकारजसारे ॥ ८ ॥ सोवत
 सोवतसोइगयोसठ, रोवतरोवतकैबिररोयो ॥ गो
 वतगोवतगोईधर्यौधन, घोवतघोवततेंसबपो-
 यो ॥ जोवतजोवतवीतगयेदिन, बोवतबोवततें
 विषबोयो ॥ सुंदरसुंदररामभज्यौनहिं, दोवतदो
 वतबोऊहिदोयो ॥ ९ ॥ देषतदेषतदेषतमारग,
 बूऊतबूऊतबूऊतआयो ॥ सूऊतसूऊतसूऊप
 रिसव, गावतगावतगोधिंदगायो ॥ सोधतसोध

तसकृद्भयोपुनि, तावततावतकंचनतायो ॥ जा
गतजागतजागपत्योजव, रुंदररुंदररुंदरपायो

॥ १० ॥ ॥ इतिशब्दसारकोअंगसमाप्तः ॥

॥ १८ ॥ ॥ अथभक्तिज्ञानमिश्रितको
अंगप्रारंभः ॥ ॥ छंदइंदव ॥ ॥ बैठ

तरामहिऊठतरामहि, बोलतरामहीरामरत्योहें

॥ जीमतरामहीपीवतरामही, धामहीरामहीराम

गत्योहें ॥ जागतरामहीसोवतरामही, जोवनरा-

महीरामरत्योहें, देतहुरामहीलेतहुरामही, रुंदर

रामहीरामरत्योहें ॥ १ ॥ ओत्रहुरामहीनेत्रहुराम

ही, वक्रहुरामहीरामहिगाजें ॥ सीसहुरामहीहा

थहुरामही, पावहुरामहीरामहीछाजें ॥ पेटहुरा

महीपीठहुरामही, रोमहुरामहीरामहीवाजें ॥ अं

तररामनिरंतररामही, सुंदररामहिरामविराजें ॥ २

॥ भोमीहुरामहीआपहुरामही, तेजहुरामहीवा

युहीरामें ॥ व्योमहुरामहीचंद्रहुरामही, सूरहुरा

महीसीतहीधामें ॥ आदिहुरामहीअंतहुरामही

मध्यहीरामहीपुर्वनवामें ॥ आजहुरामहीकाल

हुरामही, रुंदररामहीरामहीधामें ॥ ३ ॥ देषह

रामअदेवहूरामही, लेवहूरामअलेवहूरामें ॥ एक
 हूरामअनेकहूरामही, शेवहूरामअशेवहूरामें ॥
 मोनहूरामअमोनहूरामही, गोतहूरामहीवामकु
 ठामें ॥ बाहिररामहीभीतररामही, सुंदररामहीहे
 जगजामें ॥ ४ ॥ दूरहूरामनिजीकहूरामही, देसहूरा
 मअदेसहूरामें ॥ पूरबरामहीपछिमरामहि, छंद
 नरामहिउत्तरधामें ॥ आगेहूरामहीपीछेहूरामही
 व्यापकरामहिहेबनघामें ॥ सुंदररामदसोदिसपू
 रबस्वर्गहूरामपतालहूरामें ॥ ५ ॥ आपहूरामउपा
 पतरामही, भंजनरामसंवारनघामें ॥ द्रष्टृहूरामअ
 दृष्टहूरामही, इष्टहूरामकरेसबकामें ॥ वर्णहूराम
 अवर्णहूरामही, रक्तनपीतनस्वेतनस्यामें ॥ सुन्य
 हूरामअसून्यहूरामही, सुंदररामहीनामअनामें
 ॥ ६ ॥ ॥ इति श्री भक्तिजानमिश्रितकोअंग

समासः ॥ १९ ॥

॥ अथविपर्जयश

ब्दकोअंगप्रारंभः ॥

॥ छंदसवैय्या ॥ ॥

अवनहुदेविस्फुनेपुनिनेनहु, जिह्वासंघेनाशिक
 बोले ॥ गुदापायइंद्रीजलपीवै, विनहीहाथसमेर
 हितोले ॥ उंचेपांवमुंडिनीचेकुंतीनलोकमेंविचर

तडोले ॥ संदरदासकहेसकनजानी, भलेभांतियाअ
 र्थहिषोले ॥ १ ॥ अंधातीनलोककूंदेधै, बेरासकनैब
 हुतविधनाद, ॥ नकटावासकमलकीलेवे, गुंगाक
 रेबहुतसंवाद ॥ दूठांपकरिउठावेपरबत, पंगुलकरे
 निरतअहलाद ॥ जोकोउवाकोअर्थविचारे, संद
 रसोईयावेस्वाद ॥ २ ॥ कुंजरकौंकिरीगिलबैठी, सिं
 घहिषायअधानोंस्याल, मछरीअग्निमांहिसकष
 पायो, जलमेंबहोतिहोतिबेहाल ॥ पंगुचढ्योपरब
 तकेऊपरि, मृत्युहिदेविडरानोकाल ॥ जाकोअनुभ
 वहोयसकजानें, संदरएसाउलटाव्याल ॥ ३ ॥ बुंदहि
 मांहिसमुद्रसमानो, राईमांहिसमानोसेर ॥ पानी
 मांहितुंबकाबूडी, पाहनतरतनलागीबेर ॥ तीनलो
 कमेंभयातमासा, सूरजकियोसकलअंधेर ॥ सूर
 षहोयसोअर्थहिपावे, संदरकहेसबदमेंफेर ॥
 ४ ॥ मछरीबगुलाकूंगहिषायो, मूसेंपायोकारोसां
 प ॥ सवेपकरिबिलाईषाई, ताकेमुवेगयोसंताप-
 ॥ बेटीअपनीमइयांषाई, बेटेअपनोषायोबाप, सुं
 दरकहेसकनोहोसंता, तिनकोकोउनलाग्योपाप ॥
 ५ ॥ देवमाहितेंदेवलप्रगट्यो, देवलमाहिप्रगट्यो-

देव ॥ शिष्यगुस्तु उपदेसन लाग्यो, राजाकरे रंककी
 सेव ॥ बंध्या पुत्र पंगु इक जायो, ताको घर षोषन
 कीटेव ॥ सुंदर कहत सो पंडित गया ता, जो को उया
 को जाने भेव ॥ ६ ॥ कमल माहितें पानी उपज्यो, पा
 नि मां हितें नीप ज्यो सूर ॥ सूर माहि सितल ता उप
 जी, सीतलता में सुष भर पूर ॥ ता सुष को क्षय होइ
 न कबहू, सदा एकर सनिकट न दूर ॥ सुंदर कहत स-
 ल्य चह्यो ही, यामें रति न जानहू कूर ॥ ७ ॥ हंस चढो
 ब्रह्मा के ऊपर, गरुड चढ्यो पुनि हरिकी पीठ ॥ बैल
 चढ्यो हे शिव के ऊपर, सोहम दीठो अपनी दीठ, दे
 व चढ्यो पातिका के ऊपर, जर्ष चढो डाकन के पीठ ॥ सुं
 दर एक अचंभा हूवा, पानी मां हि जरे अंगीठ ॥ ८ ॥
 ॥ कपरा धो बिकुग ही धोवे, माटि पकरै घडै कुंभार
 ॥ सुइ बिचारि दरजिहि सीवे, सो नातावे पकर सो ना
 र ॥ लकरी चढही कुंगहि छीले, पालसु बैठी धमेडु
 हार ॥ सुंदर दास कहै सन जानी, जे को ईया को क
 रे विचार ॥ ९ ॥ जा घर माहि बहुत सुष पायो, ताघ
 र मां हि बसे अव कोन ॥ लागी सबै मिठाई बारी, मी-
 ठो लागो एक वहे लौन ॥ परबत उडेरुई धिर बैठी, ऐ

सोकोइकबज्यौपौन ॥ सुंदरकहेनमानोकोई, तातेप
 करिरहीयेमोना ॥ १० ॥ रजनीमांहिदिवसहमदेख्यो,
 दिवसमांहिदेवीहमरात ॥ तेलभख्योसंपूरनतामें,
 दिपकजरैजरैनहिंवात ॥ पुरुषएकपानीमंहिप्रगत्यो
 तानुगराकीकैसीजात ॥ सुंदरकोइलहैअर्थको,
 जोनितकरैपराईतात ॥ ११ ॥ उमग्यौमेघबख्योचहुं
 दिससौं, वरषनलग्योअबंडितधार ॥ बूझ्योमेरुन
 दीसबसूकी, उरलाग्योनिसदिनएकतार ॥ कांसो
 पख्योबिजलीऊपर, कियोसकलकुटुंबसंहार ॥ सुंद
 रअर्थअनोपमयाको, पंडितहोयसोकरेबिचार ॥
 १२ ॥ वाडीमांहीमालीनियज्यो, हालीमाहीनियज्यो
 बेत ॥ हंसहिउलटीस्यामरंगलाग्यो, भ्रमरउलटिक
 रिहुवोस्वेत ॥ ससियरउलटिराहुकोंग्रास्यो, स्तरज
 उलटकरिग्रास्योकेत ॥ सुंदरसुगराकोंतजिभाग्यो
 तुगरासेतीबांध्योहेत ॥ १३ ॥ अगनीमथनकरिल
 करीकाटी सोबहलकरीप्रानआधार ॥ पानीमथि
 करिघीवनीकाख्यो, सोधृतषायोवारमवार ॥ दूधद
 धीकीइछाभागी, जाकोमथतसकलसंसार ॥ सुंद
 रअबनोभयेसुखारे, चिंतारहीनएकलगार ॥ १४ ॥

पात्रमांहिजोलीगहिराषे, जोगीभिस्सामांगनजाई
 ॥ जागैजगतसोवहीगोरव, एधासव्वसुनावेआई ॥
 भीष्याफिरेबहुतकरिताके, सोवहिभीष्याचेलपा
 ई ॥ सुंदरजोगीजुगजुगजीवै ताअवधूतकीदूरवला
 ई ॥ १५ ॥ परधनहरेकरेपरनिंदा, परतिचकोरापेघर
 मांहीं ॥ मांसपाचमदिरापुनिपीचै, ताहिमुक्तिकोसं
 सेनाहीं ॥ अकर्मगहैकर्मसबत्यागे, ताकीसंगतपाप
 नसांहीं ॥ एसीकरेसोसंतकहावै, सुंदरअोरउपजि
 मरिजाहीं ॥ १६ ॥ निरदईहोइतिरैपसुधातिक, दयावं
 तबूडैभवमांहीं ॥ लोभीलगैसबनकुं प्यारो, निरलोभी
 कोठोहरनाहीं ॥ मिथ्यावादिमिलैग्रहहूंक, सत्यकहैते
 जमपुरजांहीं ॥ सुंदरधूपमांहिसीतलता, जरतरहेसो
 बैठैछांहीं ॥ १७ ॥ बढईचरपाभलोसंवाख्यो, फिरनेला
 ग्योनीकीभांत, ॥ बहूसासुकोकहीसमजावे, तूंमेरेदि
 गवैठीकात ॥ ताकोतारनहूटेकबहू, पूनिघटेनहोदि
 नरात ॥ सुंदरविधिसंबनेजुलाहा, साषानिपजेउंची
 जात ॥ १८ ॥ मायबापतजधीउमडानी, हरषतचलीप
 समकेपास ॥ बहूविचारिवडिचगतावर, जाकेकहेच
 लतहैसास ॥ भाईषरोभलोहितकारी, सबकुटुंबको-

कीनोनास ॥ ऐसीविधिघरबस्योहमारो, कहसमजा
 वैसुंदरदास ॥ १९ ॥ घरघरफिरैकुवारिकन्या, जने
 जनेसुंकरतीसंग ॥ बैस्यासोतोभईपतिव्रता, एकपु
 रुषकेलागीअंग ॥ कलजुगमांहींसतजुगथाप्यो,
 पापीउदयधरमकोभंग ॥ सुंदरकहतअरथसोंपा
 वै, जोनीकेकरितजेअनंग ॥ २० ॥ विप्ररसोईकरनेला
 ग्यो, चोकाभीतरबैठोआई ॥ लकरीमाहीचूलादीया
 रोरीऊपरतवाचढाई ॥ पिचरीमाहींहंडियांरांधी, साल
 नआकधतुराषाई ॥ सुंदरजीमतअनिसकपपायो,
 अबकेभोजनकियोअघाई ॥ २१ ॥ बैलउलटनाइककुं
 लाद्यो, वस्तुमांहिंभरिगूनअपार ॥ भांतिभांतिकोसौ
 दाकियो, आद्यदिसांतरयासंसार ॥ नायकनीपुनि
 हरयतडोलै, मोहिमिल्यौनीकोभरथार ॥ पुंजीजाय
 साहकौंसोंपी, सुंदरसिरतेंडास्यौभार ॥ २२ ॥ वनियां
 एकवनजकुंआयो, परेताचराभारीभैठ, भलीवस्तु
 कछुलीनीदीनी, षेचगठरियांबांधीऐठ ॥ सोदाकी-
 योचलेपुनिघरकुं, लेषाकीयांबरितरेबैठ ॥ सुंदरसा
 हसर्षाअतिहूचा, बैलगयोपुंजीमेंपैठ ॥ २३ ॥ पैहेरा
 इतधरधुस्योसाहको, रक्षाकरनेलाग्योचोर ॥ कोत-

बालकाढोकरिबांध्यो, सूजेनहिंसांजअरुभोर॥ राजा
 गामछोडकेभाग्यो, हुवोसकलजगतमैसोर॥ परजा
 सखीभईनगरीमें, सुंदरकोईजुलमनजोर॥ २४॥ रा
 जाफिरैबिपतकोमाख्यो, घरघरदुकडामागैभीष॥
 पांवपियादेनिसदिनडोलै, घोडाचालिसकैनहिभी
 ष॥ आकअरंडकिलकरीचूषे, छांडेबहुतरसभेईष
 ॥ सुंदरकोउजगतमेंविरलौ, यामूरषकौलावैसीष॥
 २५॥ पानीजरेधुकारेनिसदिन, ताकोअग्निबुजावै-
 आई॥ हूंसीतलतूंतपतभयाक्यों, वारंवारकहेसमु
 जाई

ई॥ मेरीलपटतोहिजोलांगे, तोतुभीसीतलहोइजा
 ई॥ कबहूंजरनिफेरिनहिउपजे, सुंदरसखभेरेहैस
 माई॥ २६॥ षसमयस्थोजोस्तकेपीछे, कत्योनमाने
 भुंड़ीरांड॥ जिततितफिरेभटकतीयोंही, तेतोफियो
 जगतमेंभांड॥ तोहूंभूषनभागीतेरी, तूंगिलवैठीसा
 रीमांड॥ सुंदरकहैसीषसनमोरी, अवतूंघरघरफि
 रवोछांड॥ २७॥ पंथीमांहिपंथचलिआयो, सोवह
 पंथलव्योनहिंजाई॥ वाहीपंथचल्योउठपंथी, निर
 भैदेसपहुंचौआई॥ तहांदुकालपरेनहिंकबहूं, सदा

सुमिसरत्योदहराई ॥ सुंदरदुर्धानकोऊदीपै,
 अक्षयसुखमें रहै समाई ॥ २८ ॥ एकअहेरीबन
 में आयो, खेलन लाग्यो भली सिकार ॥ करमेध-
 नुषकमरमें तरकस, सावजचेरेवारंवार ॥ सारो
 सिंघ व्याध पुनि माख्यो, मारीबहुरि मृगनि कीडा
 रा ॥ ऐसे सकल मारि धर लायो, सुंदर राजहि कि
 योजुहार ॥ २९ ॥ सुककेचन अमृतमइ ऐसे,
 कोकिलधार रहै मनमाही ॥ सारो सुने भागवत
 कबहूँ, सारसतौ उपजानै नाहीं ॥ हंस तुगे सुगता
 फल अर्थहि, सुंदर मानसरोवरतांहीं ॥ काक
 कवीस्वरनीके जेते, सो सबदोरतकर कहि जाही
 ॥ ३० ॥ नष्ट होइ द्विज भ्रष्ट क्रिया करि, कष्ट किये
 नहिं पावै ठौर ॥ महिमा सकलगई तिन केरी, रह
 त पदन तरसव सिरमौर ॥ जित तित फिरे नदी क
 छु आदर, तिनको कोउन धाली कोर ॥ सुंदर दा
 सकहे सम जायै, ऐसी कोउ करी मति और ॥ ३१
 ॥ सारु नरु देव पुरान पढ़े किन, पुनि व्याकर्न पढ़े
 जे कोई ॥ संध्या करै गहं पटकर्म द्वि, गुन अरु का
 ल विचार सोई ॥ सारा कामत वेबनि आवै, मनमें

सबतजिराषेदोई ॥ स्कंदरदासकहेस्कनपंडित, रा
 मनामविनामुक्तिनहोई ॥ ३१ ॥ ॥ इतिविपर्ज
 यसब्दकोअंगसमाप्तः ॥ २० ॥ ॥ ॥
 अथसूरातनकोअंगप्रारंभः ॥ ॥ छंदमन
 हर ॥ ॥ स्कनतनगारेचोटविकसेकमलमुष,
 अधिकउछाहफूल्योमाईहूनतनमें ॥ फेरेजबसां
 गतवकोईधीरधरे, कायरकंपाईमानहोतदेधीम
 नमें ॥ कुदकेपतंगजेसेपरतपावकमाहीं, ऐसेदू
 टपरेबहुसांवतकेघनमें ॥ मारीघमसायाकरीसुं
 दरजुहारस्याम, सोईसूरवीरस्तपरहेजाईरिनमें
 ॥ १ ॥ हाथमेंगह्वेषरगमारवेकोंएकपग, तनमन
 आपनोसमरपनकीनोहें ॥ आगेकरमीचको
 जुपस्थौडाकिरनबीच, दूकदूकहोईकेभगाई
 दलदीनोहे ॥ पाईलीनस्यामकोहरामधोरकेसे
 होई, नामजादजगतमेजीत्योपनतीनोहे ॥ स्कं
 दरकहतएसोकोनसूरवीर, सीसकोउतारकेस्क
 जसजाईलीनोहें ॥ २ ॥ पांचरोपिरहेरिनमांहीर
 जपूतकोऊ, हयगजगाजतजुरतजहांजलहें ॥
 बाजतजूकाउसहनार्दसिंधुरागपुनि, स्कनतही-

कायरकीछूठिजातकलहें ॥ ऊलकतवरछितरछि
 तरवारहे, मारमारकरतपरतषलभरहें ॥ एसेजुद्ध
 मेंआडिगसुंदरसुभटसोई, घरमांहीसूरमाकहां
 बतसकलहें ॥ ३ ॥ असनबसनबहुभूषनसकलअं
 ग, संपत्तिविविधभांतिभस्योसबघरहें ॥ अवनन
 गारोसुनिछिनकमेंछांड़िजात, एसेनहींजानेक-
 छूमैरेउहांमरहें ॥ मनमेंउछाहरनमाहीदूकदूक-
 होई, निरमेनिसंकवांकेरंचहूनडरहें ॥ सुंदरकह-
 तकोऊदेहकोममत्वनाहीं, सूरमाकोदेवीयतसी
 सबनुधरहें ॥ ४ ॥ ऊऊबेकोचावजाकेलाकीताकी
 करेधाव, आगेधरिपांवफिरपीछेनसंभारीहें ॥
 हाथलीयेहथियारतीछनलगायेधार, वारनहीं
 लागेसबपिसुनप्रहारहे ॥ वाटनहींराषेकछूलोट
 पोटहोईजाई, चोटनहीचूकेसीसरिपुकोउतारहे ॥
 सुंदरकहतताहीनेंकहूनसोचपोंच, सोईसूरवीर
 धीरमरजायमारहे ॥ ५ ॥ अधिकअजानबाहूम
 नमेंउछाहकीये, दीयेगजढाहसुषवरषतनूरहें ॥
 काटेजबतरबालबालसबठांटेहोई, अतिविका
 रालपुनिदेषतकस्तरहे ॥ नेकनउसासलेतफांज

कुंफिटार्डदेत, पेत्तनहींछांडेमारिकरेचकचूरहें ॥
 सुंदरकहतताकीकीरतिप्रसिद्धहोई, सोईसूरवी
 रधीरस्यामकेहजूरहे ॥ ६ ॥ ज्ञानकोकवचअंग
 काहूसोनहोइभंग, टोपसीस ऊलकतपरमवि
 वेकहें ॥ तनताजीअसवारलीयेसमसेरसार,
 आगंहीकोपांवधरेभागनेकीटेकहे ॥ छूतवंदूक
 बानसचैजहांचमसान, देषीकेपिसूनदलमारतअ
 नेकहें ॥ सुंदरसकललोकमांहीताकोजेजेकार,
 ऐसोसूरवीरकोऊकोटिनमेंएकहे ॥ ७ ॥ सूरवीररि
 पुसनमुपदेपिचोचकरे, मारेतबताकीताकितरवार
 तीरसों ॥ साधूआठोजामबैठोमनहिसोंजुद्धकरे,
 जाकोमुहमाथोनहिदेषीयेशरीरसों ॥ सूरवीरभू-
 मीपरदूरहीतेंदोरिलगे, साधूसनकोंपकरिरांपेध
 रधीरसों ॥ सुंदरकहततहांकाहूकोनपांवटिके,
 साधूकोसंग्रामहेआधीकसूरवीरसों ॥ ८ ॥ वैचैक
 रडीकमानज्ञानकोलगायोचान, माख्योमहाबल
 मत्तजगजिनरान्योहे ॥ ताकेआगवाणीपंचजोधा
 उक्तलकीये, ओररख्योपख्योसबअरिदलभान्यो
 हे ॥ ऐसोकोऊसभटजगतमेंनदेषीयत, जाकेआ

गेकालहू सो कं पिकयरा न्योहे ॥ सुंदर कहत ताकी सो
 भातिहुं लोक मांही, साधू सो न सूरवीर कोई हम जान्यो
 है ॥ ६ ॥ काम सो प्रबल महा जीते जिन तिन लोक सो
 तो एक साधू को विचार आगे हास्यो हे ॥ क्रोध सो करा
 ल जाके देषत न धीर धरे, सोऊ साधू क्षमा के हथ्यार सो
 विदास्यो हे ॥ लोभ ग्यों सभट साधू तोष सो गिराय दी
 यो, मोह सो नृपति साधू ज्ञान सप्रहास्यो हे ॥ सुंदर
 कहत एसो साधू कोई सूरवीर, ताकता कसबही पिसु
 न दल मास्यो हे ॥ १० ॥ मारे काम क्रोध सब लोभ मोह
 पीस डारे, इंद्रिहु कतल करि कीचोर जपू तो हे ॥ मास्यो
 महामत मन मारे अहंकार भीर, मारे मद मछरउ एसो
 रन रूतो हे ॥ मारी आसा अथगा पुनि पापनि सापनि
 दोऊ ॥ सब को भहार करि निज पद पहुंचो हे ॥ सुंदर क
 हत एसो साधू कोई सूरवीर, वैरी सब मारी के न चिंत
 होय सूतो हे ॥ ११ ॥ किये जीन मन हाथ इद्रिन को सब
 गाय, घेरी घेरी आपने ईनाथ सो लगाये हें ॥ औरउ
 अनेक वैरी मारे सब जुद्ध करि, काम क्रोध लोभ मोह
 पाद के बहाये हें ॥ कियो हे संग नाम जिना दीयो हें भगा
 इदल, एसे महांस सभट सग्रंथनि मंगाए हें ॥ सुंदर

कहत और सरयोहिषपिगए, साधूसूरवीरवेईजग
तमें आएहें ॥ १२ ॥ महामतहाथीमनराष्योहेपकरि
जिन, अतिहीप्रचंडजामेंबहुतगुमानहें ॥ कामको-
धलोभसोहबांधेचार्योंपावपुनि, छूटनेनपावेनेक
प्रानपीलवानहें ॥ कबहुंजोकरेजोरसावधानसांज
भोर, सदाएकहाथमेंअंकुसगुरुजानहें ॥ सुंदर
कहत और काहूकेनवसहोई, ऐसेकोनसूरवीरसा
धूकेसमानहे ॥ १३ ॥

॥ इति सूरतनको अंग

गसमामः ॥ २१ ॥

॥

॥

अथसाधूकोअंगप्रारंभः ॥ ॥ छंदइंदव. ॥
प्रीतिप्रचंडलगेपरब्रह्मही, औरसबेकछुलागतफी
को, सुदृष्टदेमनहोइरुनिर्मल, द्वैतप्रभावसबमी
टेजीको ॥ गोष्ठिरुजानअनंतचलेजहां, सुंदरजेसे
प्रवाहनदीको ॥ ताहीतेजानकरोनिसवासर, साधू
कोसंगसदाअनिनीको ॥ १ ॥ जोकोईजाईमिलेउ
नसोनर, होतपवित्रलगेहरिरंगा ॥ दोषकलंकसबे
मिटिजाइरु, नीचहुजाईकैहोनउत्तंगा ॥ ज्योंजल
औरमलीनमहाअति, गंगमित्योहोईजातहेगंगा
॥ २ ॥

संगा ॥ २ ॥ ज्यौलटभंगकरेअपनेसम, तासनभिन्न
 कहेनहिकोई ॥ ज्यौद्रुमओरअनेकनिभांतिन, चंदन
 कीटिगचंदनहोई ॥ ज्यौंजलछूद्रमिलेजबगंगहि, हो
 इपवित्रउहेंजलसोई ॥ सुंदरजातस्वभावमिटेसब,
 साधूकेसंगतेसाधूहीहोई ॥ ३ ॥ जोकोउआवतहेउन
 केटिग, चाहीरकनावतसब्दसंदेसो ॥ ताहीकोतैसी
 हीओषधीलावत, जाहीकोरोगहीजानतजेसो ॥
 कर्मफलंकहिकाटतहेंसब, सुखकरेपुनिकंचनते-
 सो ॥ सुंदरवस्तुविचारतहेंनित, संतनिकोजुप्रभा
 वहेएसो ॥ ४ ॥ जोपरब्रह्ममिल्योकोउचाहत, तोनि
 तसंतसमागमकीजे ॥ अंतरमेटीनिरंतरहोयके,
 लेउनकोअपनोंमनदीजें ॥ वेसुषद्वारउचारकरेक
 छु, सोअनयाससुधारसपीजें ॥ सुंदरसूरप्रका
 सभयोजब, ओरअज्ञानसबंतमछीजें ॥ ५ ॥ जा-
 दिनतेंसतसंगमिल्योतब, तादिनतेंभ्रमभाजगयो
 हैं ॥ ओरउपायथकेसबहीतब, संतनिअद्वयज्ञान
 दयोहें ॥ पोतप्रवालहीक्यौंकरिछूवत, एकअमो
 लकलालललद्योहें ॥ कोनप्रकाररहेरजनीतम, सुंद
 रसूरप्रकासभयोहें ॥ ६ ॥ संतमदासबकोहितवंछि

त, जानतहं नरबूडतकाटे ॥ देउपदेसमिटाइसबेभ
 म, देकरिजानजहाजहीचाटं ॥ जेविषयासुषणाहि
 नछांडत, ज्यौंकपिमूठगहेसठगांठं ॥ सुंदरवेदुपके
 मरुषमानत, हादहीहादविकाचतआदे ॥ ७ ॥ सोअ
 नखासतरेंभवसागर, जोसमसंगतमेंचलिआवे ॥
 ज्यौंकणिहारणभेदकरेकछू, आइचटेतिहिं नांपच
 दावे ॥ ब्राम्हणद्विचयवैश्यद्वेषद्वेष्ट, मलेंछचंडाल-
 हीपारलगाये ॥ सुंदरबारकछूनहिंलागत, यानरदे
 हअमैपदपाये ॥ ८ ॥ ज्यौंहमषाईपीवैअरुबोदही
 तेसेहीअंसचलोकबषाने ॥ ज्यौंजलमेंससिकेप्रति
 विंबहि, आपसमांजलजंतुसमाने ॥ ज्यौंपगछां
 हधराचरदीसत, सुंदरपंषिडडेअसमाने ॥ त्यौंपठ
 देहनिकेकतदेषत, संतनिकीगतिज्यौंकोउजाने ॥
 ९ ॥ ज्यौंपपराकरलेघरडोलत, मांगतभीपहीतोन
 हींलाजे ॥ जोसुषसेजपदंबरसूषन, लावतचंदन
 तोप्रतिसजे ॥ जोकोउआयकहेमुपतेकछू, जान
 तताहीबगारहीचाजे ॥ सुंदरसंसयदूरभयोसब,
 जोकछुसाधूकरेसोइछाजे ॥ १० ॥ कोउकनिंदतको
 उकवंदत, कोउकदेतहंआइकेसछना ॥ कोउकआ

यलगावतचंदन, कोउकडारतधूरिततक्षन ॥ कोउ
 कहेयहमूरषदीसत, कोउकहेयहआंहिविचछन
 ॥ रुंदरकाहूसौरागनद्वेषन, एसबजानहूसाधूकेल
 छन ॥ तातमिलेपुनिमातमिलेसुत, भातमिलेजु
 वतिसुषदाई ॥ राजमिलेगजबाजमिलेसब, साज
 मिलेमनचांछितपाई ॥ लोकमिलेरसरलोकमिलेवि
 धि, लोकमिलेवैकुंठहिजाई ॥ रुंदरआोरमिलेसब
 हीसुष, संतसमागमदुर्लभभाई ॥ १२ ॥ ॥ छं
 दमनहर ॥ ॥ देवहूभयेतेकहाइंद्रहूभयेतेक
 हा, विधिहूकेल्लोकतेबहुरिआइयतुहें ॥ मानुषभ
 येतेकहांभूपतिभयेतेकहा, द्विजहूभयेतेकहांपार
 जाइयतुहें ॥ पक्षहूभयेतेकहांपंषीहूभयेतेकहा,
 पन्नगभयेतेकहाक्योंअघाइयतुहें ॥ छूटीवेकोरुं
 दरउपायएकसाधूसंग, जिनकीकृपातेअतिसुष
 पाइयतुहें ॥ १३ ॥ इंद्रानीशुंगारधरिचंदनलगायोअं
 ग, बाहीदेवीइंद्रअतिकामावसभयोहें ॥ सूकरीहू
 कर्दमबीचहूमेंलोठिकरि, आगेजाईसूकरकोमन-
 हरिन्धयोहें ॥ जेसोसुषसूकरकोतेसोसरवमघवा
 को, तेसोसुषनरपसुपंषिनकौंदयोहें ॥ रुंदरकहत

जाके भयो ब्रह्मानंद रूप सोई साधू जगत में जीती
 करि गयो हें ॥ १४ ॥ धूलि जे सो धन जाके सुलिसों
 संसार रूप, भूलि जे सो भाग देषें अंत के सीधारी
 हें ॥ पाप जे से प्रभु ताई साप जे सो सनमान, बड़ा
 ई बिछुन जे सी नागनी सी नारी हें ॥ अग्नि जे सो इंद्र
 लोक विघ जे सो विधी लोक, कीरती कलंक जे सी-
 सिधिसी ठगारी हें ॥ वासनान कोई वा कीरे सी म-
 तिसदा जाकी, सुंदर कहत ताही वंदना हमारी हें ॥
 १५ ॥ कामहीन क्रोध जाके लोभहीन मोह ताके,
 मदहीन मछरन को उन विकारो हें ॥ दुषहीन रूप
 माने पापहीन पुन्य जानें, हरषन को कअने देह
 हीतें न्यारो हें ॥ निंद्यान प्रसंसार के रे रागहीन दोष
 धरे, लेनहीन देन जाके कछून पसारो हें ॥ सुंदर
 कहत ताकी अगम अगाध गति, ए सो कोऊ साधू
 सो तो रामजी को प्यारो हें ॥ १६ ॥ आठो जाम जप
 नेम आठो जाम रहे प्रेम, आठो जाम जाग्य जज्ञ
 कीयो बहुरानजू ॥ आठो जाम जपत पआठो जाम
 मर्नयो वन, आठो जाम तीर्थ में करत हें स्नान-
 जू ॥ आठो जाम पूजा विधि आठो जाम आरती

हैं, आठोजामदंडवतसुमरनध्यानजू ॥ सुंदरक
हतजिनकीयोसबआठोजाम, सोईसाधूजाके
उरएकभगवानजू ॥ १७ ॥ जेसेआरसीकोमैल
काटतसिकलिगर, सुषमेंनफेरिकोऊवहेवाको
पीतहैं ॥ जेसेबैदनेनमेंसलाकामेलिसुधकरे,
परलगहेतेतहांज्योंकील्योंहीजोतहैं ॥ जेसेवा
यूवादरविषेरैकेंउडाईदेत, रवितोअकासमांही
सदाईउद्योतहैं ॥ सुंदरकहतअमछिनमेंविला
ईजात, साधूहीकेसंगतेस्वरूपज्ञानहोतहैं ॥ १८
मृतकदादुरजीवसकलजीवायेजिन, वरषतवा
नीसुषमेघकीसीधारकों ॥ देतउपदेसकोउस्वार
थनलचलेस, निसदिनकरतहेब्रह्महिविचार-
कों ॥ औरहुसंदेहसबमेहतनिमषमांहीं, सूरज
मिट्ठाईदेतजेसेअंधकारकों ॥ सुंदरकहतहंस
वासीसुषसागरके ॥ संतजनआयोहेसोपरउ
पकारकों ॥ १९ ॥ हीराहीनलालहीनपारसनचिं
तामर्नी, औरउअनेकनगकहोकहांकीजिये ॥
कामधेनुसरतरुचंदननदीसमुद्र, नौकाहूजि-
हाजपैठकबहुकछीजिये ॥ पृथ्वीआपतेजवा

युव्योमलोंसकलजड, चंदसूरसीतलतपतगुन
 लीजिये ॥ सुंदरविचारहमसोधैसबदेषलोकसं
 तनिकेसमकहो औरकहादीजिये ॥ २० ॥ जिनत
 नमनप्रानदीनोसबमेरेहेत, औरऊसमत्वबुद्धी
 आपनीउठाईहैं ॥ जागतउसोचतउगावतहेमेरे-
 गुन, करतभजनध्यानदूसरीनकाईहैं ॥ तिनकेमें
 पीछेलग्योफिरतहोनिसदिन, सुंदरकहतमेरीउ-
 नतेउडाईहैं ॥ वहेमेरेप्रीयमेंहोउनकेआधीनस-
 दा, संतनकीमहिमातोश्रीभुषसुनाइहैं ॥ २१ ॥
 जगतज्योहारसबदेषतहेऊपरको, अतःकरनको
 तोनैकनपीछानेहैं ॥ छाजनकेभोजनकेहलनच-
 लनकछू, औरकोऊक्रीयाकीतोमध्यईबखानेहैं
 ॥ आपनेईअवगुनआरोपेअज्ञानीजीव, सुंदर
 कहततातेनिंदाहीकौंठानेहैं ॥ भावमेतोअंतरहै
 रातिआरुदिनकेसो, साधकीपरिक्षाकोउकेसेंक-
 रिजानेहैं ॥ २२ ॥ उहीदगावाजऊहीकुर्षीजुकलक
 भस्यो, ऊहीमहांपापीचाकेनषसिषकीचहैं ॥ ऊही
 गुरुद्रोहीगबुब्राम्हनहननहार, उहीआनमाकाया
 नीएसीवाकीबीचहैं ॥ उहीअधकांसमुद्रउहीआ

गकोपहार, सुंदर कहत वाकीबुरी भांतमीचहें ॥
 उहीहैं मलेछ उहीचंडालबुरेतेंबुरो, संतनीकीनिंदाक
 रैसोतोमहांनीचहें ॥ २३ ॥ परिहेविजुरीताकेऊपर
 सोअचानक, धूरिउडिजायकहूंठोरनहींपाईहैं ॥
 पीछेकोउचुगमहानरकमेंपरेजाई, उपरतेंजमही
 कीमारबहुषाईहैं ॥ ताकोपीछेभूतमेतथावरजंग
 मजोनी, सहेगोसंकटतबपीछेपछताइहें ॥ सुंद
 र कहत औरभुगतेंअनंतदुष, संतनीकोनिंदता
 कोंसत्यानासजईहैं ॥ २४ ॥ क्रूपमेकोमेंडकसों
 क्रूपकोंसरावतहें, राजहंससोंकहतकेंतोतेरोस
 रहें ॥ मसकाकहतमेरीसरभरकोंनउडे, मेरेआ
 गेरुडकीकेतीएकजरहें ॥ गूबरीलागोलीकोल्
 दाईकरिमानेमोद, मधुपकोंनिंदतसुगंधजाको
 घरहें ॥ अपनीनजानेगतिसंतनीकोंनामधरे, सुं
 दर कहतदेषोरेसेमूढनरहे ॥ २५ ॥ कोउसाधूभज
 नीकहूं तोलयलीनअति, कबहूंप्रारब्धकर्मधका
 आईदयोहे ॥ जेसेकोऊमारगमेंचलतअपंडिपरे
 फेरीकरिउठेतबउहंपंथलयोहे ॥ जेसीचंद्रमाकीपु
 निकलाछीनहोईगई, सुंदरसकललोकद्वितीया-

कौनयोहें ॥ देवहूको देवातनगयोतामें कहां भयो
 पीतरको मोलसों तो नाहीं कछू गयोहें ॥ २६ ॥ ताहीके भ
 गतिभाव उपजे हे अनायास, जाकी मति संतनीसों स
 दा अनुरागीहैं ॥ अति सुषपावे ताके दुष सब दूर होई
 और हूका हूकि जिन निंदा सब त्यागीहैं ॥ संसारकी फा
 सकाटी पाई हे परमपद, सतसंग हीनें जाके रसीमति
 जागीहैं ॥ सुंदर कहत ताको तुरत कल्याण होई, संत
 निको गुन गहे सोई बड भागीहैं ॥ २७ ॥ जोगजज्ञजप
 तप तीर्थव्रतादिदान, साधन सकल नहिं याकी सर
 रहे ॥ और देवीदेवता उपासना अनेक भांति, संक
 ब दूर करितिन ते न डरहें ॥ सबही के सीस पर पांव दे
 गति होई, सुंदर कहत सो तो जनमें न मरहें ॥ मनव
 काय करि अंतर न राखे कछू, संतनीकी सेवा करे सो
 निसतरहें ॥ २८ ॥ प्रथम सकज सलेत सील हू संतोष
 न, क्षमा दया धर्म लेत पाप ते डरतुहें ॥ इंद्रनी कौघे
 लेत मन ही कों फेरी लेत, जोगकी जुगतिले त ध्यान
 धरतुहें ॥ गुरुको वचन लेत हरिजीको नाम लेत, आ
 माको सोधी लेत भोजन लतरतुहें ॥ सुंदर कहत ज
 सत कछू लेत नाहीं, संतजन निस दिन लेवाई करत

॥२९॥ साचो उपदेश देत भली भली सीष देत, समता सु
 बुधि देत कुम तीहरतु हे ॥ मारग दिषाई देत भाव हू भ
 गति देत, प्रेम की प्रतीति देत अ भरा भरतु हे ॥ ज्ञान दे
 त ध्यान देत आतमा विचार देत, ब्रह्म की बात आई देत ब्र
 ह्म में चरतु हे ॥ सुंदर कहत जग संत कछू लेत नाहीं
 संत जननि सदिन देवोई करतु हे ॥ ३० ॥ ॥ ॥
 इति साधू को अंग समाप्तः ॥ २२ ॥ ॥ ॥
 अथ ज्ञानी को अंग प्रारंभः ॥ छंद इंदव ॥
 जाके लह दे महि ज्ञान प्रकासत, ताको स्वभाव रहे क्यों
 छाने ॥ नेन मे बेन में सेन में जानीये, ऊठत बैठत ही अ
 लसाने ॥ ज्यों कछु भक्ष किये उदगारत, कैसे हिराषि
 सकैं न अघानों ॥ सुंदर दास प्रसिद्ध दिषावत, धान
 को घेत परारतें जानो ॥ १ ॥ ज्ञान प्रकास भयोजिन के
 उर, वेध ठक्यो हि छिपे न रहेंगे ॥ भो डल मां हि दुरे न हिं-
 दी पक, जद्यपि वे मुषमों न गहेंगे ॥ ज्यों धन सार ही गो
 प्य छिपावत, तो हिर गंध हित ग्यल हेंगे ॥ सुंदर अ
 रक हा को उ जानत, धूवे की बात बटा उ कहेंगे ॥ २ ॥ बो
 लत चालत बैठत ऊठत, पीवत रवात हुर संघत स्वासे
 ॥ उपर तो व्यवहार करे सब, भीतर स्वप्न समान जु भा

से ॥ लेकरि तीरपताल को साधत, मारत हे पुन फेर-
 अकासें ॥ सुंदर देह क्रिया सब देषत, कोउ कपायत
 ज्ञानी के आसें ॥ ३ ॥ बैठे तो बैठे चले तो चले पुनि,
 पीछे तो पीछे ही आगे तो आगे ॥ बोले तो बोले न बो-
 ले तो मानहि, सोवे तो सोवे रुजागे तो जागे ॥ पाई
 तो पाइ न हीं तो न हीं जु, गेह तो गेह पुनि त्यागे तो त्या-
 गे ॥ सुंदर ज्ञानी की ऐसी दसा यह, जाने न हीं क-
 छुराग विरागे ॥ ४ ॥ देषत हे पें कछु नहिं देषत, बोल-
 त हे नहिं बोल वषानें ॥ संघत हे न हीं संघत घानसू-
 ने सब हे न सनें यह कानें ॥ भक्ष करे अरु ना हीं भषे
 कछु, भेटत हे न हीं भेटत प्रानें ॥ लेत हि देत हिले तन
 देत हि, सुंदर ज्ञानी की ज्ञानी ही जाने ॥ ५ ॥ काज अ-
 काज भलो न बुरो कछु, उत्तम मध्यम द्रष्टन आवे ॥
 काय कवायक मानस कर्मसु, आप विषे नहिं तिहूं
 ठहरावें ॥ हुं करि हो न कि यौ न करे अव, यौ मन इंद्रि-
 नि को वरतावें ॥ दीसत हे व्यवहार विषे नित, सुंदर ज्ञा-
 नी की कोउ कपावे ॥ ६ ॥ देषत ब्रह्म सनें पुनि ब्रह्म हि
 बोलत हे सोइ ब्रह्म हि जानी ॥ भूमि हुनी रहने जहुवा
 खुहु, व्योम हि ब्रह्म जहां लगानी ॥ आदिहु अंतहु

मध्यब्रह्महि, हे सब ब्रह्म यह मति ठानी ॥ सुंदर
 जेय रुज्ञान ब्रह्म हैं, आपहु ब्रह्म ही जानत जानी
 ॥ ७ ॥ वैठत केवल ऊठत केवल, बोलत केवल बात
 कही हैं ॥ जागत केवल सोचत केवल, जोचत केवल
 लक्षित ही हैं ॥ भूतहु केवल भव्यहु केवल, वर्त
 त केवल ब्रह्म रहि है ॥ हे सब ही अध ऊर्ध्व के
 बल, सुंदर केवल जान उही हैं ॥ ८ ॥ केवल ज्ञान
 भयो जिन के उर, ते अध ऊर्ध्व सुलोचन जाहीं ॥
 व्यापक ब्रह्म अखंड निरंतर, चाविन ओर कहूं
 कछु नाहीं ॥ ज्यौ घटना सभयो घट व्योम सुंदरी
 नभयो पुन ह नभ मांहीं ॥ त्यां पुनि मुक्ति जहां व
 पुछांडत, सुंदर सोक्ष शिला कहूं कांहीं ॥ ९ ॥ आ
 दिहु तो नहि अंतर हे नहिं, मध्य शरीर भयो भ्रम
 कृपा ॥ भासत हे कछु ओर को ओरहि, ज्यौं रजु
 में अहि सीप में रूपा ॥ देखि मरीचि उठ्यो चित वि
 भ्रम, जानत नाहिं उहं रवि धूपा ॥ सुंदर ज्ञान भ
 का सभयो जब, एक अखंडित ब्रह्म अनूपा ॥ १०
 ॥ ॥ छंद मनहरा ॥ ॥ जाही के चिं कजा
 न ताही के कुसल भयो, जाही वार जाई बां कोता

हीघोरसुखहें ॥ जेसेकोइपायनियेजारकोचढाई
 लेत, ताकोतो नकोउकाटेघोभरेकोदुषहें ॥ भावे
 कोउनिंदाकरेभावेतांप्रसंसाकरे, वेतोदेखेआर-
 गीमेंआपनोईसुखहें ॥ देहकोव्योहारसबमि-
 थ्याकरजानतहें ॥ सुंदरकहतएकआत्माहीरू-
 पहें ॥ ११ ॥ अंतःकरनजाकेतमगुनछाईरखी,
 जडताअजानवाकेआलसमैआसहे ॥ रजगुन
 कोप्रभावअंतःकरनजाके, विविधकरमवाकेका
 मनाकोवासहे ॥ सत्यगुनअंतःकरनजाकेदेखीय
 त, क्रियाकरिस्फुल्लवाकेभक्तिकोनिवासहे ॥ त्रि-
 गुणअतीतसाक्षीसुरीयास्वस्त्वजान, सुंदरक
 हतवाकेजानकोप्रकासहें ॥ १२ ॥ तमोगुनबुधीसोतो
 नवाकंसमानजेसे, ताकेमध्यस्तरजकीरंचहुनजो-
 तहे ॥ रजोगुनबुधीजेंसंआरसीकांउंधोवीर, ताके
 मध्यस्तरजकीकछूकउद्यांतहे ॥ सत्यगुनबुधीजेसे
 आरसीकीसुधीआर, ताकेमध्यप्रतिबिंबसूरज-
 कोपोतहें ॥ त्रिगुनअतितजेमेंप्रतिबिंबमिदिजा
 त, सुंदरकहतएकस्तरजहिहोतहें ॥ १३ ॥ सबसोंउ-
 दासीहोइकादिमनमिन्नकर, ताकेनामकर्हायत

परमवैरागहें॥ अंतःकरनहुकीचासनानिवर्तहोई,
 ताकोमुनीकहतहेंउहेंवडोत्यागहें॥ वित्तएकईश्व
 रतैनैकहूनन्यारोहोई, उहेभक्तकहीयतउहेंप्रेम
 मार्गहें॥ आपुअह्मजगतकोएककरीजानेसब,
 सुंदरकहतवहजानभ्रमभागहें॥ १४॥ कोउनृपकू
 लनिकीसेजपरिसूतोआई, जबलगजाग्योतोली
 अतिसूषमान्योहें॥ नीदजबआहीतबवाहीकों
 स्वपनभयो, जबपस्थोनरककेकुंडमेंयोजान्योहें॥
 अतिदुषपावेपरनिकस्थोनवयौंहीजाई, जागिजब
 पस्थोतबस्वपनबषान्योहें॥ यहजूठवहजूठजाग्र
 तस्वपनदोउ, सुंदरकहतजानीसबभ्रमभान्योहें
 ॥ १५॥ स्वपनेमेंराजाहोईस्वपनेमेंरंकहोई, स्वपने
 मेंसूषदुषसत्यकरिजानेहें॥ स्वपनेमेंबुधीहीनमू
 ढनसमजकछू, स्वप्नमेंपंडितबहूग्रंथनिघपानेहें
 ॥ स्वप्नमेंकामीहोईइंद्रीनिकेवसपस्थो, स्वपनेमें
 जतिहोईअहंकारआनेहें॥ स्वप्नेतेंजाग्योजब
 समजपरीहेतब, सुंदरकहतसबमिथ्याकरिमा
 नेहें॥ १६॥ विधिननिषेधकछूभेदनअभेदपुनि
 क्रियासोंकरतदीसेयोहीनितप्रतिहें॥ काहूकों

निकटराषेकाहूकेंतोदूरभाषे, काहूसेनेरेनदूरएसी
जाकीमतीहें ॥ रागहूनदोषकोउसोकनउछाहदोउ
ऐसीविधिरहंकहूरतिनाविरतिहें ॥ बाहिरव्यवहार
ठानेंमनमेंस्वपनजानें, सुंदरजानीकीकछुअदभू
तगतीहे ॥ १७ ॥ कामीहेनजतीहेनरुमहेनसती
हेन, राजाहेनरंकहेनतनहेनमनहें ॥ सोयेहेनजागे
हेनपीछेहेनआगेहेन, यहहेनत्यागेहेनधरहूनब
नहे ॥ स्थिरहेनडोलहेनमोहनहेनबोलेहेन, बंधेहेन
षोलेहेनस्वामीहेनजनहे ॥ वेसोकोउहोवेजववाकी
गतिजानेंतव, सुंदरकहतजानीजानसुधधनहे ॥

॥ १८ ॥

॥ इतिजानीकोअंगसमाप्तः ॥

॥ अथसारव्यजानकोअंगप्रारंभः ॥ ॥

छंदमनहर ॥ ॥ छितिजलपावकपवनन
भमिलिकार, सद्धरूपसरूपरसगंधजू ॥ ओन्नत्व
कुचक्षुघ्राणरसनारसकोजान, वाक्पाणीपादपा
यूपस्थहिवंधजू ॥ मनबुद्धिचिन्तअहंकारएचोवी
सनत्व, पंचीसमोजीवतत्वकरतहेंहंधजू ॥ षट्पिं
समांहेब्रह्मसुंदरभूनिहकर्म, व्यापकअषंडएक
रसनिरसंगजू ॥ १॥ ओन्नदिगतत्वकवायूलांचनप्रका

सरविनासिकश्चरवनिजिह्वावरुणवसानिये ॥ वा
 कश्चाग्निहस्तइंद्रचरनउपेन्द्रवल, मेद्रप्रजापतिगुदा
 मृत्युहृकोठानिये ॥ मनचंद्रबुधिविधिवित्तवासुदे
 वआहि, अहंकाररुद्रकोप्रभावकरिसानिये ॥ जा-
 कीसतापाइसबदेवताप्रकासतहें, सुंदरसो आत्
 माहीन्यारोकरिजानीये ॥ २ ॥ ॥ छंदइंद्रव ॥
 ओत्रसनेद्रगदेवतहेरस, नारसघानस्रगंधपिया
 रो ॥ कोमलतात्वकजानतहेपुन, बोलतहेमुखशब्द
 उचारो ॥ पाणिग्रहेपदगोनकरेमल, मूत्रतजेउभयो
 अधहारो ॥ जाकेप्रकासप्रकासतहेसब, सुंदरसो
 इरहेघटन्यारो ॥ ३ ॥ बुद्धिभ्रमेमनचित्तभ्रमे, अहं
 कारभ्रमेकहाजानतनाहीं ॥ ओत्रभ्रमेत्वक्घान
 भ्रमेरस, नाद्रगदेषीदसोदिसजाहीं ॥ वाकभ्रमे
 करपादभ्रमेगुद, द्वारउपस्थभ्रमेकहुकांहीं ॥ तेरे
 भ्रमाएभ्रमेसबहीपुनि, सुंदरतूंक्यों भ्रमेउनमां
 हीं ॥ ४ ॥ बुद्धिकोबुद्धिरुचित्तकोचित्त, अहंकोअ
 हंमनकोमनबोर्ड ॥ नेनकोनेनहेबेनकोबेनहे, कान
 कोकानतुचात्वक्होर्ड ॥ घानकोघानहेजीभकोजी
 भेहे, हाथकोहाथपगेपगदोर्ड ॥ रसीसकोरसीसदंभा

नकोमानहे, जीवकोजीवहेसुन्दरसोई ॥ ५ ॥ ॥
 छंदमनहर ॥ ॥ प्रश्न ॥ ॥ कैसेकेजगतअह
 रच्योहेजगतगुरु, मोसोंकहोप्रथमहीकोनतत्व
 कीनोहें ॥ पुरुषकेप्रकृतिकेमहत्तत्वअहंकारकी
 धोंउपजायतमरजसततीनोहें ॥ कीधोंव्योमवा
 युतेजआपकेअवनिकीन, कीधोंपंचविषयपसा
 रकरिलीनोहें ॥ कीधोंदसइंद्रिकीधोंअंतःकरनकि
 न, सुन्दरकहतकीधोंसकलयहीनोहें ॥ ६ ॥ उत्तर
 ॥ ब्रह्मतेपुरुषअरुप्रकृतिप्रगटभई, प्रकृतितें
 महत्तत्त्वपुनअहंकारहें ॥ अहंकारहूतेंतीनगुन
 सत्वरजतम, तमहूतेंमहाभूतविषयपसारहें ॥ र
 जहूतेंइंद्रिदसप्रथकप्रथकभई, सत्वहूतेंमनआ
 दीदेवताविचारहें ॥ एसेअनुक्रमकरिसिषसोंकह
 तगुरु, सुन्दरसकलयहमिथ्याभ्रमजारहें ॥ ७ ॥
 प्रश्न ॥ मेरोरूपभोमीहेकेमेरोरूपआपहेके, मे
 रोरूपतेजहेकेमेरोरूपपोनहे ॥ मेरोरूपव्योमहेके
 मेरोरूपइंद्रियदश, अंतःकरनहेकेबैठोहेकेगोन
 हे ॥ मेरोरूपत्रिगुनकेअहंकारमहत्तत्वप्रकृतिपु
 रुषकीधोंबोलेहेकेमोनहे ॥ मेरोरूपस्थूलहेकेसू

क्ष्मआदिमेरोरूप, सुंदरपूँछतगुरुमेरोरूपकोनहे
 ॥८॥ ॥उत्तर॥ ॥तूंतोकछूभोर्मानाहींआ
 पतेजवायूनाहीं, व्योमपंचविषनाहींसोतोभ्रम
 रूपहे॥ तूंतोकछूइंद्रीअरुअंतःकरननाहीं, ती
 नगुनतूंतोनाहींनतोछांहींधूपहे॥ तूंतोअहंका
 रनाहींपुनिमहतत्वनाहीं, प्रकृतिपुरुषनाहींतू-
 तोस्वअनूपहे॥ सुंदरविचारएसेशिषसोंकहन
 गुरु, नाहींनाहींकहतरेसोतेरोरूपहे॥ ९॥ ते
 रोतोस्वरूपहेअनूपचिदानंदधन, देहतोमली
 नजडयोंविवेककीजिये॥ तूंतोनिहसंगनिराका
 रअविनाशीअज, देहतोविनासवतताहीनहि
 धीजिये॥ तूंतोषट्ऊर्मरहितसदाएकसर, देह
 केविकारसबदेहशिरदीजिये॥ सुंदरकहतयों
 विचारआपुमिनजानी॥ परकीउपाधीकहाआ
 पसेंचलीजिये॥ १०॥ देहहीनरकरूपदुषकोनवा
 रपार, देहहीस्वर्गरूपजूठोसुषमान्योहे॥ देह
 हीकोबंधमोक्षदेहहीअप्रोक्षप्रोक्ष, देहहीक
 क्रियाकर्मसुभासुभठान्योह॥ देहहीमेंऔरदे
 हसुषीकैविलासकरे, ताहीकोंसमजयिनआ

तमावधान्योहे ॥ सुन्दरचैतन्यरूपन्यारोकरिजान्यो
 हे ॥ ११ ॥ देहहलेदेहचलेदेहहीसोंदेहमिले, देहपाईदे
 हपीवैदेहहीभरतहे ॥ देहहिहींमारेगरेदेहहीपावक
 जरे, देहरनमाहीजूँदेहहीपरतहे ॥ देहइअनेक
 र्मकरतभांति, चमककीसतापाईलोहज्योंफिरतहे
 ॥ आतमाचैतन्यरूपव्यापकसाक्षीअनूपसुन्दर
 कहनसोतोजामेनमरतुहे ॥ १२ ॥ देहयहकिनको
 हेदेहपंचभूतनिको, पंचभूतकोनतेहेतामसअहं
 कारतें ॥ अहंकारकोनतेहेजासोंमहत्तत्त्वकहे, म
 हत्तन्वकोनतेहेप्रकृतिसंसारतें ॥ प्रकृतिसोंकोन
 तेंहेपुरुषहेजाकेनाम, पुरुषसोंकोनतेहेब्रह्मनि
 राधारतें ॥ ब्रह्मअबजान्योहमजान्योहेतेनिश्चैक
 र, निश्चैहमकीयौहेतोचुपसुषधारतें ॥ १३ ॥ एकघटमांही
 तोसुगंधजलभरीराव्योएकघटमाहीतोदुग्धजलमस्यो-
 हे, एकघटमाहीपुनिगंगोदकराव्योआनि, एक
 घटमाहींआनीमदीराउकस्योहे ॥ एकघृतएक
 तेलएकमार्हांलघुनीत, सबहीमेंसविताकोप्रति
 बिंबयस्योहे ॥ तेमहीसुन्दरऊचनीचमध्यएकब्र
 ह्म, देहभेददेधीभिन्नभिन्ननामयस्योहे ॥ १४ ॥

भूमिपरआपआपहूकेपरेपांवकहें॥ पावककेपर
 पुनीवायूहीबहतहे॥ वायूपरेव्योमव्योमहूकेपर
 इंद्रीडस, इंद्रीनीकेपरअंतकरनरहतुहें॥ अंतः
 करनपरतीनोगुनअहंकार, अहंकारपरमहत्तत्त्व
 कौलहतुहें॥ महत्तत्त्वपरमूलमायामायापरब्रह्म
 ताहीतेंपरातपरसुंदरकहतुहें॥ १५॥ भूमितोवि
 लीनगंधगंधतोविलीनआप, आपहूविलीनरस
 रसतेंजवातहें॥ तेजरूपरूपवायूवायूहीसपर्स
 लीन, सोसपर्सव्योमशब्दतमहीविलातहें॥ इंद्री
 दसरजमनदेवताविलीनसत्य, तीनगूनाअहंमह
 तत्त्वगलिजातुहे॥ महत्तत्त्वप्रकृतिरुप्रकृतिपुरु
 षलीन, सुंदरपुरुषजाईब्रह्ममेंसमातहे॥ १६॥
 आतमाअचलसुखदुःखकरसरहेसदा, देहविवहा
 रनिमेदेहहीसौजानीये॥ जेसेसर्पामंडलअभ
 गनहीभंगहोई, कलाआईजावेघटबटसोंबधा
 नीये॥ जेसेद्रुमथिरनदीहूकेतटदेखीयत, नदीके
 प्रवाहमाहीचलतेसोमानीये॥ तेसोआतमा
 अनंतदेहसोंप्रकासकरे, सुंदरकहतुयोविचा
 रिभ्रमभानीये॥ १७॥ आतमाशरीरदोऊएकमें

कदेवीयत, जबलग अंतःकरणमें अज्ञान है ॥ जैसे
 अंधेयारीरे नगरमें अंधेरो होई, आपनिको तेज-
 ज्यों को त्यों ही विदमान है ॥ जद्यपि अंधेरे मारि न
 नको न सूके कछू, तदपि अंधेरे सों अलेप सो बधा
 न है ॥ सुंदर कहत तो लों एक मेक जानीयत, जो-
 लों न हीं प्रगट प्रकास ज्ञान भान है ॥ १८ ॥ देह जड
 देवल आत्मा चैतन्य देव, याही को समझि करिया
 सों मन लाईये ॥ देवल को बीन सत वार न हीं लागे-
 कछू, देव तो अभंग सदा देवल में पाईये ॥ देव की स-
 गती करि देवल की पूजा होत, भोजन विविध भांति
 भोग हूँ लाईये ॥ देवल ते न्यारी देव देवल में देवी
 यत, सुंदर विराजमान और कहाँ जाईये ॥ १९ ॥
 पीत सीन पाती कोऊ प्रेम से न फूल और, चित-
 सों न चंदन सनेह सोन सेहरा ॥ त्वदे सोन आसन
 सहज सोन सिंघासन ॥ भाव सीन सेज और सु-
 न सोन गेहरा ॥ सील सोन स्नान नाहीं ध्यान सो-
 न धूप और, ज्ञान सोन दीपक अज्ञान तम के ह-
 रा ॥ मन सीन माला कोउ सोह सोन जाप और, आ-
 तमा सो देव नाहीं दैव सोन देहरा ॥ २० ॥ स्या सो स्या

सरातिदिनसोहंसोहंहोयजाप, याहीमालावार
 वारदृढकैधरतुहे ॥ देहपरेइंद्रीपरेअंतहकरनपरे
 एकहीअरवंडजापतापकुंहरतुहे ॥ काठकीरुद्राक्ष
 कीरुसूतहकीमालाओर, इनकेफिरायेकछुकार
 जसरतुहे ॥ सुंदरकहततातेआतमाचेतन्यरू
 प, आपकोभजनसोतोआपहीकरतुहे ॥ धीरनी
 रमिलेदोउएकठेहीहोइरहे, नीरजेसेछांडहंसवी
 रकौंगहतुहे ॥ कंचनमेंओरधातुमिलीकरीबान
 पड्यो, सुद्धकरिकंचनसोनारज्यौलहतुहे ॥ पा
 पकहदारमध्यदारहूसोहोइरह्यो, सथिकरिका
 देवहदारकौंदहतुहे ॥ तैसेहीसुंदरमिल्योआत
 माअनातमाजु, भिन्नभिन्नकरिसोतोसारव्यही
 कहतुहे ॥ २२ ॥ अन्नमयकोससोतोपिंडहेप्रगट
 पह, प्रानमयकोसपंचवायूहीबषानीये ॥ मनो
 मयकोसपंचकर्मइंद्रीहेप्रसिद्ध, पंचज्ञानइंद्रीय-
 वेज्ञानकोसजानीये ॥ जाग्रतस्वपनविषेकहीये
 वलारकोस, सुषोयतीमाहीकोसआनंदमैभा
 रीये ॥ पंचकोसआतमाकौंजीवनामकहीयत,
 सुंदरशंकरभांससांध्यहवषानीये ॥ २३ ॥ जा

यतश्चवस्थाजेसेसदनमेबेठीयत, तहांकछूहोई
 ताहीभलीभांतिदेवीये ॥ स्वपनश्चवस्थाजेसेदेह
 रिमेबैठेजाय, रहेजोईउहांवाकीवस्तुसबलेवीये
 ॥ सुषोपतिभोहरेमेबैठेतैनसूऊपरे, महंअंध
 घोरतहांकछूईनपेवीये ॥ व्योमअनुसूतघरदे
 हरेभोहरेमांहीसुंदरसावीस्वरूपतुरीयाविसेषी
 ये ॥ २४ ॥ जाग्रतकेविषेजेवनेननीमेंदेवीयत,
 विविधव्योवारसबइंद्रनिगहतुहे ॥ स्वपनेहूमांही
 पुनिवेसेहीव्योहारहोत, नेननीतेंआईकरिकंठमें
 रहतुहे ॥ सुषोपतिरहदेमेविलीनहोइजातसब
 जाग्रतस्वपनकीतोसूधिनलहतुहे ॥ तीनहूअ
 वस्थाकोईसाक्षीजबजानेआप, तुरीयास्वरूप
 यहसुंदरकहतुहे ॥ २५ ॥ ॥ छंदइंदय ॥ ॥
 भोमीतेसूक्ष्मआपकोजानहू, आपतेंसूक्ष्म
 तेजकोअंगा ॥ तेजतेंसूक्ष्मचायूवहेनित, वायू
 तेंसूक्ष्मव्योमउत्तंगा ॥ व्योमतेंसूक्ष्महेगुनती
 नहू, तिहूतेअहंमहत्तत्त्वप्रसंगा ॥ ताहूतेंसूक्ष्म
 मूलप्रकृतिजु, मूलतेंसुंदरब्रह्मअभंगा ॥ २६ ॥
 ब्रह्मतेनिरंतरआपकअग्नि, अरूपअषंडितहे-

सबमाहीं॥ ईश्वरपावकराशिप्रचंडजु, संगउपा
 धिलियेवरताही॥ जीवअनंतमसालचिराकस
 दीपपतंगअनेकदिषाही॥ सुंदरद्वैतउपाधिमिटे
 जब, ईश्वरजीवजुदेकछुनाहीं॥ २७॥ ज्यौंनरपा
 वकलोहतपावत, पावकलोहमिलेसुदिषांही॥
 चोदअनेकपरेधनकीसिर, लोहवधेकछुपावक
 नाहीं॥ पावकलीनभयोअपनेघर, सीतउलोह
 भयोतवताही॥ त्योंयहआतमदेहनिरंतर, सुं
 दरभिन्नरहेमिलिमाहीं॥ २८॥ आतमचैतनसु
 द्निरंतर, भिन्नरहेकहुंलिसनहोई॥ हेजडचैत
 नअंतःकरनजु, सुद्धअरुधलीयेगुनदोई॥ दे
 हअरुद्धमलीनमहांजड, हालनचालसकेपुन
 होई॥ सुंदरतीनविभागकीयेविन, भूलिपरेभ्रम
 तेंसबकोई॥ २९॥ ॥ छंदसवैयामात्रा३१॥
 ॥ ब्रह्मअरूपअरूपीपावक, व्यापकजुगलन
 दीसतरंग॥ देहदारतेंप्रगटदेखीयत, अंतःकरन
 अग्निद्वयअंग॥ तेजप्रकासकल्पनातोंलंगि,
 ज्योंलगरहेउपाधिप्रसंग॥ जहांकेतहांलीनपुन-
 होई, सुंदरहोइसदाअभंग॥ ३०॥ देहसरावतल

पुनिमारुत, बाली अंतः करन विचार ॥ प्रगटजोति
 यह चैतन दीसे, जाते भये सकल उजियार ॥ व्याप
 क अगनि मथन करि जाए, दीपक बहु तभांति वि-
 स्तार ॥ सुंदर अद्भुत रचना तेरी, तू ही एक अनेक
 प्रकार ॥ ३१ ॥ तिल में तेल दूध मे घृत हे, दार माहीं
 पावक पहि चान ॥ पुह पमां हि जु प्रगट वासना, इ
 ष मां हीं रस कहत वषान ॥ पोसत माहीं अफीम
 निरंतर, चन स्पती में सहत प्रमान ॥ सुंदर भिन्न
 मिल्यो पुनि दीसत, देह माहीं यों आतम जोन ॥
 ३२ ॥ ॥ सुंदर सवैया मात्रा ३२ ॥ ॥ जाग्रत सु
 म सुषोपति तीनों, अंतः करन अवस्था पावे ॥ प्रा
 ण चले जाग्रत अरु सुम, सुषोपती में कछु वेन र
 हावे ॥ प्राण गए तेर हेन कोऊ, सकल देष तां आट
 विलावे ॥ सुंदर आतम नित्य निरंतर, सो तो कित
 हूं जायन आवे ॥ ३३ ॥ ॥ सवैया छंद मात्रा
 ३१ ॥ ॥ पंद्रह तत्त्व स्थूल कुंभक में, सूक्ष्म लिंग
 गभर्यो ज्यौ तोय ॥ यहां जीव उहां आभा जानोउ
 तसे, ब्रह्म इंद्र प्रति बिंब जु दोय ॥ घट फूटे जलग
 यां विलहे वै, अंतः करन कहें नहि कोय, सब प्रति

विषमिलेससिहीमहि, सुंदरजीवब्रह्ममयहोय॥
 ३४॥ ॥ छंदमनहर॥ ॥ जैसे व्योम कुंभकेवा
 हेरअरुभीतरहू, कोउनरकुंभकुं हजारकोसलेग
 यो॥ ज्योंही व्योम इहां त्योंही उहां पूनीहे अषंडा इ
 हानविछोहनतो उहां मिलकै भयों, कुंभतो नयो
 पुराणी होई के विना सिजाई, व्योम तो नहे पुरानो
 नतो कछू नयो॥ तेसेही सुंदर देह आवेरहे ना
 सहोई, आतमा अचल अविनासी हे अनामयो
 ॥ ३५॥ देहके संजोग ही तैं सीतलगे धामलगे, देह
 के संजोग ही तैं सुधातृषापौनकों॥ देहके संजोग
 ही तैं कटुकमधुरस्वाद॥ देहके संजोग कहे पाटो
 पारोलौनकों॥ देहके संजोग कहे सुषते अनेक
 बात, देहके संजोग हि पकरि रहे मौनकों॥ सुंदर
 देहके संजोग दुषमाने सुषमाने, देहको संजोग
 यो दुषसपकौनको॥ ३६॥ आपुकी प्रसंसा सुनि
 आपुहिषुसालहोई, आपुहि की निंदारकनि आ
 पसुरजाईहै॥ आपुहिको सुषमानी आपुसुष
 पावतहैं, आपुहिको दुषमानी आपुदुषसाईहैं॥
 आपुहिकी रक्षा करे आपुहिकी च ॥

हिहत्पारोहोईगंगाजाइन्हार्है ॥ सुंदरकहतएसे
देहहिकोआपुमानी, निजरूपभूलिकेकरतहा
ईहार्है ॥ ३७ ॥ ॥ इतिसांप्यज्ञान

कोअंगसमासः ॥ २४ ॥

॥ अथअपने

भावकोअंगप्रारंभः ॥

॥ छंदइंदव ॥ - ॥

एकहीआपनोभावजहांतहां, बुद्धिकेजोगतेवि
भ्रमभासे ॥ जोयहभूरतोभूरवहीपुनि, याकेषा
सेतेउहांपुनिषासे ॥ जोयहसाधुतोसाधुउहांपु
नि, याकेहसेतेउहांपुनिहांसे ॥ जसोईआपकरे
मुषसुंदर, तेसोईदर्पनमांहिप्रकासे ॥ १ ॥ ॥

छंदमनहर ॥ ॥ जैसेस्वानकांचकेसधनमध

देविअोर, भूँकिभूँकिमरतकरतअभिमानजू ॥

जैसेगजफटिकशिलासोंअरितोरेदंत, जैसेसिं

यकूपमांहीउऊकभुलानजू ॥ जैसेकैउफेरिषा

तफिरतसुंदरवेजग, तेसेहीसुंदरसबतेरोईअ

ज्ञानजू ॥ आपनोईभ्रमसोतोदुसरोदिषाइदत

आपकेविचारकोऊदूसरोनआनजू ॥ २ ॥ नीच

ऊचभलोबुरोसज्जनदुर्जनपुनिपांडितमूरखसबु

मित्ररंकरावहे ॥ मानअपमानपुन्यपापसुषदु

वीअन्यदेवकोउभावकोरूपासेताही, कहेमे-
 तोपुत्रधनइनहीतेंपायोहे॥ जेसेस्वानहाडको
 चचोरकरिमानेमौद, आपहीकोमुषफोरिलो-
 हचाटपायोहें॥ तेसहीसुंदरयहआपुहीचैत-
 न्यआही, अपनेअज्ञानकरिओरसोबंधायोहे
 ॥६॥ ॥ छंदइद्व॥ ॥ नीचेतेंनीचेरु
 ऊंचेतेंऊपर, आगेतेंआगेरुपीछेतेंपीछो॥ दूरतें
 दूरनजीकतेंनेरेहि, आडेतेंआडोहितीछेतेंतीछी
 ॥ बाहिरभीतरभीतरबाहिर, ज्योंकोउजानत्यों
 करईछो॥ जैसोहीअपनोभावहेसुंदर, तैसोही
 हेदूगछोलिकेदीछो॥ ७॥ आपनेभावतेसूर-
 सोदीसत, आपनेभावतेंचंदसोभासे॥ आपने
 भावसेतारेअनंतजु, आपनेभावतेविद्युततासे॥
 आपनेभावतेंनूरहेतेजहे, आपनेभावतेंजोति-
 प्रकासे॥ तैसोहीताहीदिषावतसुंदर, जैसोही
 होतहेजाहिकोआसे॥ ८॥ आपनेभावतेसेव-
 कसाहिव, आपनेभावसबेकोरूध्यावे॥ आप-
 नेभावतेंअन्यउपासत, आपनेभावतेंभक्तहु-
 गावे॥ आपनेभावतेंदुष्टसंघारत, आपनेभावतें

बाहिरावे ॥ जे सोही आपनो भावहे सुंदर ताहो
 कोते सोही होइ दिषावे ॥ ९ ॥ आपने भावते दूरवता
 वत, आपनो भावन जी कवखान्यो ॥ आपने भावते दूध-
 पिभावत आपने भावते विद्वल जान्यो ॥ आपने भाव
 ते चार भुजा पुनि आपने भावते सिंध सो मान्यो ॥ सुं-
 दर आपने भावको कारन आपही पूरन ब्रह्म पिछा
 न्यो ॥ १० ॥ आपने भावते होइ उदास जु आपने भा-
 वते प्रेम सो रोवे ॥ आपने भाव मिल्यो पुनि जान
 त, आपने भावते अंतर जोवे ॥ आपने भाव रहे-
 नित जाग्रत आपने भाव समाधि मे सोवे ॥ सुंद-
 र जे सोही भावहे आपनो, ते सोई आपत हांत हैं
 होवे ॥ ११ ॥ आपने भावते भूल परखो भ्रम, देह स्व-
 रूप भयो अभिमानी ॥ आपने भावते चंचल ता अ-
 ति आपने भावते बुद्धि धिरानी ॥ आपने भावते आ-
 प विसारत आपने भावते आतम जानी ॥ सुंदर-
 जे सोई भावहे आपनो, ते सोई होइ गयो यह प्रानी ॥
 ॥ १२ ॥ ॥ इति श्री आपने भावको अंग
 समाप्तः ॥ २५ ॥ ॥ ७५ ॥ ॥ ॥ ॥
 ॥ अथ स्वस्वरूप विस्मरणको अंग प्रारंभः ॥ ॥

(११६)

सुंदरविलास.

अं२६

॥ छंदइंदव॥ ॥ जाघरकीउनहारहेजे-
सीही-ताघटचैतनतेसोईदीसे ॥ हाथीकीदेह
मेंहाथीसोमानत, चीटीकीदेहमेंचीटीकरीसे
॥ सिंघकीदेहमेंसिंघसोंमानत, किसीकीदेह
मेंमानतकीसे ॥ जैसीउपाधीभइजहासुंदर
तेसोईहोइरत्यो नषसीषे ॥ १ ॥ जैसेहीपावक
काठकेजोगते काठसोहोयरत्योइकठोर ॥ दी
रघकाठमेंदीरघलागत, चोरसकाठमेंलागत-
चोरा ॥ आपनोरूपप्रकासकरेजव, जारकरैत
बओरकोओरा ॥ तेसेहीसुंदरचैतन्यआपसु
आपकोंजानतनाहिनवोरा ॥ २ ॥ ॥ छंद
मनहर ॥ ॥ प्रश्न ॥ ॥ अजरअमर
अविगतअविनासीअज, कहतसकलजनमु-
तिअवगाहेतें ॥ निरगुननिरमलअतिसुधनि
रबंधनित, ऐसेहीकहतओरग्रंथनिकेयाहेते
॥ व्यापकअखंडएकरसपरिपूरनहे, सुंदरस
कलरमिरत्योब्रह्मताहेतें ॥ सहजसदाउद्योत-
याहीतेंअचंभाहोत, आपुहीतोआपभुल-
योसातोकाहेतें ॥ ३ ॥ ॥ उत्तर ॥

जैसेमीनमांसकोंनिगलिजातलोभलगि, लोह
 कोकंटकनहिजानतउमाहेतें ॥ जैसेकपिगाग-
 रमेमूढिबाधिरापमठ, छांडनहीदेतसोतोसा
 दहीकेवाहेतें ॥ जैसेककनारीधरचूचमाशिल
 टकत, सुंदरसहतदुषदेतयाहीलाहेतें ॥ देह
 कोसंजोगपायइदानीकेवसपर्यौ, आपहीके
 आपभूलिगयोसुखचाहेतें ॥ ४ ॥ ॥ छंद
 इदव ॥ ॥ ज्योंकोईमद्यपियेअतिछा-
 कत नाहीकछूसुधिहेभ्रमऐसो ॥ ज्योंकोई
 षाडरहेठगमूरिहि, जाननहीकछूकारनतैसो
 ॥ ज्योंकोईबालकसंकउपावतकंपिउठेअरु-
 आनतभैसो ॥ तैसेहीसुंदरआपसोंभूलिसु-
 देषहुचैतनमानेहेकैसो ॥ ५ ॥ ज्योंकोईकूप-
 मेंजाकिअलापत, ऐसीहीभांतिमूकूपअलापे
 ॥ ज्योंजलहालतहेलगिपीन, कहेभ्रमतेप्रति
 बिंबहीकांये ॥ देहकेप्रानकेजेमनकेकत मान
 तहेसबमोहिकोंव्यापे ॥ सुंदरपेचपर्यौअति-
 सेकरि, भूलिगयोभ्रमतेब्रह्मआपे ॥ ६ ॥ ज्योंहि
 नकोउकछाडिमहातम, शूद्रभयोकरिआपकों

(११८)

सुंदरविलास

अ २६

मात्यों ॥ ज्यों कोउ भूपति सौं वत से जस रंक भयौ
सुपने महि जान्यो ॥ ज्यों कोउ रूप की रासि अत्यंत कु
रूप कहे भ्रम भै चक आन्यो ॥ ते से ही सुंदर देह सौं
होय के ॥ या ब्रह्म आप ही आप भुलान्यो ॥ ७ ॥
एक ही व्यापक वस्तु निरंतर विभू नही यह ब्रह्म
विलासे ॥ ज्यों नट मंत्र नि सों द्रष्ट बाधत ॥ हे कछु
ओरहि ओरहि भासे ॥ ज्यों रजनी महि बूझ पर नहि
ज्यों लग सूरज नाहि प्रकासे ॥ त्यों लग आप-
हि आप न जानत सुंदर देख्यो सुंदर दासे ॥ ८ ॥
॥ छंद मनहर ॥ ॥ इंद्रि न को प्रेरी पुनि इंद्र नि
के पीछे पत्यो ॥ आपनी अविद्या करि आपुन नग-
त्यो हे ॥ जोई जोई देह को संकट आई पर कछु
सोई सोई माने आपु या ते दुरवस त्यो हे ॥ भ्रम-
त भ्रमत कहूं भ्रम को न आवे अंत ॥ विरकाल वी
त्यो परवरूप को न लत्यो हे ॥ सुंदर कहत देषा
भ्रम की प्रबल ताई ॥ भूतनि में भूत मिलि भूत हो
यर त्यो हे ॥ १ ॥ ॥ जैसे सुकनसिकान छांडि देत पगनि
तें ॥ जाने काहु ओर मोही बांधि लटकायो हे ॥ जैसे
हुं पिपुंजनि को ढेर करि माने आग ॥ आग घरी ताप

कछूसीतनगमायोहे ॥ जेसेकोऊ कारजकोजा-
 तहुतो पूरव कौं, भ्रमतेउलटिफिरी पछिम कौआ
 योहे ॥ तेसेही सुंदर सब आपही कों भ्रम भयो आ
 पही को भूल करि आपही बंधा योहे ॥ १० ॥ जेसेको
 उकामनिकेहिये परचू पैचाल, स्वप्नेमें कहै मेरोपु
 न कहगयोहे ॥ जेसेकाहु पुरुषके कंठहुती मनमोही
 दूदत फिरत कछू ऐसो भ्रम भयोहैं ॥ जेसेको उबा
 यु करि बावरो बकत डोल, ओरही की ओर कहै स-
 धि भूलि गयोहे ॥ तेसेही सुंदर निजरूप कों बिछा
 रि देत ऐसो भ्रम आपही को आप करिल त्योंहे ॥ ११
 दिन दिन छिन छिन होइ जात भिन्न भिन्न, देहके सं-
 जोग पराधीन सो रहतुहे ॥ सीतलगे घामलगे भू
 षलगे प्यासलगे, शोक मोह मान अतिषेद कों लहतु
 हे ॥ अंध भयो पंगु भयो मूक हू बधिर भयो, ऐसे-
 मानी मानी भ्रम नदीमें वहतुहे ॥ सुंदर अधिक मो
 हिया ही ते अचंभा अहि, भूलिके स्वरूप को अना-
 थ सो कहतुहे ॥ १२ ॥ जेसे कोई कहै मे तो स्वप्नेमें
 ऊठ भयो, जागि करि देषे उही मनुष स्वरूपहे ॥ जे
 से कोई एजा पुनि सो वत भिषारी होइ, आप उध

(१२०)

सुंदरविलास.

अं. २६

रेतोमहाभूपनिकोभूपहे ॥ जैसेकोउभमहूतेंक
हेमेरोसिरकहां। भ्रमकेगयेतेंजानेसिरतदरूपहे
॥ तेसेहीसुंदरयहभ्रमकरिभूल्योआप। भ्रमके
गएतेंयहआतमाअनूपहे ॥ १३ ॥ जैसेकोईपोस
तकीपागपडीभौमोपर, हाथलेकेकहेएकपागमें
तोपाईहे ॥ जैसेषसलीमनोरथनिकोकीघोघर
कहेमेरोघरगयोगागरीगिराइहे ॥ जैसेकाहुभूत
लग्योवकतहैआकवाक, सुद्धिसबदूरभईऔरे
मतिआइहे ॥ तेसेहीसुंदरयहभ्रमकरिभूल्यो-
आप, भ्रमकेगएतेंयहआतमासदाईहे ॥ १४ ॥
आपहीचेतनयहइंद्रिचेतनकर, आपुहीमग-
नहोइआनंदवदायोहे ॥ जैसेनरसीतकालसोचत-
निहालिओढै, आपहीतपतहोइआपसुषपायोहे
॥ जैसेवाललकरिकोघोराकरिडाकचढै, आप
असवारहोइआपहीकुदायोहे ॥ तेसेहीसुंदरय
हजडकोसंजोगपाय, आपसुषमानिमानिआप
हीभुलायोहे ॥ १५ ॥ कहूंभूल्योकामरतकहूंभूल्यो
साधीजत, कहूंभूल्योग्रहमध्यकहूंवनवासी
हे ॥ कहूंभूल्योनीचमानकहूंभूल्योउंचमानि,

कहं भूत्यो मोह बांधिक हंतो उदासी हे ॥ कहं भूत्यो
 मोन धरि कहं बकवाद करि कहं भूत्यो मके जाय कहं
 भूत्यो काशी हे ॥ कहत सुंदर अहंकार हते भूत्यो आ
 प, एक आ वेरोन अरु दूजे आवे हांसी हे ॥ १६ ॥ में ब-
 हुत दुष पायो में बहुत सुष पायो, में अनंत पुन्य की
 ये मेरे अति पाप हे ॥ मै कुलीन विद्यावंत पंडित प्रवी
 न महा, मै तो मूठ अकुलीन मेरे नीच वाप हे ॥ मै हो-
 राजा मेरी आणा फिरे चहुं चक्र मांहीं ॥ मै हों रंक द्रव्य ही
 न मोही तो संताप हे ॥ सुंदर कहत अहंकार ही ते-
 जीव भयो, अहंकार गये यह एक ब्रह्म आप हे ॥ १७
 ॥ देह ई संपुष्ट लगे देह ई दूबरी लगे, देह ई को सो
 त लगे देह ही को तावरो ॥ देह ई को तीर लगे देह ई को
 तो प लगे, देह को कपान लगे देह ही को धावरो ॥ देह ई
 स्वरूप लगे देह ई कुरूप लगे, देह ई जोवन लगे देह
 चढ़ावरो ॥ देह ई सो बांधी हेत आप विषे मानो ले
 त, सुंदर कहते ऐ सो बुधि वावरो ॥ १८ ॥ ॥ छंद
 इदव ॥ ॥ आप ही चेतन ब्रह्म अपंडित, सो भ्र-
 मते कछु अभ्र परे ॥ दंत ताहि फिरे जित ही ति-
 त, साधत जोग वनावन भैषे ॥ और उकष्ट करे अ-

तिसैंकर, प्रत्यक्षआतमतत्वनपेधें ॥ सुंदरभूल
 गणनिजरूपहि, हैंकरकेकनदर्पनदेधें ॥ १९ ॥ सूत्र
 लगेमहिमेलिभयोद्विज, ब्राह्मनहोयकेब्रह्मन-
 जान्यो ॥ क्षत्रियहोयकेक्षत्रधखोशिर, हयगजप
 यदलसोंमनमान्यो ॥ वैश्यभयोवपुकीवयदेध-
 तज्ज्वलप्रपंचवनीजहिठान्यो ॥ सूद्रभयोमिलिसू-
 दसरीरहि, सुंदरआपनहोंपंहिचान्यो ॥ २० ॥ ज्यौ
 रविकौरविदुंदतहेकहुं, ततलगेतनशीनगमा
 ऊं ॥ ज्यौंससिकौंससिचाहतहेपुनि, सीतलकै
 करितसबुजाऊं ॥ ज्यौंसनिपातभएनरेतर, है
 घरमेंआपुनेघरजाऊं ॥ त्योंयहसुंदरभूलिस्व-
 रूपहि, ब्रह्मकहेसबब्रह्महिपाऊं ॥ २१ ॥ आ-
 पुनदेधतहेअपनोमुष, दर्पनकाटलग्योअतिथू-
 ला ॥ ज्यौंद्रगदेधततेरहिजातभ, योंजबहीपुतरी
 परिफूला ॥ छायाअज्ञानरख्योअतिअंतर, जा-
 निसकेनहिआतममूला ॥ सुंदरयोउपज्योमन
 केवल, शानविनानिजरूपहिभूला ॥ २२ ॥ दीन
 हुअोविललातफिरेनित, इद्रिनकेवसछिलकछो-
 ले ॥ सिंघनहीअपनोबलजानत, जंबुकज्यों-

जितहीतितडोले ॥ चैतनताविसराइनिरंतरले
 भ्रमताजडगांठनषोले ॥ सुंदरभूलगयोनिजरू
 पहि, देहस्वरूपभयोमुषवोले ॥ २३ ॥ मैकषिया-
 कषसेजकषासन, हयगजभोमिमहारजधानी ॥
 होदुषियादिनरैनमरोंदुष, मोहिविपत्तिपरीनहिछा
 नी ॥ हौं अतिउत्तमजातिबडोकुल, हौं अतिनीच
 कियाकुलहानी ॥ सुंदरचैतनतानसंभारत देहस्व
 रूपभयोअभिमानि ॥ २४ ॥ गर्भविषेउतपत्तिभ-
 ईजबजन्मलियोसिकसुहृन्जानी ॥ बालकुवार
 किसोरजुवादिक, चड्ढभयोअतिबुद्धिनसानी ॥ जै
 सेहीभांतिभईचपुकीगति, तेसोईहोइरत्नोयह
 प्रानी ॥ सुंदरचैतनतानसंभारत, देहस्वरूपभयो
 अभिमानि ॥ २५ ॥ ज्योंकोइत्यागकरेअपनोधर
 वाहिरजायकेभेषबनावै ॥ मुंडमंडायकेकानफरा
 य, चभुतीलगायजटाउवढावे ॥ जैसोईस्वांगक
 रेचपुकोपुनि तैसोहीमानतत्पुंहोयजावे ॥ त्योंय-
 हसुंदरआपनजानत, भूलिस्वरूपहिओरकहावे ॥ २६
 ॥ ॥ इतिस्वरूपविस्मरणकोअंगसमाप्तः ॥ ॥
 अथविचारकोअंगप्रारंभः ॥ ॥ छंदमनह

र॥ ॥ प्रथमश्रवनकरिचित्तएकाग्रहिधरिः गु-
 रुसंतं अगमकहेसउरधारिये ॥ दुतियमननवार-
 वारहीविचारिदेपे जोइकच्छूस्नताहिफेरकेसंभारी
 ये ॥ तृतीयप्रकारनिदिध्यासहिजुनिकेकरिः नि-
 हसंगविचारेतेआपुनपोतारिये ॥ तेसेहीसाक्षात्
 याहीसाधनकरतहोइः सुंदरकहतहैतबुधिको-
 निचारिये ॥ १॥ देखेतोविचारकरिस्ननेतोविचार
 करि बोलेतोविचारकरिकरेतोविचारहे ॥ षाडतो-
 विचारकरिपीवतोविचारकरि सोवेतोविचारकरि
 जागतोनदारहे ॥ बेठेतोविचारकरिउठेतोविचारक-
 रिः चलेतोविचारकरिसोइमंतसारहे ॥ देइतोवि-
 चारकरिलेइतोविचारकरिसुंदरविचारकरयाही
 निरधारहे ॥ २॥ एकहीविचारकरिस्वपदुषसम
 जानेः एकहीविचारकरिमलसबधोइये ॥ एक-
 हीविचारकरिसंसारसमुद्रतरेः एकहीविचारकरि
 पारंगतिहोइये ॥ एकहीविचारकरिबुधिनानाभाव
 तजेः एकहीविचारकरिदूसरोनकोइहे ॥ एकही
 विचारकरिसुंदरसदेहमिटेः एकहीविचारकरि
 एकब्रह्मजोइहे ॥ ३॥ ॥ छंदइदव ॥ ॥

रूपकोनासभयो कच्छुदेषिये, रूपत्ररूपहिमां हि
 समावे ॥ रूपकेमध्यत्ररूपत्रषंडित, सोतो कहुंक
 छुंजोइनआवे ॥ बीचअज्ञानभयो नवतत्वको, वेद
 पुरानसवेको इगावे ॥ सोइविचारकरेजवसुंदर,
 सोधतताहिकहुनहिपावे ॥ ४ ॥ भूमिसुतो नहिगंध
 कोछांठव, नीरसुतो रसतेनहि न्यारो ॥ तेजसुतो
 मिलिरूपरतयो पुनि, वायुसपर्ससदा सुषियारो ॥
 बोमरुशब्दजुदनहि होवत ऐसेही अंतहकरनवि
 चारो ॥ एनवतत्वमिलेइनतत्वनि, सुंदरभिन्नस्य
 रूपहमारो ॥ ५ ॥ क्षीनरुपुष्टशरीरको धर्मजु, सी
 तहुउणजरा मृतठाने ॥ भूषतृषागुनप्रातकों व्याप
 त, सोकरुमोहउभेंमनआने ॥ बुद्धिविचारकरेनि
 तवीसर, चित्तचितेसुअहंअभिमाने ॥ सर्वको
 प्रेरकसर्वकोसाषिजु, सुंदरआपकों न्यारोहिजा
 ने ॥ ६ ॥ एकहि कूपतेनीरहि सींचत, इषअफी
 महिअंबअनारा ॥ होतउहेजल स्वादअनेकनिमि
 षकटूकषटाअरुषारा ॥ त्योंहीउपाधिसंजोगतेंआ
 तम, दीसतआहि मिल्यो सविकारा ॥ काढलि
 येसुविवेकविचारसो सुंदरसुद्धस्वरूपहेन्यारो

॥७॥ रूपपराकोनजानेकछु, ऊठतहेजैहिमुल
 तेंछांनी ॥ नाभिविषेमिलिसमकियेस्वर पुरुषसं
 जोगपश्यंतिबरवानी ॥ नादसंजोगत्तदे पुनिकं
 ठजु, मध्यमयाहीबिचारतेजानी ॥ अक्षरभे-
 दामिलेमुषहारसं, बोलतसुंदरबैरगारिवानी ॥८॥
 ज्योंकोईरोगभयो नरकेघट, बैदकहेयहवायुवि-
 कारा ॥ कोउकहेग्रहआइलगेतातें, पुन्यकिये
 कछुहोइउवारा ॥ कोइकहेयहचूकपरीकछु, दे-
 वनिदोसकियोनिरधारा ॥ तेसेहीसुंदरतंत्रनि-
 केमत, भिन्नहीभिन्नकहेजुविचारा ॥९॥ जेवि-
 षयातमपूरसहेतिन, कोरुजनीमहिवादरछायो
 ॥ कोउमुमुक्षुकियेगुरुदेवतो, निर्भययुक्तजुशब्द-
 सुनायो ॥ वादरदूरभयोउनकेपुनि, तारनिसों
 रजुसर्पदिषायो ॥ सुंदरसूरप्रकासतहीभ्रम, दू-
 रभयोरजुकोरजुपापो ॥१०॥ कर्मसुभासुभकी
 रजनीपुनि, अर्धतमोमयअर्धउजारी ॥ भक्तिसो
 तोयहहैअरुनोदय, अंतनिसादिनसंधिविचा-
 री ॥ ज्ञानसोभानुउदेनिसवासर, वेदपुरानकहे-
 जुपुकारी ॥ सुंदरतीनप्रभाववधानत, योनिहवे

समजैविधिसारी ॥ ११ ॥ ॥ छंदमनहर ॥ ॥
 देहहीसोंआपमानिदेहहीसोंहोइरत्यो, जडताआ
 ज्ञानतमसूद्रसोईजानिये ॥ इंद्रीनकेव्यापारनिअ-
 त्यंतनिपुनबुद्धि, तमरजदुहुंकरिवैश्यहप्रमानि
 ये ॥ अंतःकरनमांहीअहंकारबुधिजाके, रजोगु
 नवर्धमानक्षत्रीपहिचानिये ॥ सत्वगुनबुद्धिए-
 कआतमाविचारजाके ॥ सुंदरकंहतबहीब्राह्म
 नवषानिये ॥ १२ ॥ आतमाकेविषेदेहआईकरिना
 सहोइ, आतमाअषंडसदाएकईरहतुहे ॥ जैसे
 सापकचुकीकौलीयेरहेकोऊदिन, जीरनउतार
 करिनौतनगहतुहे ॥ जैसेहुमहूकेपत्रफूलफलआ
 ईहोत, तिनकेगयतेद्रुमओरउलहतुहै ॥ जैसेच्योम
 मांहीअबहोइकेविलाइजात, ऐसाहीविचारकरि
 सुंदरकहतुहैं ॥ १३ ॥ षरीकीडरीसोंअकलिषतवि-
 चारीयत, लिषतलिषतवहीडरीधसिजातुहे ॥ लेषो
 समज्योहेजबसमुझपरीहेतबजोइकछूसहीभयो
 सोईठहरातुहैं ॥ दारहीसोंदारमधिप्रगटपावक-
 भयो, वहेदारजारीपुनिपावकसमातुहैं ॥ तेसे
 हीसुंदरबुद्धिब्रह्मकोविचारकरि, करतकरतच-

हबुद्धिहुविलातुहे ॥१४॥ आपुकोसमुद्रदेपोआ-
 पुहीसकलमाहिं ॥ आपुहीमेंसकलजगतदेपि
 यतुहे ॥ जेसेव्योमव्यापकअषडपरिपूरनहे ॥ बादल
 अनेकनानारूपलेपियतुहे ॥ जेसेभोमीघटजलतरंग
 पावकदीप, वायुमेंबधूरासोईविश्वरेपियतुहे ॥ ऐसे
 हीविचारतेंविचारतेंहूलीनहोइ, सुंदरहीसुंदर-
 हितपेपीयतुहे ॥१५॥ देहकोसंजोगपाइजीवऐसो
 नामभयो ॥ घटकेसंजोगघटाकासही कहायोहे
 ॥ ईश्वरहीसकलविराटमेंविराजमान, मठकेसंजो
 गमठाकासनामपायोहे ॥ महाकासमांहीसब-
 घटमठदेपियत, बाहीरभीतरएकगगनसमायो-
 हें ॥ तेसेहीसुंदरब्रह्मईश्वरअनेकजीव, विविध
 उपाधिजीवग्रंथनिमेंगायोहें ॥१६॥ ॥प्रश्न॥
 देहदुषपावेकिधोंइंद्रीदुषपावेकिधो, प्रानदुषपा
 वेकिधो, लहनाहारको ॥ मनदुषपावेकिधोबुधि
 दुषपावेकिधों, चित्तदुषपावेकिधोंदुषअहंकार
 को ॥ गुणदुषपावेकिधोंओत्रदुषपावेकिधों, प्र-
 कृतिदुषपावेकिधोपुरुषआधारकोसुंदरपूछ
 तकछूजानिनपरततातें, कौनदुषपावेगुरुकहायो-

विचारकों ॥ १७ ॥ उत्तर ॥ ॥ देहकों तो दुषना-
 हि देह पंचभूतनिकी ॥ इंद्रानकों दुषना हि दुषना ही
 प्रानकों ॥ मनहूकों दुषना हि बुद्धिहूकों दुषना ही ॥
 चित्तहूकों दुषना ही नाही अभिमानकों ॥ गुननिको
 दुषना ही आत्रहूको दुषना ही ॥ प्रकृतिको दुषना
 ही दुषन पुमानको ॥ सुंदर विचारों से शिष्यको क
 हत गुरु, दुष एक देषीयत बीच के अज्ञानकों ॥ १८
 ॥ प्रथमी भाजन अंग कनक कटक पुनि, जलही
 तरंग दो उदेरवी करि मानीये ॥ कारन का रज ए तो-
 प्रगट ही मूल रूप, ताही ते निजर माहि देषी करि
 आनीये ॥ पावक पवन व्योम ए ते न हि देषियत,
 दीपक बधूरा अत्र प्रतक्ष वधानिये ॥ आतमा अरू
 प अति सूक्ष्म ते सूक्ष्म हे, सुंदर कारन ताते देह से
 न जानिये ॥ १९ ॥ जैन मत उहै जिन राज को न भूलि
 जाय ॥ दानत पसील सत नां वनां ते तस्थि ॥ मन व
 च काय सुहृद सब सो दयाल रहे, दोष बुद्धि दूर करि
 दया उर धरिये ॥ बोधना मत बजब मन को निरो-
 ध होइ, बोध के विचार सोध आतमा को करिये ॥
 सुंदर कहत ऐसे जीवन ही मुक्त होइ, सुखो मुक्त

तकहेताकोपरिहरिये ॥ २० ॥ देहचोरदेषियेतोदे-
 हपंचभूतनिको ब्रह्मचरुकीटलगदेहइप्रधान
 हे ॥ प्रानवोरदेषियेतोप्रानसबहीकोएक, स्थान-
 पुनित्रषादोउव्यापतसमानहे ॥ मनषोरदेषिये-
 तोमनकोस्वभावएक, संकल्पविकल्पकरेसदा
 इअज्ञानहे ॥ आतमाविचारकीयेआतमाही
 दीसेएक, सुन्दरकहतकोउदूसरोनआनहे ॥ २१ ॥
 ॥ इतिविचारकोअंगसमाप्त ॥ २७ ॥
 ॥ अथब्रह्मनिष्कलंककोअंगप्रारंभः ॥ २८ ॥
 छंदमनहरे ॥ ॥ एककोउदातागायब्राह्मनको
 देतदान ॥ एककोउदयाहीनमारतनिसंकहे ॥ ए-
 ककोइतपस्वीतपस्यामाहीसाविधान, एकको
 उकामक्रीडाकामनिकोअकहे ॥ एककोउरूपव-
 तअधिकविराजमान, एककोउकोटिकोटचूवत
 करंकहे ॥ आरसीमेंप्रतिबिंबसबहीकोदेषिये-
 त, सुन्दरकहतऐसेब्रह्मनिकलंकहे ॥ २९ ॥ र-
 विकेप्रकासतेप्रकासहोतनेत्रनिको ॥ सबको
 उमुभासभकर्मकोकरतुहे ॥ कोऊजग्यदानतप
 जपनेमव्रतकोऊ, इंद्रिवसकरिकोउध्यानकोध-

रतुहें ॥ कोऊपरदारापरधनकौंतकतजाइ, कोउ
 हिंसाकरिकरिउदरभरतुहें ॥ सुंदरकहतब्रह्मसा
 क्षीरूपएकरसयाहीमैंउपजिकरिवाहीमेभरतु-
 हैं ॥ २ ॥ जैसेजलजंतुजलहीमैंउतपनहोय, जल
 हीमैंविचरतजलकेअधारहे ॥ जलहीमेक्रीडा
 करिविविधविवहारहोत ॥ कामक्रोधलोभमोह
 जलमेंसंहारहैं ॥ जलकौनलागेकछुजीवनकेरा-
 गदोष, उनहीकेक्रियाकर्मउनहीकीलारहैं ॥ नेते
 हीसुंदरयहब्रह्ममेजगतसब, ब्रह्मकूँनलागेकछु
 जगतविकारहैं ॥ ३ ॥ स्वेदजजरायुजअंडजउद्भि-
 जपुनि, चारषानतिनकेचोरासीलषजंतुहैं ॥ जलच
 रथलचरत्योमचराभिन्नभिन्न, देहपंचभूतनि-
 कीउपजीवयतुहै ॥ सीतधामपवनगगनमेचल
 तआइ, गगनअलिसजामेमेघहअनंतहे ॥ ते
 सेहीसुंदरयहसृष्टिसबब्रह्ममांहि, ब्रह्मनिकलं
 कसदाजानतमहतहे ॥ ४ ॥ ॥ इतिब्रह्म-
 निः कलंककौअंगसमाप्तः ॥ २८ ॥ ॥
 ॥ अथआत्माअनुभवकोअंगप्रारंभः ॥ ॥
 छंदइदव ॥ ॥ हृदिलमेदिलदारसही, अषि

पाउलटी करिता हि चितैये ॥ आपमें पाक मेवाद मे
 आतस जान मे सुंदर जानि जनैये ॥ नूर मे नूर हे ते
 ज मे ते ज हे जोति मे जोति मिले मिलि जैये ॥ क्यो
 कहिये कहने न बने कछु ॥ ज्यो कहिये कहते हिल जै
 ये ॥ १ ॥ जो कहै हि सव मे वह एक तो सो कहै के
 सो हे आपि दिखैये ॥ जो कहै रूप न रेखि से कछु
 तो सबजू ठाकि माने इक इये ॥ जो कहै सुंदर ने न नि
 मांज तो ने न हुवे न गये पुन हैये ॥ क्या कहिये कह
 ते न बने कछु ॥ जो कहिये कहते हिल जैये ॥ २ ॥ होत
 विनोद जितो अभि अंतर सो सख आप मे आप हि
 पैये ॥ बाहिर को उमग्यो पुनि आवत कंठ ते सुंदर
 फेर पठैये ॥ स्वाद निवैर निवेस्यो न जातहु मानहु गु
 ड गुंगे नित पैये ॥ क्या कहिये कहते न बने कछु जा
 कहिये कहते हिल जैये ॥ ३ ॥ व्योम को व्योम आनंत
 अषाडित आदिन अंत स मध्य कहा है ॥ को पर
 मान करे परि पूरन दैत अद्वैत कछु न जहां है ॥ कार
 न का रज भेद न ही कछु आप में आप ही आप त
 हां है ॥ सुंदर दी सत सुंदर माहि सं सुंदर ताक
 हि कौन उहां है ॥ ४ ॥ एक के दो इन एक न दो ई उही की

इहीनउहीनइहीहें॥सून्यकेस्थूलनशून्यनस्थूल
 जिहिकितिहीनजिहिनतिहीहे॥मलकीडालनमू
 लनडाल,बहोकीमहीनबहीनमहीहे॥जीवके
 ब्रह्मनजीवनब्रह्मतो,हेकेनहीकछुहेननहीहे
 ॥५॥एककहंतोअनेकसोदीसत,एकअनेकन
 नहीकछुऐसो॥आदिकहंतहांअंतहूआवनआ
 दिनअतनमध्यसोकैसो॥गोप्यकहंतोअगोप्य
 कहांयह,गोप्यअगोप्यनऊभोनवैसो॥जोइनह
 सोइहेनहिसुंदर,हेतोसहीपरिजेसोकोतैसो॥
 ६॥ ॥छंदमनहर॥ ॥एककोकहेजोकहुं
 एकहीप्रकासतहें॥दोउकोकहेजुकोउदूसरोउद-
 षीये॥अनेककहेजुकोउअनेकअभासेताही,जाके
 जेसोभावतेसोताकोइविसेषीये॥वचनविलास
 कोउकेसेहीवषानेकहो,व्योममाहीचित्रकहोकेसे
 करिलेषीये॥अनुभवकीयेएकदोयनअनेककछु
 सुंदरकहतज्योहैंत्योंहीताहीपेसीये॥७॥बचनई
 वदविधिवचनईशास्त्रपुनि,वचनसमृतिअरुवचन
 पुरानजु॥वचनईओरअथवचनईव्याकरणवचन-
 ईकाव्यछंदनाटकवषानजू॥वचनईसंसकृतवच

नईपराकृत, वचनईभाषासबजगतमेंज्ञानजु॥
 वचनकेपरेहेसोवचनमेंआवेनहीं, सुंदरकहतब-
 हीअनुभोप्रमानजु॥ ८॥ इंदिनहोजानीसके-
 अल्पज्ञानइंदीनोको, प्रानहनजानीसकेस्वास-
 आगेजाइहें॥ मनहनजानिसकेसंकल्पविक-
 ल्यकरे, बुधिहनजानिसकेसन्धोतबताहीहे॥ चित्त
 अहंकारपुनिएकहनजानिसकेशब्दहनजानिम-
 कैअनुमानपाइहें॥ सुंदरकहतनाहीकोउनही
 जानिसकै॥ दीवाकरदेपीयेसुऐसीनहिलाइहे
 ॥ ९॥ ॥ छंदइंदव॥ ॥ श्रोत्रनजानत-
 चक्षुनजानतनाहीजुसंधतघाने॥ जानिसपर्ष
 तुचानसकेपुनि, जानतनाहिनजीभवधाने॥
 मंत्रनजानतबुद्धिनजानतचित्तअहंकारक्योंप
 हिचाने॥ सुंदरशब्दहुजानिसकेनहि, आतमआ-
 पकोआपहिजाने॥ १०॥ सूरकेतेजतेसूरजदीस
 तनचंद्रकेतेजतेचंद्रउजासे॥ तारेकेतेजतेतारेउदी
 सतविजुलतेजतेविजुप्रकासे॥ दीपकेतेजते
 दीपकदीसतहीरेकेतेजतेहीरेईभासे॥ तेसेई
 सुंदरआतमजानहु, आपकेज्ञानतेआपयका

सैं ॥ ११ ॥ कोउ कहै यह सृष्टि स्वभाव ते, कोउ कहै
 यह कर्म ते सृष्टी ॥ कोउ कहै यह काल उपावत,
 कोउ कहै यह ईश्वर तिष्टी ॥ कोउ कहै यह ऐसे हि हो
 वत, क्यों कर मानीये वात अनिष्टी ॥ सुंदर एक की
 ये अनुभव विन, जानि सके नहि वात्स्य हि सृष्टी ॥
 ॥ १२ ॥ कोउ तो मोक्ष आकास वतावत, कोउ तो मो
 क्ष पताल के माहीं ॥ कोउ तो मोक्ष कहै मथनी पर, को
 उ कहै कहूँ और कहाँ ही ॥ कोउ बतावत मोक्ष शिलात
 र कोउ क मोक्ष मिटे पर छाहीं ॥ सुंदर आतम के अ
 नुभौ विन, और कहूँ कोइ मोक्ष इनाही ॥ १३ ॥ मूए ते
 मोक्ष कहै सब पंडित, मूए ते मोक्ष कहै पुनि जैना
 ॥ मूए ते मोक्ष कहै ऋषि तापस, मूए ते मोक्ष कहै सि
 व सैना ॥ मूए त मोक्ष मले छ कहै तेहु, धोषे ही धोषे ब
 षानत बैना ॥ सुंदर आतम को अनुभव सोई जीव
 त मोक्ष सदा सुख चैना ॥ १४ ॥ ॥ छंद मनहर ॥
 ॥ कोउ तो कहत ब्रह्म नाभिके कमल मध्य को
 उ तो कहत ब्रह्म तट में प्रकास हैं ॥ कोउ तो कहत ब्र
 ह्म नाशिके अग्र भाग, कोउ तो कहत ब्रह्म भृकुटी में
 वास है ॥ कोउ तो कहत ब्रह्म दस मेदुवारि बीच, कोउ

तो कहत ब्रह्मगुफामें निवास हैं ॥ पिंड ते ब्रह्मंड ते
 निरंतर विराजे ब्रह्मा सुंदर अषड्जैसे व्यापक आका
 सहे ॥ १५ ॥ पां वजिनग्रत्यो सो तो कहत हैं ऊपर सों पू
 छजिनग्रत्यो तिन लाव सो सनाये हैं ॥ सूदजिनग्र
 ही तिन दगले कीवां ह कहो, दंतजिनग्रत्यो तिन भू
 सर दिषायो हे ॥ कानजिनग्रत्यो तिन सू पसों बना
 यकत्यो, पीरजिनग्रही तिन भीटोरावताये हैं ॥ जे
 सो हे ते सो ही ताही सुंदर सुअस्ती जाने आधरे हा
 थि देषी जगरो मचायो हे ॥ १६ ॥ न्यायशास्त्र कहत
 हे प्रगट ईश्वरवाद, मिमांसाई शास्त्र मांही कर्म
 वादकत्यो हे ॥ विशेषिकशास्त्र पुनिकालबादी
 हे प्रसिद्ध, पातांजलिशास्त्र मांही जोगवाद ल
 त्यो हे ॥ सारव्यशास्त्र मांही पुनि प्रकृतिपुरुष वा
 द, वेदांतकशास्त्र तीन ब्रह्मवादकत्यो हे ॥ सुंद
 र कहत षट्शास्त्र मांही भयो वाद जाके अनुभ
 वज्ञानवाद में नवत्यो हैं ॥ १७ ॥ प्रज्ञान आनंद ब्र
 ह्म ऐ सो अग्वेद कहै, अहं ब्रह्म अस्मि इति यजुर्वेद
 यो कहै ॥ तत्त्वमसि इति सामवेद्यों वषानत हे ॥
 अग्न्यात्मा ब्रह्म कहि अथर्वण्यों लहे ॥ एक ए-

कवचनमेतीनपदहेप्रसिद्ध, तीनकोविचारक
 रीअर्थतत्त्वकोगहे ॥ चारवेदभिन्नभिन्नसबकोसि
 द्धान्तएकसुंदरसमझिकरिचुपचापहोरहे ॥ १८ ॥
 इद्वितकेभागजबचाहेतबआयरहे ॥ नाशवतता
 तेतुछानंदयोंसुनायेहे ॥ देवलोकइंद्रलोकविधि
 लोकशिवलोक, वैकुण्ठकेरूपलोगाणितानंदगा
 योहे ॥ अक्षयअषडैकरसपरिपूरनहे, ताही
 तेपूर्णनंदअनुभौतेपायोहे ॥ याहीकेअंतरभू
 तआनंदजहांलौंऔर, सुंदरसमुद्रमाहींसर्पज
 लआयोहे ॥ १९ ॥ एकतोमायाविलासजगतप्रपं
 चयह, चारबानिभेदपायहैतभासरत्योहे ॥ दूस
 रोविषैविलासइंद्रानिकेविषेपंचसब्दसपरसरू
 परसगंधगत्योहैं ॥ तीसरोचाचाविलाससोतोस
 बवेदमाहि, बणिकेजहांलगिवचनतेकत्योहे ॥
 चौथोब्रह्मकोविलासतिहुंकोअभावजहांसुंदर
 कहतवहअनुभौतेलत्योहे ॥ २० ॥ जीवतहीदेव
 लोकजीवतहीइंद्रलोकजीवतहीजनतपसत्य
 लोकआयाहै ॥ जीवतहीविधिलोकजीवतहीशि
 वलोकजीवतवैकुण्ठलोकज्योंअकुंठगायोहै ॥

जीवतहीमोक्षशिलाजीवतहीभिस्तमाहीं, जीवत
हीनिकरपरमपदपायेहैं॥ आतमाकौं अनुभवजि
नकौं जीवत भयो, सुंदर कहत तिन संशय मिटायेहे
॥ २१ ॥ क्षिति भ्रम जल भ्रम पावक पवन भ्रम, व्यो
म भ्रम तिनको शरीर भ्रम मानीये ॥ इंद्रि दस ते उ-
भमे अंतह करन भ्रम गति नही को देवता सो भ्रम
तेवषानीये ॥ सतरजतम भ्रम पुनि अहकार भ्रम-
महत्त्व प्रकृति पुरुष भ्रम मानीये ॥ जो ईक छु कहि
येसू सुंदर सकल भ्रम, अनुभव किये एक आतमा
ही जानिये ॥ २२ ॥ भोमी हू विलीन होई आप हू
विलीन होई, तेज हू विलीन होई वायु जो वह तुहे ॥
व्योम हू विलीन होई त्रिगुन विलीन होई, शब्द हू-
विलीन होई अह जो कहतुहें ॥ महत्त्व लीन होई प्र-
कृति विलीन होई, पुरुष विलीन होई देह जो गहतु
हैं ॥ सुंदर सकल लोक कहिये सुलीन होई, आत
मा किं अनुभव आतमा रहतुहे ॥ २३ ॥ माया की अ-
पेक्षा ब्रह्म रात्रि की अपेक्षा दिन जड की अपेक्षा क-
री चैतन वषानीये ॥ अज्ञान अपेक्षा ज्ञान बंध की-
अपेक्षा मोक्ष, द्वैत की अपेक्षा सो तो अद्वैत प्रमा

नीये ॥ दुषकी अपेक्षा सुषपापकी अपेक्षा पुनि
 मूढकी अपेक्षा ताही सत्य करि मानीये ॥ संद-
 रसकलयह वचन विलास भ्रम, वचन रहित अब-
 चन सोई जानीये ॥ २४ ॥ आतमा कहत गुरु सु-
 निर्बधनित, सत्य करि माने सो तो शब्द प्रमान हे ॥
 जैसे व्योम व्यापक अषड् परि पूरन हे ॥ व्योम उपमा
 ते उपमान सो प्रमान हे ॥ जाकी सता पाय सब ई-
 द्रिय चैतन्य होइ ॥ याही उपमा ते उपमेय उपमान हे
 ॥ अनुभव जानत बसकल संदेह मिटे ॥ सुंदर कहं-
 त यह प्रतक्ष प्रमान हे ॥ २५ ॥ एक घर दो घर ती-
 न घर चार घर, पंच घर तजेत त्व छठो घर पाइये ॥
 एक एक घर के आधार एक एक घर, एक घर निराधा-
 र आपई दिषाइये ॥ सौ तो घर साक्षी रूप घर घर में
 अनूप, ताहू घर मध्य को उदिन ठहराइये ॥ ताके
 परे साक्षीन असाक्षीन सुंदर कछू, वचन अती-
 तक हूं आई हेन जाइये ॥ २६ ॥ एक तो अवन ज्ञान पा-
 वक ज्यौ देखीयत, माया जल पर सतु वेग बूझि जा-
 त हे ॥ एक हे मनन ज्ञान बिजुली ज्यौ घन मध्य
 माया जल बरषत तामें न बुझात हे ॥ एक निदिध्या

सज्ञानबडवाअनलजेसे प्रगतसमुद्रमाहीमाया
 जलषातुहे॥ अनुभौसाक्षाज्ञानप्रलयकिअग्निसम
 सुंदरकहतहैतप्रपचविलातहे॥ २७॥ भोजनकीवात
 सुनिमनमेंमुद्रितभयो, मुषमेनपरेज्यौलोमेंलियेनग्रा
 सहें॥ सकलसामग्रीआनिपाककौंकरनलागो, मनन
 करतकबजीमेहाएआसहे॥ पावकजबभयोतबभो
 जनकरनेवेगो, मुषमेंमेलतजाईयहनिदध्यासहें॥
 भोजनपूजनकरिअपतिभयोहेजबसुंदरसाक्षात्का
 रअनुभौप्रकासहे॥ २८॥ अवनकरतजबसबसोंउ
 दासहोईचित्तएकग्रहआनिगुरुमुषस्तनिये॥ बैठि
 केएकांतठोरअतहकरनमांही, नमनकरतफेरउहेज्ञा
 नगुनिये॥ ब्रह्मअपरोक्षजानीकहतहेअहब्रह्म,
 सोईसोहंहोईसदानिदध्यासधुनिये॥ सुंदरसाक्षा
 त्कारकीवहीतेहोईभगवतहअनुभवयहस्वस्वरूप
 मनिये॥ २९॥ जबहीजग्यासहोईचित्तएकठोरआनि
 मृगज्यौंसुनतनादअवनसोंकहिये॥ जसेत्वातबुंदहू
 कोचात्रकरततपुनिऐसेहीमननकरेकबबुंदलाहिये॥
 रात्रिकोचकोरजेसेचंद्रमाकोधरेध्यान, ऐसैजानिनि
 दध्यासरटकरिग्रहिये॥ यहअनुभवयहेकहियेसा-

क्षातकारः सुंदरपोरेतेंगलपानी होइ रहिये ॥ ३० ॥ का
 हूको पूंछतरंकधनकेसे पाइयत, कानदेके सुनत श्रव
 नसोई जानिये ॥ उनकस्यो धन हम देख्यो हे फलानी ठो
 र मिनन करत भयो कब धर आनिये ॥ फेरजब कस्यो-
 धन गत्यो तेरे मांहीं, पोदन लग्यो हेत बनिदिध्यास रा
 निये ॥ धन निकस्यो हे जब दरिद्र गयो हेत ब, सुंदर सा
 क्षात्कार तृपति बषानिये ॥ ३१ ॥ चकमक ठोके ते चमत
 कार होत कछु, ऐसे ही श्रवन ज्ञानत बही लों जानिये ॥
 सोषता मेलगे जब प्रगटे पावक ज्ञान, सिलगत जाईव
 हमनन वषानिये ॥ वर्धमान भएका उकर्म निकों जराव
 त, इहिं निदिध्यास ज्ञान ग्रंथ निमेंगानिये ॥ सकल प्रपं
 च यह जरि कै समाई जात, सुंदर कहत वह अनुभौ प्र-
 मानिये ॥ ३२ ॥ ॥ इति आत्म अनुभव को अंग समा
 सः ॥ २६ ॥ ॥ अथ ज्ञान को अंग प्रारंभः ॥ ॥
 छंद मनहरा ॥ श्रवन सुनत मुख बोलत बचन ध्यान सुं
 घत फूलन रूप देषत द्रगन हे ॥ त्वक सपरसरसरसना
 प्रसत कर, ग्रहत असन अरु चलत पगन हे ॥ करत
 गवन पुनि बैसत भवन सेज, सोवत रवन पुनि पोदत
 नगन हे ॥ जो जा कछु विवहा रजानत सकल भ्रम, मं

दरकहतज्ञानीज्ञानमेंमगनहे॥ १॥ कर्मनविकर्मक
 रेभावनअभावधरे, सभहुअसभपरेयातेनिधरक
 हे॥ वसतीनसून्यजाकेपापहूनपुन्यताके, अधिक
 नधून्यवाकेस्वर्गननरकहे॥ सुषदुषसमदोऊनीचहू
 नउचकोऊ॥ असीविधिरहेसोउमित्योनफरकहे॥
 एकहीनदोषजानेबंधमोक्षभ्रममाने, सुंदरकहत-
 ज्ञानीज्ञानमेगरकहे॥ २॥ अज्ञानीकोदुषकौसमूहजग
 जानियत, ज्ञानीकोजगतसबआनदस्वरूपहे॥ नैन
 हीनकोतोषरबाहेरनसूजेकछू, जहांजहांजायतहां
 तहांअधकूपहे॥ जाकेचसुहेमकासअधकारभयो
 नास, वाकेजहारहेतहांसुखकीधूपहे॥ सुंदरअज्ञा-
 नीज्ञानीअंतरबहुतआही॥ वाकसदारातियाके
 दिवसअनूपहे॥ ३॥ ज्ञानीअरुअज्ञानीकीक्रिया स-
 बएकसीही, अज्ञाआसाऔरज्ञानीआसननिरास
 हे॥ अज्ञजोईजोईकरेअहंकारबुधिरहे॥ ज्ञानीअ-
 हंकारविनुकरतउदासहे॥ अज्ञसुषदुषदोउआपवि
 षमानिलेत, ज्ञानीसुषदुषकौनजानेमेरेपासहे॥ अज्ञ
 कौजगतयहसकलसतोषकरे, ज्ञानीकौसुंदरसब
 ब्रह्मकौविलासहे॥ ४॥ जानीलोकसंग्रहकौकरत

यौहारविधि ॥ अंतहकरनमेतोंस्वमकीसीदोर
 हैं ॥ देतउपदेसनानाभातिकेबचनकहि ॥ सबकोउ
 जानतसकलसिरमोरहें ॥ हलनचलनपुनिदेहसोंकर
 तनित ॥ ज्ञानमेंगरकगितिलीयेनिजठोरहें ॥ सुंदरकहत
 जैसेदंतगजराजमुषपाइवेकेओररुदिषाइवेकेओर
 हें ॥ ५ ॥ इंद्रनिकोज्ञानजाकेसोतोहेपसुसमानदेहअ
 भिमानषानपानहीसोंलीनहें ॥ अंतहकरनज्ञानकछू
 कविचारजाके मनुष्यव्यौहारसुभकर्मनिआधीनहें ॥
 आतमाविचारज्ञानजाकेनिसवासरहें ॥ सोहीसाधूसक
 लहीबातमेंप्रवीनहें ॥ एकपरमातमाकोज्ञानअनुभव
 जाकोसुंदर ॥ कहतवहजानीभ्रमछीनहें ॥ ६ ॥ जा
 हीठोररविकोउद्योतभयोताहीठोर ॥ अंधकारभागी
 गयोग्रहवनवासते ॥ नतोकछूबनतेउलटिआवेघ
 रमाहीं ॥ नतोवनचलिजाइकनकआवासते ॥ जैसेपं
 षीपंपट्टीजाइठोरपरयोआई ॥ ताहीठोरगिररत्योउड-
 वेकीआसतें ॥ सुंदरकहतमिटिजाइसबदोडदुष-
 धोषोनरहतकोउज्ञानकेप्रकासतें ॥ ७ ॥ जैसेकोउ
 देषजाईभाषाकहेओरसीही ॥ संसुजेनकोउवासोंक
 हेक्याकहतुहे ॥ कोउदिनरहेकरबोलिसीषेउनहीकी

फेरीसमझावेतवसबकोलहतुहें॥ तैसेज्ञानकहेतेसु
 नतविपरीतलागे, आपआपनोईमतसबकोलहतुहें
 ॥ उनहीकेमतकरिसुंदरकहतज्ञान, तबहीतेज्ञानठ
 हराईकरहतुहें॥ ८॥ एकज्ञानीकर्मनिमेंततपरदेधि
 यत, भक्तिकोप्रभावनाहीज्ञानमेंगरकहें॥ एकज्ञा-
 नीभक्तिकोअत्यंतप्रभावलीये, ज्ञानमाहीनिश्चैक-
 रिकर्मसोंतरकहें॥ एकज्ञानीज्ञानहीमेंज्ञानकोउचार
 करे, भक्तिअरुकर्मइनदुहुतेंफरकहे॥ कर्मभक्तिज्ञा
 नतिनोबोहमेंवषानिकहे, सुंदरबतापोयुरुताहीमेंल
 रकहें॥ ९॥ जेसेपंषीपगानिसोंचलतअचनिआइतेसे
 ज्ञानीदेहकरिकर्मनिकरतुहे॥ जेसेपंषीचुंचकरिचुग-
 तआहारपुनितेसेज्ञानीउरमेंउपासनाधरतुहें॥ जेसे
 पंषीपंसनसोंउडतगगनमाही, तेसेज्ञानीज्ञानकरिब्र-
 ह्ममेंचरतुहें॥ सुंदरकहतज्ञानीतीनोंभांतदेपीयत, ऐ
 सीविधिजानेसबसशयहरतुहे॥ १०॥ ॥ छंदइंदव॥
 एकक्रियाकारिकर्षिनिधावत, आदिरुअंतममत्वबं-
 ध्योहे॥ एकक्रियाकारिपाककरेजवभोजनलोंकछु
 अन्नरंध्योहे॥ एकक्रियामलत्यागतहेलघु, नीतक
 रेकहुंनाहिबंध्योहे॥ त्योंयहकर्मउपासनज्ञानहे, सुं

दरतीनप्रकारसंध्योहे ॥ ११ ॥ दोउजनोमिलिचोपर
 खेलत, सारिधरेपुनिदारतपासा ॥ जीततेहेसकस-
 षीमनमेअति, हारतहेसोईभरेउसासा ॥ एकजनो
 दोउवोरहीलेषत, हारनजीतकरेजुतमासा ॥ तैसेअ
 जानीकेहेतभयोभ्रम, सुंदरजानीकेएकप्रकासा ॥ १२
 ॥ सवैयामात्रा ३१ ॥ ॥ जीवनेसअविद्यानिद्रा सु-
 पसिज्यासोयोकरिहेत ॥ कर्मखवासपूढभरिलाई,
 तासोंबहुविधिभयोअचेत ॥ भक्तिप्रधानजगायोकरग-
 हि, आलसभस्योजेभाईलेत ॥ सुंदरअबनिद्रावसना-
 ही, ज्ञानजागरनसदासचेत ॥ १३ ॥ ॥ सवैयामा-
 त्रा ३२ ॥ ॥ ज्ञानीकर्मकरेनानाविधअहंकारयात-
 नाकोसोवे ॥ कर्मनिकोफलकछुनजाने, अतहकरनवा-
 सनाधोवे ॥ जोकोउपेतीकोज्यौतत, लेकरिबीजभूमिके
 वोवे ॥ सुंदरकहेसुनोदृष्टांतहि, नागेनहाइसुकहानि
 चोवे ॥ १४ ॥ ॥ इतिज्ञानीकोअंगसमाप्तः ॥ ३० ॥
 अथनिरसंसेकोअंगप्रारंभः ॥ ॥ छंदमनहर ॥ ॥
 भावेदेहछूटीजाहुकाशीमाहींगंगातट, भावेदेहछूटी
 जाओक्षेत्रमधहरमें ॥ भावेदेहछूटीजाओविप्रकेसदन
 मध्य, भावेदेहछूटीजाओस्वपचकेघरमें ॥ भावेदे-

हछूरोदेत आरुज अनारुजमें भावेदेहछूरीजाओव
 नमेनगरमें ॥ सुंदरजानीकेकछूसंशय रहेजु नाहीत्व
 रगनरकसब भागीगयो भरमें ॥ १॥ भावेदेहछूरीजाओ
 आजही पलकमांहीं भावेदेहरहोचिरकालजुगअंत
 जु ॥ भावेदेहछूरीजाओग्रीष्मपावसक्ततु सरद
 सासिरसीत छटतवसंतजु ॥ भावेदक्षिनायनहु भावे
 उत्तरायनहु भावेदेहसर्पसिंघवीजलीहनतजु ॥ सुंदर
 कहत एक आतमा अपंडजानि याही भातिनिरससे
 भयेसबसंतजु ॥ २॥ ॥ छंदइंदव ॥ ॥ कैयहदेहगि
 रोचनपर्वत, कैयहदेहनदीमेवहोजु ॥ कैयहदेहधरो
 धरतीमहि, कैयहदेहकसानदहोजु ॥ कैयहदेहनिरा
 दरनिंदहु, कैयहदेहसराहकहोजु ॥ सुंदरसंशयदूर
 भयोसब, कैयहदेहचलोकिरहोजु ॥ ३॥ कैयहदेहस
 दासुषसपति, कैयहदेहविपतपरोजु ॥ कैयहदेहनिरो
 गरहोनि, कैयहदेहहिरोगचरोजु ॥ कैयहदेहहुता-
 सनपैठत, कैयहदेहहिमारेगरोजु ॥ सुंदरसंशयदूरभ
 योसब, कैयहदेहजिवोकमरोजु ॥ ४॥ ॥ इतिनिरसं
 सेकोअंगसमाप्तः ॥ ३१॥ ॥ अथप्रेमजानीको-
 अंगप्रारंभः ॥ ॥ छंदइंदव ॥ ॥ प्रीतिकीरीतक

कछूनहिराषतजातनपातनहींकुलगारो॥प्रेमकुने
 मकहोनहिदीसतलाजनकाजलग्योमबषारो॥लीन-
 भयोहरिसौअभिअंतर,आठहुजामरहेमतवारो॥सुं-
 दरकोउकजानिसकेयह,गोकुलगांमकोपेंडोइन्यारो॥
 १॥ज्ञानदियोगुरुदेवचपाकरिदूरिकियोभमषोलि-
 किवारो॥औरकियाकहिकोनकरेअब,चित्तलग्योप-
 रिब्रह्मपियारो॥पांवविनाचलवोकिहिठोरहु,पंगुभयो
 मनमिचहमारो॥सुंदरकोउकजानिसकेयह,गोकुलगां
 मकोपेंडोइन्यारो॥२॥एकअरवंडितज्यौनभव्याप-
 क,बाहिरभीतरहेइकसारो॥दृष्टिनमुष्टिनरूपनरेष
 न,स्वेतनपीतनरक्तनकारो॥चकितहोइरहेअनुभौ
 विन,ज्यौलगिनाहिनज्ञानउजारो॥सुंदरकोउक
 जानिसकेयह,गोकुलगांमकोपेंडोइन्यारो॥३॥
 ठंडविनाविचरेवसुधापर,जायटआतमज्ञानअपा-
 रो॥कामनक्रोधनलोभनमोहन,रागनदोषनह्यार
 नथारो॥जोगनभोगनत्यागनमंग्रह,देहदिसान
 द्ययौनउधारो॥सुंदरकोउकजानिसकेयह,गोकु-
 लगांमकोपेंडोइन्यारो॥४॥लक्षअलक्षअदक्ष
 नदक्षन,पक्षअपक्षनतूलनभारो॥जूठनसाच-

अवाचनवाचन, कंचनकांचनदीनउदारो॥ जानअ-
 जाननमानअमानन, सानगुमाननजीतनहारो॥ सुं
 दरकोउकजानिसकेयह, गोकुलगामकोपेडोइयारो॥
 ५॥ ॥ इति प्रेमज्ञानकोअंगसमाप्तः॥ ३२॥ अथ
 अद्वैतज्ञानकोअंगप्रारंभः॥ ॥ छंदइदव॥ ॥ प्रश्नोत्त
 र॥ ॥ होतुमकौनहोब्रह्मअरगंडित, देहमेंक्योनहिदेहक
 नेरे॥ बोलतुकेसेकहौनहिंबोलत, जानियकेसेअज्ञान
 हेतेरे॥ दूरकरोभ्रमनिश्चयधारिक, होगुरुदेवकहोनितटे
 रे॥ होतुमऐसेतुहंपुनिऐसेइदोयनहींनहिद्वैतहिमेरे॥
 १॥ हकछुओरकतूकछुओरकि, हेकछुओरकिसेक-
 छुओरै॥ होअरुतूंयहहेकछुसोपुनि, बुद्धिविलासम
 योऊकजोरै॥ होनहितूनहिहेकछुसोनहि, बूजविनाजि
 तहीतितदोरै॥ होपुनितूंपुनिहेकछुसोपुनि, सुंदर
 व्यापरह्योसबठोरै॥ २॥ उत्तममध्यमओरसुभासभ,
 भेदअभेदजहांलगजोहै॥ दीसतभिन्नतवोअरुदर्पन
 वस्तुविचारतएकहिलोहै॥ जोसुनियेअरुद्रष्टिप-
 रेपुनि, वाचिनओरकहूंअबकोहै॥ सुंदरसुंदरव्या
 पिरह्योसब, सुंदरमैंपुनिसुंदरसाहें॥ ३॥ ज्यौवन
 एकअनेकभयेहुम, नामअनंतनिजातिहुन्यारी॥ वा-

पीतडागरूपनदीसब, हेजल एकसदेषुनिहारी ॥
 पावक एकप्रकासबहुविधि, दीपविराज मसालहुवारी
 ॥ सुंदरब्रह्मविलासअषंडित, भेदअभेदकिबुद्धिसूरा
 री ॥ ४ ॥ एकशरीरमेअंगभयेबहु, एकधरापरिधामअ
 नेका ॥ एकशिलागहिकोरकियेसब, चित्रबनायधरे
 इकटेका ॥ एकसमुद्रतरंगअनेकहु, कैसेकेकीजिये
 भिन्नविवेका ॥ दैतकछूनहि देषियेसुंदर, ब्रह्मअषं
 डित एककोएका ॥ ५ ॥ ज्यौंमृत्तिकाघटनीरतरगहि,
 तेजमसालकियेजुबहुता ॥ वायुबधूरनिगांठिपरीब
 हु, चादलव्यौमसख्यौमजुभूता ॥ चक्षुसुंवीजहेबी,
 जसुं चक्षहे, पूतसोंबापहेबापसूपूता ॥ वस्तुविचारत
 एकहिसुंदर, तानेरुवानेतो देषियेसूता ॥ ६ ॥ भौ
 मिहुचैतनआपहुचैतन, तेजहुचैतनहेजुप्रचंडा वा
 युहिचैतनव्योमहुचैतन, शब्दहुचैतनपिडब्रह्मडा ॥
 हैमनचैतनबुद्धिहुचैतन, चित्तहुचैतनआहिउडंडा
 ॥ जोकलुनामधरेसोइचैतन, चेतनसुंदरब्रह्मअषं
 डा ॥ ७ ॥ एकअषंडितब्रह्मविराजत, नामजुदोकारे
 विष्णुकहावे ॥ एकइग्रंथपुरानबषानत, एकहिदत्तव
 सिष्ठकहावे ॥ एकहिअर्जुनउद्धवसोकहि, कृष्णक

पाकरिकेसमुजावे ॥ सुंदर है त कछूमनि जानहु ॥ ए
 कहिव्यापकवेदबतावे ॥ ८ ॥ छंदमनहर ॥ शिष्य
 पूछे गुरुदेव गुरु कहै पूछ शिष्य ॥ मेरे एक संशय हे क्यून
 पूछे अबही ॥ तुम कह्यो एक ब्रह्म अजहु में कह्यो एक
 एकता अनेकता को यह भ्रम सबही ॥ भ्रम यह को
 न कोहे भ्रमहि को भ्रम भयो ॥ भ्रमहि को भ्रम कैसे तुन
 जाने कबही ॥ कैसे करि जानो प्रभु गुरु कहै निश्चै धरिनि
 श्रै ऐसे जान्यो अब एक ब्रह्म तबही ॥ ९ ॥ बोधोक्ति
 ॥ ॥ ब्रह्म हे ठोर को ठोर दूसरे न को ऊँ ओर वस्तु को
 विचार किये वस्तु पहिंचानिये ॥ पंचतत्त्व तीन गुन रिख
 रवि विध भांति ॥ नाम रूप जहां लगि मिथ्या माया मानि
 ये ॥ शेष नाग आदि देके वैकुण्ठ गोलोक पुनि ॥ वचन
 विलास सब भेद भ्रम भानिये ॥ न तो कछु उर मे न सर
 जो कहो सो कोन ॥ सुंदर सकल एह उहां वाही जानिये
 ॥ १० ॥ उहां वाही ना म बाल कने नीद व्या ए को हाल
 योगीत ॥ प्रथम हि देह मे ते बाहेर को चुकी परयो
 इन्द्रिय व्यापार सप मत्य करि जान्यो है ॥ कोन उ संजो
 गपाइ सद्गुरु भेट भई ॥ उन उ पदे सदे के भीतर कुं आन्यो
 है ॥ भीतर के आवत ही बुद्धि को प्रकास भयो ॥ कोन देह

कौनमैजगतकिनमान्योहै॥ सुंदरविचारतथोउपज्यो
 अहैतज्ञान, आपकोअषंडब्रह्मएकपहिचान्योहै॥ ११॥
 हसालछदा॥ सकलसंसारविस्तारकरिवरणियो, स्व-
 र्गपातालमृतब्रह्महीहै॥ एकतेगिनतगिनजाइयेसोल
 गोंफेरिकरि एककोएकहीहै॥ एनहींएनहीरहेअवसेष-
 सो, अंतहीवेदनैयूंकहीहै॥ कहतसुंदरकहीजानुजबअ-
 पनपो। आपमेंआपनेआपहीहै॥ १२॥ एकतूंदोनतूती
 नतूंचारतू, पंचतूतत्वतेजगनकीयो, नामअरुरूपहोइबूज
 तविधिविस्तार्यो, तुमविनाओरकोउनाहिबीयो। रावतूरक
 तूंदोनतूंदानितूंदोइकरिमेलतेंलीयदीयो॥ सकलहीए-
 हतुममाहिउपजेषये, कहतसुंदरबडोविपुलहीयो॥ १३॥
 ॥ छंदमनहर ॥ तोहिमैजगतयहहृदिहेजगत
 मांही, तोमेअरुजगतमेभिन्नताकहांरही॥ भोमीहीतेभा-
 जनअनेकविधिनामरूप, भाजनविचारदेषेउहेएकहेम
 ही॥ जलतेंतरंगफेनबुदबुदाअनेकभाति, सोउतीविचा-
 रेएकवहेजलहेसही॥ जेतेमहापुरुषहेसबकोसिद्धांत
 एक, सुंदरअरिविलब्रह्मअंतवेदएकही॥ १४॥ जेसे
 इपरसकीमिठाईभांतिभांतिभई, फेरकरिमोरेइदफ-
 रसहीलहतुहे॥ जेसेघृतथीजकेजरसोबंधजातपु

नि, फेरपधरेनें व हृद्यत ही रहतु हे ॥ जेसे पानी जमीन
 के पवान हू सो देषीयत, सो पवान फेरपानी होय के बहुत
 हे ॥ तेसे ही सुंदरय हजगत हे ब्रह्म मय, ब्रह्म सो जगत
 मय वेद सु कहतु हे ॥ १५ ॥ जेसे काठ को रितामें पुतरी व
 नायराषी, जो विचारि देषिये तो उहे एक दार हे ॥ जेसे मा
 ला सूत हू की मनि कहू सूत ही के, भीतर हू पोयो पुनि सू
 त ही को तार हे ॥ जेसे एक समुद्र के जल ही को लीन भये
 सो उतो विचार पुनि उहे जल पार हे ॥ तेसे ही सुंदरय हजग
 त सो ब्रह्म मय, ब्रह्म सो जगत मय या ही निरधार हे ॥ १६ ॥
 जेसे थक लोह के हथियार नाना विध कीये, आदि मध्य-
 अंत एक लोह ई प्रमानीये ॥ जेसे एक कंचन में भूषन अ
 नेक भये, आदि मध्य अंत एक कंचन ई जानिये ॥ जेसे
 एक मोम के संचारे नर हाथीय ह, आदि मध्य अंत एक
 मोम के वषानीये ॥ तेसे ही सुंदरय हजगत मो ब्रह्म य ह
 ब्रह्म सो जगत मय निश्चै करि मानीये ॥ १७ ॥ ब्रह्म में ज
 गत यह ऐसी विधि देषीयत, जेसी विधि देषीयत फूलरी
 महल में ॥ जेसी विधि गिलि महुली चेमें अनेक भाति
 जेसी विधि देषीयत चूनरी उचौर में ॥ जेसी विधि कांगु
 रेउ कोट परी देषीयत, जेसी विधि देषीयत बुदबुदानीर

में ॥ सुंदर कहत लीकहा अपरिदेषीयत, जेसी वि-
 धि देषीयत सीतला सरीर में ॥ १८ ॥ ब्रह्म अरु माया-
 जेसे शिव अरु साक्ति पुनि, पुरुष प्रकृति दोउ कह्ये सुना
 येहे ॥ पति अरु पत्नी ईश्वर अरु ईश्वरी हुनारायन लक्ष-
 मी द्वैवचन कहायेहे ॥ जेसे कोई अर्ध नारी नाटेश्वर रू-
 प धरे, एक बीज हतें दोउ दालि नाम पायेहें ॥ तेसे ही सुं-
 दर वस्तु ज्यों है त्यों ही एकर स, उभय प्रकार होई आप ही
 दिषायेहें ॥ १९ ॥ ॥ छंद इंदव ॥ ॥ ब्रह्म निरीह नि-
 रामय निर्गुन, नित्य निरंजन और नभासे ॥ ब्रह्म अषडि
 तहे अध ऊरध, बाहिर भीतर ब्रह्म प्रकासें ॥ ब्रह्म हि सुक्ष-
 प स्फुल्ल जहां लग, ब्रह्म हि साहिब ब्रह्म हि दासें ॥ सुंदर ओ-
 र फलूमत जानहु, ब्रह्म हि देषत ब्रह्म तमासे ॥ २० ॥ ब्र-
 ह्म हि मां हि विराजत ब्रह्म हि, ब्रह्म विना जिन और हि जा-
 नो ॥ ब्रह्म हि कुंजर की टुहु ब्रह्म हि, ब्रह्म हिरंकुहु ब्रह्म हि
 रानो ॥ काल हि ब्रह्म स्वभाव हु ब्रह्म हि, कर्म हु जीवरु ब्रह्म
 वषानो ॥ सुंदर ब्रह्म विना कछु नाहिन, ब्रह्म हि जानि सबे-
 भ्रम भानो ॥ २१ ॥ आदि हु तो कहि अंत हि हे पुनि मध्य
 कहा कछु और कहावे ॥ कारन कारज नाम धरे पुनिकार-
 ज कारन मां हि समावे ॥ कारज देषि भयो चिच बिधम, का

रनदेविधिभ्रमविलावे॥ सुंदरयौनिश्चैत्राभिच्यंतराद्वैत
 गएफिरिहैतनआवे॥ २२॥ छंदमनहर ॥ द्वैतकरिदे-
 षेजबहैतहीदिषाइदेत, एककरिदेपेतबडहैएकअंगहे॥ सू-
 रजकोदेषेजबसूजपकासरत्योकीरणकोदेषेतोकीरण
 नानारंगहे॥ अमजबभयोतवमायाऐसोनामधस्यो, अ-
 मकेगएतेएकब्रह्मसरवंगहे॥ सुंदरकहतयाकीदूष्टि-
 हंकोफेरभयो, ब्रह्मअरुमायाकेतोमायेनहिंस्थगहे॥
 २३॥ श्रोत्रकछुओरनाहीनैत्रकछुओरनाही, नासाक-
 छुओरनाहीरसनानओरहे॥ त्वक्कछुओरनाहीचाक-
 कछुओरनाही, हाथकछुओरनाहीपांवनकीदोरहैं॥
 मनकछुओरनाहीबुद्धिकछुओरनाही, चित्तकछुओ-
 रनाहीअहंकारतोरहैं॥ सुंदरकहतएकब्रह्मविना-
 ओरनाही, आपहीमेआपव्यापरत्योसबतोरहैं॥ २४॥
 इतिअद्वैतज्ञानकोअंगसमाप्त॥ ३३॥ ॥ अथजगत-
 मिथ्याकोअंगप्रारंभः॥ छंदमनहर ॥ कियोनविचा-
 रकछुभनकपरीहेकान, धाडुआईसुनिकरिडारिषिषण-
 योहे॥ जैसेकोऊअनछतोऐसेहीबुलाइयत, वार-
 योतगईपरकोउन्हीआयोहैं॥ वेदहुवरनिकेजगतत
 चादोकियो, अंतपुनिवेदजरमूलतउठायोहैं॥ तेसे-

ही सुंदरयाकों कोई एक पावे भेद ॥ जगत को नाम सुनि
 जगत भुलायो है ॥ १ ॥ ऐसी ही अज्ञान को ईश्वर के प्रगट
 भयो, दिव्य दृष्टि दूर गई देषे चामदृष्टि कों ॥ जैसे एक आ
 रसी सदाई हाथ मां ही रहे, समुषन देषे फेर फेर देषे पृष्टि
 कों ॥ जैसे एक व्योम पुनि वादर सों छायर त्यों, व्योम
 नहीं देषत देषत बहु दृष्टि कों ॥ तेसे एक ब्रह्म ही विरा-
 जमान सुंदर है, ब्रह्म को न देषे कोऊ देषे सब दृष्टि कों ॥
 २ ॥ अनच्छ तो जगत अज्ञान तें प्रगट भयो, जैसे कोई बा-
 ल फेता लदे पिडख्यो है ॥ जैसे कोई स्वप्ने में दाब्यो है ओ
 थोर आय मुष तें न आवे बोल एसो दुष पख्यो है ॥ जैसे अं
 धियारी रेन जेवरी न जाने ताही, आप ही तें सापमानि भ
 य अतिकख्यो है ॥ तेसे ही सुंदर एक ज्ञान के प्रकास बिनु,
 आप दुष पाय आय आप पचि भख्यो है ॥ ३ ॥ मृतका स-
 माईर ही भाजन के रूप मां ही, मृत्युका को नाम पीठि भाज
 नई गख्यो है ॥ कनक समाई ल्यो ही होइर त्यों अभूषन न क
 नक कहन कोऊ अभूषन कख्यो है ॥ बीज हसमाई करि ब्र
 च्छ होइर त्यों पुनि, ब्रच्छ ही कों देवीयत बीजन हिलख्यो
 है ॥ सुंदर कहत यह्यो ही करि जान्यो सब, ब्रह्म ईज
 जगत होई ब्रह्म दुरिर त्यों है ॥ ४ ॥ कहत हे देह मां ही

जीवआहिमिलिरत्यो कहां देव कहां जीव रथाचूक प्रत्यो
 हे ॥ बूडवे के डर तेतर नि कौं उपाय करे, ऐसे न ही जाने यह मृ
 गजल भरयो हे ॥ जेवरी को सांप जे से सीप विषे रूपो जानि
 ओर कों ओर ही देखीयो ही भ्रम करयो हे ॥ सुंदर कहत यह
 एक ही अपंड ब्रह्म, ताही कौं पलर के जगत नाम धर्यो हे
 ॥ ५ ॥ ॥ इति जगता मिथ्या को अंग समाप्त ॥ ३४ ॥
 अथ आश्चर्य को अंग प्रारंभः ॥ छंद मन हर ॥
 वेद को विचार सोई सुन के संतन मुष, आप हू विचार करि
 सौ ही धारियतु हैं ॥ जोग की जुगति जानि जगत उदास हो
 ई, सुन्य में समाधि लाई मन मारीयतु हैं ॥ ऐसे ऐसे करत क
 रत के ते दिन बीते, सुंदर कहत अजहु विचारियतु हैं ॥ का
 रोह न पीरो न तोता तोह न सीरो कहु हाथन परत ताते
 हाथ जारीयतु हैं ॥ १ ॥ मन को अंग म अति वचन थकि
 त होत, बुद्धि हू विचार करि बहु पंडीयतु हे ॥ भवन सुन-
 त नाही नैन हून देखे ताही रसना को रस सब रस छांडिय
 तुहे ॥ त्वक् को स्पर्श नाही प्राण को न विषे होई, पगनि हू क
 रि जीतति त हो डियतु हे ॥ सुंदर कहत अति सूक्ष्म स्व
 रूप कहु, हाथन परत ताने हाथ मी डीयतु हे ॥ २ ॥ गुंफा
 को सवार करि आसन हू मारि करि प्राण ही कौं धार धार ना-

कसीरीयतुहें इंद्रिनकोघेरकरिमनहूँकोफेरपुनि, अ-
 कुटीमेंहेरहेरहीयोचीटीयतुहे ॥ सबछटिकायपुनिस्त-
 न्यमेंसमायतहां, समाधिलगाइकरिआंघमीटियतुहें
 ॥ सुंदरकहतहमआरऊकीयेउपाय, हाथनपरत
 तातेहाथमीडीयतुहें ॥ ३॥ बोलेहीनमौनधरेबैठेहेनगो-
 नकरेजागैहीनसोवेसोतोदूरहेननैरीहें ॥ आवेहीनजा-
 ईनतोथिरअकुलातपुनि, भूषोहीनधातकछूतातो
 हीनसीरोहें ॥ लेतहेनदेतकछूहेतनकूहेतुपुनि, स्या-
 महीनस्वेतपुनिरातोहैं नपीरोहें ॥ दूधरोनमोरोकछु-
 लांबोहीनछोटोताते, सुंदरकहतकछुकानहीनहीरोहें
 ॥ ४॥ भूमिहीनआपनतोतेजहीनतापनतो, वायूहीन-
 ओमनतोपंचकोपसारोहें ॥ हाथहीनपांवमतोनेनवे-
 नभावनतो, रंकहीनरावनतो वृद्धहीनवारोहें ॥ पिंडही-
 नमाननतोजाननअजाननतो, बंधनिरवाननितोहरवो-
 नभारोहे ॥ हैतनअहैतनतोभीतनअभीतनतो, सुं-
 दरकख्यानजाईमित्योहैं नन्यारोहें ॥ ५॥ छदइदव-
 पापनपुन्यनस्यूलनसून्यन, बोलनमौननसोवेनजागे ॥
 एकनदोइनपुरुषनजोइकरेकहंकोइनपीछनआगे ॥ वृ-
 ष्णबालनकर्मनकालन, ह्रस्वविसालनगुरूनभागे ॥

बंधनमोक्षप्रोक्षनमोक्षन, सुंदरहेनअसुंदरत
 गे ॥६॥ तत्त्वअतत्त्वकल्पीनहिजातजु, सून्यअसू
 न्यउरेनपरेहे ॥ जोतिअजोतिनजानिसकेकोउ, आदि
 नअंतनजिवेनमरेहे ॥ रूपअरूपकछूनहिदीसत, भे
 दअभेदकरनेहरेहे ॥ सृष्टअसृष्टकहेपुनि कौनजु,
 सुंदरबोलेनमौनधरेहे ॥ ७॥ षोजतषोजतषोजिगये
 पुनि, षोजतहेअरुषोजिहेआने ॥ गावतगावतगाय
 रहेसब, गावतहेपुनिगायहिगाने ॥ देषतदेषतदेष
 थकेसब, दीसनहीसबठोरठिकाने ॥ ब्रूतब्रूतब्रू
 केसुंदर, हेरतहेरतहेरहिराने ॥ ८॥ पिंडमेंहेपुनिपिंडमि
 लेनहि, पिंडपरेपुनित्यौंहिरहावे ॥ ओत्रमेंहेपुनिअ
 असुनेनहि, द्रष्टिमेंहेपरिद्रष्टिनआवे ॥ बुद्धिमेंहेपरि
 बुद्धिनजानत, चित्तमेंहेपरिचित्तनपावे ॥ शब्दमेंहेप
 रिशब्दशक्यो कहिशब्दहिसुंदरदूरबतावे ॥ ९॥ भूमि
 हुतैसेहीआपहुतैसेहीतेजहुतैसेहितैसेहिपोना ॥ व्य
 महुतैसेहिआहिअषडित, तेसेहिब्रह्मरत्नोभरिभो
 ना ॥ देहसजोगविजोगभयोतब, आयोसोकोनगये
 तोहीकोना ॥ जोकहीयेकहतेनबनेकछु, सुंदरजा
 निगहीमुषमोना ॥ १०॥ एकहिब्रह्मरत्नोपरिपूरित

दूसरोकोनवनावनहारो ॥ जोकोउजीवकरेपरमानता
 जीवकहाकछुब्रह्मतेन्यारो ॥ जोकहेजीवभयोनगदी
 सते, तोरविमाहिकहांकोअंधारो ॥ सुंदरमोनगहीयह
 जानके, कोनहुभांतिनहैनिरधारो ॥ ११ ॥ जोहमषोज
 करेअभिअंतर तोउहषोजउरहिविलावे, जोहमबा
 हिरकौंउठिदोरत, तोकछुवाहिरहायनआवे ॥ जोह
 मकाहुकैपूछतहेपुनि, सोइअगाधअगाधबतावे ॥
 ताहीतैकोऊनजानिसकेतिहि, सुंदरकौनहिठोरबता
 वे ॥ १२ ॥ नेननवेननचेननआसन, वासनखासनप्या
 सनपाते ॥ सीतनधामनधोरनरामन, पुषनवामन-
 मातनताते ॥ रूपनरेषनशेषअशेषन, श्वेतनपीत-
 नस्यामनराते ॥ सुंदरमोनंगहीसिधसाधक, कौन
 कहैउसकीमुषवाते ॥ १३ ॥ वेदथकेकहितंत्रथकेक
 हि, ग्रंथथकेनिसवासरगाते ॥ शेषथकेशिवइंद्रथके
 पुनि, षोजकियोबहुभांतिविधाते ॥ पीरथकेपुनिमीर
 थकेपुनि, धीरथकेबहुबोलगिराते ॥ सुंदरमोनगही
 सिधसाधककौनकहेउसकीमुषवाते ॥ १४ ॥ जोगि
 थकेकहिजैनथकेअरिषि,
 ॥ सन्यासीथकेवनवासिथकेजु;

(१६०)

सुंदरविलास.

अ ३५

रफिराते ॥ शेषमसाइकत्रोरउलाइकथाकिरहेम
मेंमुसकाते ॥ सुंदरमौनगहीसिधसाधककोनक
हेउसकीमुषचाते ॥ १५ ॥ ॥ इतिआश्चर्य
कोअंगसमाप्तः ॥ ३५ ॥ ॥ इतिसुंदर
सजीकृतसुंदरविलासग्रंथसमाप्तः ॥ ॥ श्री
सीतारामचंद्रोजयति ॥ श्रीरक्तशुभम् ॥

इतिसुंदरविलास

समाप्त.

